श्रद्धांजलि

**( 1 )**

**विवाह** का प्रसन्नता एवं उमंग भरा अवसर । नीरजा की दीदी के बगल में खड़ी रुद्रा ने जब दूल्हे के साथ खड़े वरदान को देखा तो जैसे उसका दिल अवश हो गया। नीरजा की बहन की शादी में परिहास, शरारत और मस्ती के लिये देखे गये अनेक स्वप्न, तमाम योजनायें धराशाई हो गईं, वह तो मुग्धा बन बार बार वरदान की मुस्कराती ऑखों से छिपती फिर रही थी।

“कोई हर पल उसे निहार रहा है”, इस बात ने उसकी स्वाभाविकता छीन ली थी ।

जूते चुराने की योजनायें बन रहीं थीं। सभी सहेलियॉ और बहनें जीजाजी के जूते ” कैसे मिलें ” यह सोंचने में व्यस्त थीं, इसी सम्बन्ध में आपस में बात कर रही थीं लेकिन वह तो जैसे कुछ न सुन रही थी और न ही समझ रही थी। वह क्या करे, उसका तो अपना मन ही चोरी हो गया था।

“क्या बात है रुद्रा, हम लोग जूते चुराने की योजना बना रहे हैं और तुम कुछ बोल नहीं रही हो.?”

“लगता है हमारी रुद्रा का दिल बारात में किसी ने चुरा लिया है।” नीरजा ने चुटकी ली।

“तुम लोग भी....... ।“रुद्रा शर्मा गई –” कुछ भी बोलती रहती हो। मेरा दिल इतना आवारा नहीं है जो बिना मेरी मर्जी के इधर उधर भागता  फिरेगा, वह  मेरे पास है, निश्चिंत रहो।“

“फिर जीजाजी के जूते ढ़ूढ़ने में हमारी मदद करो। अंदर बाहर सब जगह देख लिया, मिल ही नहीं रहे हैं।“ लड़कियों का मायूस स्वर।

“अच्छा, तुम लोग एक बार फिर से अंदर अच्छी तरह देखो, मैं बाहर देखती हूँ ।“

“हॉ यार, जूते तो हर हाल में ढ़ूंढने ही पड़ेंगे, वरना हम हार जायेगे। बात नेग की नहीं है, हम सबकी प्रतिष्ठा की है।”नीरजा का उलझन भरा स्वर।

“ऐसे कैसे हार जायेंगे हम? जूते तो हम ढ़ूँढ़ कर रहेंगे। तुम बाहर देखो रुद्रा, हम भीतर देखते हैं।” एक दूसरी लड़की ने कहा।

जैसे ही रुद्रा बाहर आई सामने ही वरदान दिख गया। उसे देखकर ही मुस्कराते हुये पास आ गया – ”भइया के जूते ढ़ूढ़ रही हैं ना?”रुद्रा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

“लगता है आपके लिये अपने ही दोस्तों और भाइयों से गद्दारी करनी पड़ेगी। आप यहीं रुकिये, मैं अभी आता हूँ।” वही मुस्कराती चमकदार ऑखें।

थोड़ी देर बाद एक अखबार में लिपटे दूल्हे के जूते लिये वरदान सामने था –” ये लीजिये और जल्दी से अंदर जाइये और थोड़ा सावधानी से जाइयेगा, किसी ने देख लिया तो मेरी मुसीबत हो जायेगी।” रुद्रा ने मुस्कराकर वरदान को देखा और दुपट्टे में जूते छुपाये विजयी मुस्कान लिये अंदर आ गई।

“मिले?”रुद्रा ने बाहर से आकर पूँछा।

“नहीं यार, ”हताशा भरा स्वर-” लड़के देखो कैसे व्यंग्य से मुस्करा रहे हैं?”

“मुस्कराने दो,थोड़ी देर बाद इन सबकी मुस्कराहट का पता भी नहीं चलेगा|” रुद्रा मुस्करा रही थी |

“ कैसे?” सब एक साथ बोल पडीं |

“ अभी पता चल जायेगा कि किसमें कितना दम है? ये लो।“

रुद्रा ने जूते निकालकर सबके सामने रख दिये तो सहेलियाँ खुशी से उछल पड़ीं –“अरे वाह, कहाँ से मिले तुम्हें?”

“ तुम लोग आम खाओ, पेड़ गिनने के चक्कर में न पड़ो।” एक बार फिर वरदान की सूरत नयनों में उतर आई।

मण्डप में दोस्तों के साथ बैठे वरदान की मन्द स्मित रुद्रा को बार बार गुदगुदा रही थी। मूक संभाषण, नजरों का आदान प्रदान। जूतों के नेग के समय दोस्तों के साथ वरदान भी दिखावे के लिये अड़ गया – ”तुम लोगों के पास भइया के जूते हैं ही नहीं, नेग किस बात का? अगर हैं तो दिखाओ।“

लड़कियाँ विजय के उन्माद में इठला रहीं थीं –”दिखा तो देंगे लेकिन अभी तो हम केवल नेग माँग रहे हैं फिर सभी दोस्तों को जूतों की मुँह दिखाई में एक एक हजार रुपये देने पड़ेंगे।“

“हमारी सुरक्षा व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि तुम लोगों को जूते मिल ही नहीं पायेंगे, इसलिये बहानेबाजी है यह सब।“

“आप लोग हमारी शर्त मानने को तैयार हों तो हम दूर से अभी दिखा सकते हैं, लेकिन मिलेंगे तभी जब हमारा हिसाब बराबर हो जायेगा।“

“हमें मंजूर है।” सभी ने एक स्वर में कहा।

और लड़कियों ने जब मुस्कराते हुये एक डिब्बा खोलकर जूते दिखा दिये तो सबके साथ नीरजा के जीजाजी भी चौक पड़े - ”हममें से किसी ने गद्दारी की है, कौन है वो गद्दार?” लड़के एक दूसरे का मुँह देख रहे थे। आशा के विपरीत वे सब बाजी हार चुके थे।

“कौन हो सकता है? सभी तो यहीं हैं।” नीरजा के जीजाजी ने तुरन्त नेग के पैसे निकालकर दे दिये। सभी दोस्तों ने जब पैसे दिये तो नीरजा ने मना कर दिया -”यह तो  केवल एक परिहास था। हमें आपसे पैसे नहीं चाहिये, केवल शुभ अवसर का नेग चाहिये था, वह जीजाजी ने दे दिया है।"

“यह कैसे हो सकता है? हम लोग शर्त हार चुके हैं।” लड़के मान नहीं रहे थे।

लड़कियाँ इतरा रहीं थीं – तब तो हम यह पैसे और भी नहीं ले सकते ताकि आप सबको अपनी यह हार हमेशा याद रहे कि कोई तो होगा जो हमारे नैन बाणों से घायल होकर आपसे गद्दारी कर बैठा है।“

विदाई की भीड़ में किसी ने रुद्रा की  हथेली के मध्य कुछ दबा दिया।उसने  अलग ले जाकर देखा तो छोटे से टुकड़े में जैसे पूरा संसार समा गया था – ”आपके जीवन में हमेशा के लिये प्रवेश की अनुमति चाहता हूँ। उत्तर ”हाँ” या ”ना” में अभी दीजिये। नीचे वरदान ने अपना मोबाइल नम्बर लिख दिया था।

रुद्रा के पास तो मोबाइल था ही नहीं हालांकि पापा ने वायदा किया था कि यदि इस बार उसके अच्छे नम्बर आयेंगे तो वह उसे मोबाइल दिलवा देंगे। रुद्रा ने ऑखों के काजल वाली पेंसिल से उसी कागज पर ”हॉ” लिखकर अपने स्कूल का नाम भी लिख दिया। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे इस छोटे से टुकड़े की वह वर्षों से प्रतीक्षा कर रही है।

दूसरे दिन छुट्टी के समय स्कूल के गेट पर वरदान को देखकर मुस्करा दी क्योंकि उसे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास था कि आज वरदान जरूर आयेगा, इसलिये मम्मी के मना करने के बाद भी वह आज स्कूल आ गई थी। सुबह मम्मी कितना मना कर रही थीं -”इतने दिन से शादी की भाग दौड़ में कितना थक गई है, आज स्कूल जाने की क्या जरूरत है? एक दिन आराम कर लो।“

लेकिन वह न मानी –”वैसे भी बहुत छुट्टियॉ हो गई हैं मम्मी नीरजा भी अभी कई दिन तक नहीं जा पायेगी तो मैं ही चली जाती हूँ।“

“जो तुम्हारी मर्जी हो करो।"

नित्य ही स्कूल के गेट पर वरदान को खड़े देखकर रुद्रा प्रसन्नता से खिल उठती। कभी वरदान के आग्रह से मजबूर होकर स्कूल का नागा भी कर देती। नीरजा के समझाने का भी कोई असर न पड़ता - ”उपस्थिति कम हो गई तो स्कूल वाले इम्तहान नहीं देने देंगे, उस समय वरदान का इश्क काम नहीं आयेगा।"

“मेरी उपस्थिति लगवा दिया करो।” नीरजा के लिये रोज यह कर पाना असम्भव था क्योंकि कोई टीचर से कह देगा तो उसकी भी मुसीबत हो जायेगी, फिर भी वो कभी कभी रुद्रा की उपस्थिति लगवा ही देती।

रुद्रा और वरदान के मध्य सम्बन्धों की डोर मजबूत होने लगी। रुद्रा का जब मन होता वह अपने लैंड लाइन से वरदान के मोबाइल पर बात कर लेती लेकिन वरदान ऐसा नहीं कर पाता था। वह रुद्रा  से तभी बात कर पाता जब रुद्रा स्वयं फोन करे |

 इसलिए  उसने कहा –” मैं तुम्हें एक मोबाइल उपहार में दे देता हूँ, जिससे जब मेरा मन हो बात तो कर पाऊँगा।“

“नहीं वरदान, मैं उसे कैसे छुपा पाऊँगी, कुछ दिन रुक जाओ, रिजल्ट बाद तो पापा मुझे मोबाइल ला ही देंगे।” प्यार के झूले में दोनों आने वाले खतरे से अनजान सुख से झूल रहे थे।

रुद्रा की परीक्षायें हो गईं थी, अब वह अपने रिजल्ट का इंतजार कर रही थी। उसे मालुम नहीं था कि परीक्षाओं के पहले ही अजय सिंह ने रुद्रा और वरदान को एक साथ देख लिया था। पहले तो सोंचा कि बच्चे साथ पढ़ेंगे तो हो सकता है कि मात्र दोस्ती हो इसलिये उन्होने बिना किसी से कुछ कहे दोनों के सम्बन्ध में पूरा पता लगाया। यहाँ तक कि वरदान के घर - परिवार के बारे में भी पूरी जानकारी कर ली |

रुद्रा की मम्मी महिमा सिंह को जब यह बात पता चली तो वो  गुस्से से पागल सी  हो गईं –”मैं अभी बुलाकर उससे पूँछती हूँ कि यह सब क्या है?”

“बच्चे के साथ बच्चा बनने की बेवकूफी मत करो, शान्ति से काम लो। तुम परेशान मत हो| मेरा विश्वास करो मैं सब ठीक कर दूँगा।“

“क्या करेंगे आप? यही सब करने के  लिये हम इसे स्कूल भेजते हैं क्या? कोई जरूरत नहीं आगे पढ़ाने की। यह लडकी इस लायक है ही नहीं कि उच्च शिक्षा प्राप्त करे | ”महिमा सिंह क्रोध से उबल रहीं थी –" आप के दुलार ने ही इसे बिगाड़ दिया है। लड़का देखिये और तुरन्त शादी करके फुरसत कीजिये।“

अजय सिंह ने महिमा को कन्धे से पकड़ कर पास बैठाया –” तुम बहुत जल्दी आवेश में आ जाती महिमा और आवेश में लिये गये फैसले हमेशा गलत ही सिद्ध होते हैं|  हम लोग तो उसके माता पिता हैं, उसकी जिन्दगी कैसे बरबाद कर सकते हैं? यह उम्र ही ऐसी होती है कि बच्चों को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता है लेकिन हमें समझदारी से काम  लेना होगा  उसने गलती की है लेकिन वह इतनी बड़ी नहीं है कि हम उसे सुधार न सकें। इस नादान उमर में न तो हम उसकी शादी कर सकते हैं और न ही उसकी पढ़ाई छुड़वाकर उसका भविष्य बरबाद कर सकते हैं।“

“फिर क्या करें? मुझे इस लड़की से ऐसी उम्मीद बिल्कुल नहीं थी ” महिमा का उदास स्वर।

“देखो महिमा”, अजय सिंह पत्नी को बड़े धैर्य से समझा रहे थे –”हमें बिना अपना व्यवहार बदले बुद्धिमानी से काम लेना होगा। उसे पता नहीं चलना चाहिये कि हम सब कुछ जान गये हैं। उसका रिजल्ट आ जाने दो, इसके बाद कालेज की पढ़ाई के लिये इसे मैं अपनी दीदी और जीजाजी के पास भेज दूँगा। मैंने उनसे बात कर ली है।"

“आपने सचमुच बहुत सही सोंचा है। एक बार रुद्रा यहाँ से चली जायेगी तो थोड़े दिन में भूल जायेगी उस लड़के को।“

“और क्या? केवल उम्र का आकर्षण है । नई जगह, नये दोस्त, नई राहें सामने होंगी तो सारा बचपना स्वतः ही समाप्त हो जायेगा और एक दिन तुम देख लेना कि मेरी बेटी मेरी तरह बैंक मैनेजर बनेगी। बस तुम अपना व्यवहार सामान्य रखना। गुस्से और आवेश में तुम कोई गड़बड़ न कर देना, रुद्रा को ज़रा भी पता नहीं चलना चाहिए वरना हमारी सारी योजना बेकार हो जायेगी | “

“मुझे तो बहुत गुस्सा आ रहा है। मन कर रहा है कि थप्पड़ मार मार कर चेहरा लाल कर दूँ। हमारे प्यार का यह फल दिया है इसने?”

“अपने अंदर की क्षत्राणी को शान्त करो महिमा।”अजय सिंह ने हँसते हुये कहा – मैंने कहा है ना तुमसे कि मुझ पर भरोसा रखो मैं सब ठीक कर दूँगा।"

रुद्रा को कुछ पता न था, वह तो रंगीन सपनों में मग्न थी।उसके लिये दुनिया बहुत सुन्दर और प्यारी थी| उसके तो हृदय में इस समय वरदान के प्यार का सागर लहरा रहा था। उसका रिजल्ट आया तो परिणाम आशा के अनुरूप नहीं था। वह पास तो हो गई थी लेकिन उसके नम्बर बहुत कम आये थे। हाई स्कूल में उसके 78% नम्बर आये थे लेकिन इस बार उसके सिर्फ 63% नम्बर आये थे। पापा मम्मी ने योजनानुसार कुछ नहीं कहा - ”कोई बात नहीं बेटा, बी0एस0सी0 में अच्छे नम्बर लाना। जो बीत गया भूलकर आगे बढ़ो। सोंचो कहीं न कहीं तुमने कुछ गलती की होगी, इसलिये आगे अपनी गलती सुधारने की जिम्मेदारी तुम्हारी ही है। तुम जानती हो ना कि तुम्हें बैंक का उच्च अधिकारी बननाहै|”

“जी,   पापा, मैं अगली बार अच्छे नम्बर लाऊॅगी।"

रुद्रा जानती थी कि सचमुच वरदान के प्यार में पड़कर उसने पढ़ाई पर बहुत कम ध्यान दिया था। वह बहुत कम स्कूल जाती थी और जब जाती भी थी तो उसका पढ़ने में मन ही नहीं लगता था। जब भी पढ़ने बैठती, वरदान की सूरत और बातें उसके कानों में गूँजने लगतीं। हर वक्त वह वरदान के ख्यालों में डूबी रहती।

उसने निश्चय किया कि अब वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान देगी वरना उसका भविष्य बरबाद हो जायेगा। रिजल्ट के चौथे दिन उसकी अठ्ठारहवीं वर्षगाँठ थी। अपने कम नम्बरों के कारण वह बहुत शर्मिन्दा थी, उसकी सभी सहेलियों के अच्छे नम्बर आये थे, इसलिये उसने अपना जन्मदिन मनाने से इंकार कर दिया, लेकिन मम्मी पापा नहीं माने -” एक छोटी सी असफलता से इतना दुखी नहीं होते।"

“लेकिन मम्मी हर आने वाला मेहमान सबसे पहले मेरे नम्बर पूंछेगा तो मैं क्या उत्तर दूँगी?"

“ मैं  तुम्हारी परेशानी समझती हूँ इसीलिये तो  मैं केवल तुम्हारी सहेलियों को बुला रहीं हूँ ।” रुद्रा को असमंजस में देखकर उन्होंने फिर कहा -”अच्छा ठीक है, तुम किसी को न कहना, मैं सबको फोन कर दूँगी ।"

  उसे अपनी सहेलियों के सामने भी शर्मिन्दगी महसूस हो रही थी। अपने ग्रुप में उसके हमेशा सबसे  ज्यादा नम्बर आया करते थे। इसलिये एकाध ने तो कह भी दिया -”यार, तूने तो इश्क के चक्कर में अपनी पढ़ाई ही बरबाद कर डाली।''

नीरजा ने भी कहा - '' कहती थी तुझसे कि पहले पढ़ाई कर ले फिर इश्क कर लेना लेकिन तू सुनती ही नहीं थी बिल्कुल पागल हो गई थी।''

लेकिन तभी मम्मी आ गईं और बात वहीं खतम हो गई। पार्टी में केवल उसकी कुछ सहेलियों के अलावा उसके भाई बहन और मम्मी पापा ही थे| केक कटने के बाद मम्मी पापा यह कहते  हुए चले – “ बच्चों अब तुम लोग मस्ती करो |” इतनी सारी लडकियों  के बीच में अकेला होने के कारण भाई भी जल्दी चला गया |

पार्टी समाप्त के बाद जब सब लडकियाँ चली गईं तो रुद्रा आकर बिस्तर पर लेट गई, वह खुश तो थी लेकिन साथ ही सोंचती भी जा रही थी कि सचमुच अगर उसने अपने पर नियंत्रण न रखा तो उसके साथ ही वरदान की भी जिन्दगी बर्बाद हो जायेगी| अभी दोंनों की पढाई का समय है, प्यार करने के लिये तो पूरी जिन्दगी पडी है |

 रात को सोते समय छोटी बहन सुभद्रा ने कहा -”दीदी, आप चली जाओगी तो मैं तुम्हारे बिना अकेले कैसे रहूँगी ?"

'' क्यों, मैं कहाँ जा रही हूँ |”रुद्रा चौंक गई।

“ तुमको पढ़ने के लिये बुआ के यहॉ बाहर भेजा जा रहा है। अभी पापा से मम्मी कह रही थीं कि अब तो रिजल्ट भी आ गया है। जल्दी से जल्दी इसे यहाँ से ले जाकर छोड़ आओ, नहीं तो मैं कुछ कर बैठूँगी। मुझसे नाटक और दिखावा नहीं होता। कुछ उल्टा सीधा कर आई तो कहीं के नहीं रहेंगे हम, दोनों छोटे बच्चों पर भी गलत असर पढ़ेगा।" सुभद्रा ने उसे  बताया|

रुद्रा समझ गई कि घर वालों को वरदान के बारे में पता चल गया है।

“ मैं कहीं नहीं जाऊॅगी, तू चिन्ता न कर, चुपचाप सो जा।"

रुद्रा ने बहन को तो चुप कराकर सुला दिया लेकिन उसका मस्तिष्क उलझन से भर गया। अब क्या करे? वह जानती थी कि एक बार अगर वह यहाँ  से चली गई तो वरदान को कभी नहीं पा पायेगी। बुआ और फूफा के कठोर अनुशासन में उनके अपने बच्चे छटपटाते रहते हैं तब वह क्या कर पायेगी? और पापा ने तो उन्हें सब बताकर कड़ी निगरानी के लिये कह दिया होगा, उसके पापा ने तो उसे कभी कुछ नहीं रोका था, अपने पापा की बेहद लाड़ली है वो। पापा ने आज तक उसकी कोई इच्छा अधूरी नहीं रहने दी है .

बुआ के घर के परंपरावादी और घुटन भरे माहौल में तो उसका दम ही घुट जायेगा, साथ ही यह भी जानती थी कि रोने गिड़गिड़ाने का कोई असर नहीं होगा।

दूसरे दिन उसने जब नीरजा के घर जाने को कहा तो पहले तो महिमा ने मना कर दिया -” कोई जरूरत नहीं, अभी कल तो आई थी नीरजा, आज क्या काम पड़ गया?"

“ मम्मी, नीरजा की दीदी आईं हैं, कल चली जायेंगी। उन्होंने मिलने के लिये बुलाया है।"

“ठीक है लेकिन जल्दी आ जाना और पहुँचनें के बाद मुझे फोन कर देना।"

नीरजा के यहाँ जाना कोई नई बात नहीं थी, बचपन से एक साथ पढ़ी हैं। महिमा और अजय उनके पूरे परिवार को जानते थे, हालांकि उन लोगों से घनिष्ठता नहीं थी। नीरजा भी जब आती थी पूरे दिन रहकर शाम तक घर जाती थी।

नीरजा के घर में वह नीरजा के समक्ष बिखर गई -”तू बता, मैं क्या करूँ , ये लोग मुझसे वरदान को हमेशा के लिये छुड़वा देंगे। मैं वरदान को तो नहीं छोड़ सकती, दुनिया भले छोड़ दूँ ।"

सुनकर नीरजा भी अवाक रह गई, उसे भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? उसने कई बार रुद्रा को समझाने का प्रयत्न किया -”रुद्रा, इस तरह वरदान के साथ किसी दिन तुम्हारे पापा, मम्मी या रिश्तेदार ने देख लिया तो मुसीबत में पड़ सकती हो"

लेकिन रुद्रा बेफिक्री से हॅस देती -” कुछ नहीं होगा यार, पापा भी जानते हैं कि लड़के भी दोस्त होते हैं और फिर प्यार किये बिना तुम्हें कैसे पता चलेगा कि दिल की बेचैनी कैसी होती है? एक बार करके देखो।"

“मुझे अपनी पढ़ाई और कैरियर पहले देखना है, यह सब तुम्हें ही मुबारक हो।"

लेकिन वह यह सब आज रुद्रा से नहीं कह सकती। वह जानती थी कि वह रुद्रा के लिये कुछ नहीं कर पायेगी लेकिन इस समय उसे तसल्ली देना बहुत जरूरी था -”क्या वरदान भी तुम्हें उतना ही चाहता है जितना तुम? क्या वह जीवन भर तुम्हारा साथ देगा?"

“हाँ ।” रुद्रा को अपने प्यार पर पूरा भरोसा था।

“तब तो एक ही उपाय है कि तुम लोग शादी कर लो तो कोई तुम्हारा कुछ नहीं कर पायेगा। तुम अठ्ठारह साल की हो चुकी हो। कानूनी रूप से बालिग हो तुम दोनों।

“वरदान अभी शादी नहीं कर सकता। उसका भी अभी बी०एस०सी० का रिजल्ट आया है। उस पर बहुत जिम्मेदारी हैं। उसे पहले नौकरी करके दो बहनों की शादी करनी है। अभी तो उसकी मम्मी की पेंशन से घर चलता है। अपने खर्चे और पढ़ाई के लिये वरदान ट्यूशन पढ़ाता है।"

“मेरी समझ में तो यही एक रास्ता है  तुम्हारी बुआ की घूरती नज़रों और तेज स्वभाव से तो मैं भी डरती हूँ । इसीलिये जब तुम्हारी बुआ आती हैं मैं तुम्हारे घर नहीं आती हूँ। तुम वरदान से बात करो शायद कुछ रास्ता निकल आये।"

वरदान के मोबाईल पर जगह बताते हुए उसने संदेश भेजा कि आधे घंटे के अन्दर वह आ रही है , बहुत जरूरी काम है और मिलकर जब रुद्रा ने पूरी बात बताई तो वह भी घबड़ा गया -” अब क्या करें?"

“मुझे भी लगता है कि नीरजा का बताया रास्ता ही सही है। या तो मुझे अपना लो या हमेशा के लिये भूल जाओ। अपना निर्णय बताओ, आज हमारे प्यार की परीक्षा की घड़ी है।"

“क्या करोगी तुम?"

“कुछ भी...... लेकिन न तो तुम्हारे पास दुबारा गिड़गिड़ाने आऊॅगी और न ही पापा का दिया वनवास स्वीकार करूंगी ।” रुद्रा के चेहरे पर आंसुओं के सूखे निशान के साथ अपार दृढ़ता देखकर सहम गया वरदान।

उसने रुद्रा को गले से लगा लिया -”जो होगा उसका मिलकर मुकाबला करेंगे। तुम्हें हमेशा के लिये खोने की हिम्मत नहीं है मुझमें।"

                                          ( 2 )

तीन दिन बाद रुद्रा ने अपनी मम्मी महिमा से कहा -” मम्मी, आज स्कूल जाना है। अब तो यह स्कूल छोड़कर कालेज में एडमीशन लेना होगा, इसलिये तमाम औपचारिकतायें पूरी करनी होगी और अब तो हम सब अलग हो जायेंगे इसलिये स्कूल के काम के बाद वहीं पास के रेस्टोरेंट में हम सहेलियों ने एक छोटी सी पार्टी रखी है।"

महिमा का दिल भर आया, उसके मन में आया कि सहेलियाँ ही क्यों परसों के बाद तो सब छूट जायेगा क्योंकि परसों रात की ट्रेन से अजय उसे छोड़ने जा रहे हैं। रिजर्वेशन हो चुका है। वो तो निश्चिंत थी कि रुद्रा को उनकी और अजय की योजना के बारे में कुछ भी मालुम नहीं है।

इसलिये उन्होंने कुछ नहीं कहा -” ठीक है, ज्यादा देर न करना और ये लो पैसे, खूब अच्छे से पार्टी करना।"

जाते समय रुद्रा का दिल धड़क रहा था। उसके पर्स में अपने सारे सर्टीफिकेट, पाकेट मनी से बचाये गुल्लक के पैसे और मम्मी के दिये एक हजार रुपये के अलावा दो जोड़ी कपड़े थे।

स्कूल को कहकर गई रुद्रा वापस नहीं आई। आफिस से आने के बाद महिमा ने अजय को पार्टी वाली बात बताई तो उन्होंने कहा -”अच्छा किया, जाने दिया। परसों तो चली ही जायेगी फिर जल्दी आने नहीं देंगे।"

शाम रात में बदलने लगी, प्रतीक्षा करते करते नौ बज गये तो चिन्ता हुई। नीरजा के यहाँ फोन किया गया तो पता चला कि नीरजा को बुखार है, वह तो आज स्कूल गई ही नहीं। दूसरी सहेलियों ने भी अनभिज्ञता दिखाई, उन्होंने स्कूल जाने या किसी भी पार्टी से इंकार कर दिया। उन्हें कुछ नहीं मालुम था। नीरजा ने पहले ही अपने होंठ सिल लिये थे। सुभद्रा ने भी डर के कारण किसी को नहीं बताया की उसने रुद्रा को कुछ बताया है |

पुलिस में वरदान के नाम से रिपोर्ट लिखा दी गई -” मेरी बेटी को फुसलाकर ले गया है यह लड़का।" रिपोर्ट तो लिख ली गयी लेकिन पुलिस ने कोई भी कार्यवाही करनी से इनकार कर दिया |

अजय को समझाते हुए कहा उन लोगों ने - “ आप रात भर इंतजार कर लीजिये, हो सकता है कि आपकी बेटी देर रात तक लौट आये। आजकल के बच्चों की पार्टियों में सब कुछ होता है। क्या पता नशा अधिक हो जाने के कारण किसी दोस्त के घर चली गई हो, सुबह नशा उतरेगा तो आ जायेगी।"

“मेरी बेटी ऐसी नहीं है।"

“सभी माता पिता को अपने बच्चों पर भरोसा होता है, लेकिन यही लोग कैसे भरोसा तोड़ते हैं, मैं जानता हूँ । आप घर जाइये, सुबह आइयेगा।"

दूसरे दिन जब पुलिस के साथ अजय सिंह वरदान के घर पहुँचे तो रुद्रा ही सामने आई। उसने पुलिस अधिकारी को आर्य समाज से अपने विवाह का प्रमाण पत्र दिखाकर कहा -”सर, न मुझे बहलाया - फुसलाया गया है और न ही मेरा अपहरण किया गया है। अपनी मर्जी से वरदान से विवाह करके अपने पति के घर में रह रही हूँ । हम कहीं भागकर नहीं गये हैं, अपने घर में रह रहे हैं। एक बालिग लड़के और लड़की को कानून विवाह और जीवनसाथी चुनने का अधिकार तो देता ही है।"

“ यदि यह अपहरण या जबरदस्ती का मामले होता तो हम कार्यवाही करते लेकिन अब हम आपकी कोई सहायता नहीं कर सकते। इन दोनों को आशीर्वाद देकर अपना लीजिये।” रुद्रा की बात सुनकर पुलिस के सभी लोग वापस चले गये।

अजय सिंह गुस्से से चीख पड़े – “ मूर्ख है तू। आखिर है क्या इस लड़के में? इसी दिन के लिये तुझे इतने दुलार से पाला था?”

फिर उन्होने रुद्रा का हाथ पकड़ लिया -” मेरे साथ चल बेटा, हम सब कुछ भूल जायेंगे। तुझे पहले की तरह प्यार करेंगे, पढ़ायेंगे लिखायेंगें, सुनहरा भविष्य तेरा इंतजार कर रहा है। अपने आपको इस तरह बरबाद मत कर, मैं अपनी लाड़ली बेटी को आत्महत्या कैसे करने दे सकता हूँ ? यह लड़का तुझे कुछ नहीं देगा, अभाव और दायित्वों तले मेरी राजकुमारी सी बेटी पिस जायेगी। तेरे पापा अभी जिन्दा हैं, तू डर मत, कोई तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता| मेरे साथ चल। अभी कोई  देर नहीं हुई है| मैं यह शादी निरस्त करवा दूँगा । मैं सब ठीक कर दूँगा ।"

जब वह हर प्रकार से समझाने के बाद भी न मानी तो चलते समय अजय सिंह ने कहा -”कभी अपने निर्णय पर बहुत पछताना पड़ेगा।"

उस समय गर्व से कहा था रुद्रा ने -”पापा मर जाऊॅगी पर कभी भी अपने निर्णय पर पछताकर सहायता के लिये आपके पास नहीं आऊॅगी।"

आज सोंचती है तो आश्चर्य होता है कि मम्मी, पापा, छोटे भाई बहन सात्विक और सुभद्रा को इतना प्यार करने वाली उसने कैसे कठोर बनकर सबको ठुकरा दिया था। पापा और जमाने के सामने हमेशा वरदान की ढ़ाल बनी रही।

सचमुच उसने अभाव के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। सास ने घर में तो रख लिया लेकिन स्वीकार नहीं किया -” ऊपर स्टोर वाले कमरे में इसे ले जा आओ वरदान। मेरे सामने इसे आने की जरूरत नहीं है। जो लड़की अपने माँ बाप की न हुई, मेरी क्या होगी?"

वरदान और रुद्रा चुपचाप ऊपर चले गये। ऊपर का कमरा कबाड़ से भरा था। छत पर एक लेट्रीन और बाथरूम भी था, लेकिन कमरे की फर्श और दीवारों पर प्लास्टर तक नहीं था और छत टीन की थी। दोनों ने मिलकर उस कमरे को सफाई करके रहने लायक बनाया। सास ने नीचे से एक झाड़ू, बाल्टी और एक पुरानी दरी छोटी ननद से भिजवा दी।

कितनी प्यारी थी उनकी सुहागरात। छत पर दरी बिछाकर दोनों लेटे थे। न दूसरी दरी, न चादर, न तकिया। वरदान बहुत उदास था -” यह हमारा कैसा विवाह है रुद्रा? सुहागरात के दिन हम छत पर जमीन में लेटे हैं। क्या ऐसे ही विवाह के सपने देखे थे हमने?"

“कोई बात नहीं, हम एक दूसरे के साथ हैं। दो हाथ तुम्हारे हैं और दो हाथ मेरे हैं, इन चार हाथों से हम सब कुछ कर लेंगे। अपनी मेहनत और धैर्य से हम अपना समय बहुत सुखद बनायेंगे।"

“मेरे पास कुछ पैसे हैं, कल चलकर कुछ सामान ले आयेंगे। मम्मी ने भी साथ नहीं दिया।"

“ हमारे कारण हमारे माता पिता की भावनायें आहत हुई हैं, उन्हें कुछ न कहो। यही क्या कम है कि उन्होंने घर में रहने की इजाजत दे दी है। हमारे सिर पर एक सुरक्षित छत है, रहने को जगह है।"

“कैसे होगा सब, हम दोनों की शिक्षा ही अधूरी है।” वरदान की मायूसी कम नहीं हो रही थी।

“मुझे पाकर भी खुश नहीं हो क्या? हो सकता है आगे चलकर हमारे पास वह सब कुछ होता जिसके सपने हर लड़का और लड़की देखते हैं। धूमधाम से हमारी शादी होती, फूलों से सजी सुहागरात होती लेकिन हम साथ न होते। तुम्हारे और मेरे पहलू में कोई और होता तो......।”रूद्रा एक पल के लिये रुकी फिर बोली -”आज अगर हम एक न होते तो जिन्दगी भर एक दूसरे की यादों में सिसकते हुये बिताते वो ज्यादा अच्छा था या आज हम खुले आकाश के नीचे एक दूसरे की बॉहों में है, वह ज्यादा अच्छा है?"

“यह बात नहीं है, मैं भी बहुत खुश हूँ लेकिन तुम्हारे लिये परेशान हूँ । मुझे तो आदत है लेकिन तुम तो अभाव जानती ही नहीं हो। तुम्हारे पापा सही कह रहे थे कि मैं तुम्हें कुछ नहीं दे पाऊॅगा।"

रुद्रा ने वरदान के मुँह पर हाथ रख दिया - ”मैं तुम्हें पाकर बहुत खुश हूँ। अब चाँद सितारों से भरी इस सुहानी  रात को अपनी मायूसी से अँधेरी मत बनाओ। यह नीला आकाश, मुस्कराता चन्दा, खिलखिलाती चॉदनी, टिमटिमाते तारे सभी मिलकर हमें हमारे विवाह की बधाई दे रहे हैं। ऐसी सुहागरात भी तो हर एक के नसीब में नहीं होगी।” वरदान ने रुद्रा को अपने सीने में भींच लिया।

उन दोनों ने अभावों से लड़ने के लिये कमर कस ली। पढ़ाई के साथ वरदान ने अपनी ट्यूशनें बढ़ा दी। रुद्रा के समझाने पर वह माँ की अनजान में चुपके से अपनी बहनों को पैसे देता रहा।

पढ़ाई रुद्रा ने भी नहीं छोड़ी। उसने बी० ए० का प्राइवेट फार्म भर दिया। सबसे पहले एक सस्ता सा मोबाइल खरीदा, यह अब उसकी प्राथमिक आवश्यकता थी। रुद्रा ने एक विज्ञापन देखा जिसमें घर में पढ़ाने वाले ट्यूटर के लिये सम्पर्क करने के लिये एक मोबाइल नम्बर दिया था। उसने उस नम्बर पर बात की तो उसे ट्यूशन तो मिल गई लेकिन उसे उस व्यक्ति को कुछ पैसे कमीशन के रूप में देने पड़े।

इसके बाद तो उसे इतने ट्यूशन मिलने लगे कि उसे मना करना पड़ने लगा। रुद्रा की अंग्रेजी और गणित बहुत अच्छी थी, इसलिये ट्यूशनों से उसका खर्चा आराम से चलने लगा।

सास ननदों की कटूक्तियाँ और ताने  वरदान के प्यार के कवच एवं संघर्षों की दहकती ज्वाला में स्वयमेव नष्ट हो जाते थे।

विवाह की पहली वर्षगॉठ पर उसने जबरदस्ती वरदान को मॉ का आशीर्वाद लेने मिठाई लेकर भेजा -”मैं नहीं जाऊॅगा, वो कुछ गलत कह देंगी तो मुझसे सहन नहीं होगा और ये मिठाई तो वो फेंक ही देंगी।"

“कोई बात नहीं, वो जो करें करने देना। तुम अपना कर्त्तव्य करना, वो माँ हैं आज के दिन वो तुम्हें कुछ नहीं कहेंगी। हो सकता है वो तुम्हारा खुद इंतजार कर रही हों।"

“तुम भी चलो।"

“मेरे जाने से वो और भी नाराज हो सकती हैं। फिर मैं और तुम क्या अलग है, उनका दिया आशीर्वाद हम दोनों को मिलेगा।"

वरदान गया तो पहले तो सास ने बहुत बातें सुनाईं लेकिन जब वरदान ने जबरदस्ती उनके गले में बाँहे डालकर मुँह में मिठाई ठूँस दीं तो उन्होंने उस पर आशीर्वाद की झड़ी लगा दी, साथ ही कह दिया कि अपने बेटे को छीनने वाली रुद्रा को वो  कभी माफ नहीं करेंगी। वरदान चुप रह गया क्योंकि रुद्रा से वादा करके आया था कि माँ से कुछ नहीं कहेगा।

धीरे धीरे नीचे से सास के तानों की आवाज आनी बन्द हो गई और सास से छुपकर ननदें भी ऊपर उसके पास आने लगीं।

विवाह की दूसरी वर्षगॉठ पर जब सास ऊपर उसके कमरे में आ गईं तो वह और वरदान दोनों भौचक्के रह गये -”मम्मी, आप?"

सास ने कोई जवाब नहीं दिया। रुद्रा उनके चरण स्पर्श करने के लिये जैसे ही आगे बढ़ी उन्होंने रुद्रा का हाथ पकड़ा और सीढ़ियॉ उतरती चली गईं। उनके पीछे घिसटती हुई हतप्रभ रुद्रा और उसके पीछे वरदान था। नीचे पहुँचकर दरवाजे पर सास ने रुद्रा का हाथ छोड़ा -”यहीं खड़ी रहना।” एक गंभीर स्वर गूँज  उठा।

रुद्रा और वरदान की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी हाथ में थाली लिये सास ने आकर आरती  उतारी -”अब अंदर आओ।"

परन्तु भीतर आने की बजाय वे दोनों वहीं माँ के पैरों में लिपट गये। सास ने दोनों को उठाकर सीने से लगा लिया।

उस दिन पूरे परिवार ने मिलकर आज विवाह का उत्सव मनाया। सास ने अपने हाथ से बहुत सारे पकवान बनाये और सबको खिलाया। दोनों को उपहार भी दिये, नीचे एक कमरा खाली करवाकर उन्हें दे दिया। रुद्रा की खुशी का ठिकाना न था लेकिन अपने पापा मम्मी भी याद आ गये। काश..... पापा भी इसी तरह उन दोनों को अपना लें।

कुछ दिन बाद सास ने एक नया फरमान जारी कर दिया जिससे वह काफी परेशान हो गई -”बहू, अब तुम घर घर जाकर ट्यूशन नहीं पढ़ाओगी।"

“ठीक है मम्मी जी, बच्चों के इम्तहानों बाद छोड़ दूँगी।"

वरदान को एम०एस०सी० बाद एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी तो मिल गई लेकिन उस थोड़े से वेतन में जीर्ण-शीर्ण मकान को बनवाना, दोनों ननदों की शादियॉ करना और आगे भविष्य के सपने पूरे कर पाना असम्भव था। वह सास की बात टालना नहीं चाहती थी।

"कोई बात नहीं,अभी तो बात टल गई है, बच्चों के इम्तहान होने में अभी सात महीने हैं तब तक कोई न कोई रास्ता निकल आयेगा। वरदान ने कहा भी कि वह मम्मी से बात कर लेगा लेकिन उसने यह कहकर मनाकर दिया कि यह सास बहू का मामला है, वह इस सबसे दूर ही रहे।

एक दिन वह ट्यूशन के लिये गई तो उसके छात्र की मम्मी ने उसे चाय के लिये रोक लिया। बातों में उन्होंने बताया कि उनके पति बैंक में ॠण विभाग देखते हैं साथ ही उन्होंने यह भी बताया की आजकल सरकार की ओर से महिला लघु उद्योग के लिये महिलाओं के लिये बहुत अच्छी योजनायें आईं हैं। किसी महिला को व्यापार के लिये पच्चीस हजार तक का ॠण लेना हो तो बताना।

रुद्रा ने बैंक से ॠण लेकर अपने घर के ऊपर वाले कमरे में ही छोटे बच्चों के रेडीमेड कपड़ों का काम शुरू किया। घर के अंदर काम होने के कारण सास बहुत खुश थीं। उन्होंने रुद्रा को घर गृहस्थी के कामों से बिल्कुल मुक्त कर दिया -” मेरे होते हुये गृहस्थी की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। मैं सब देख लूँगी ।"

संघर्ष के उन दिनों  में उसकी ननदों ने भी भरपूर सहयोग दिया। एक ही शहर में रहते हुये न कभी पापा आये और न वह गई। फिर एक दिन नीरजा ने बताया था कि उनका स्थानान्तरण हो गया है।

जिम्मेदारियों में सहभागी बनी रुद्रा को वरदान और उसके परिवार ने प्यार का अनमोल खजाना देकर मालामाल कर दिया। काम बढ़ने लगा तो रुद्रा को घर का कमरा छोड़कर किराये पर जगह लेनी पड़ी।

घर की जिम्मेदारियों के प्रति निश्चिंतता आने पर वरदान ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दी और पदोन्नति करते करते अपनी कम्पनी का उच्च अधिकारी हो गया।

शादी के बारह वर्ष के भीतर ही उसका जीर्ण-शीर्ण मकान आधुनिक सुख-सुविधाओं से भरपूर दो मंजिली कोठी में बदल गया। दोनों ननदों की धूमधाम से शादी हो गई और वह दो प्यारे बच्चों की माँ बन गई। अपने व्यापार को पूर्णतः व्यवस्थित करने, एक ननद की शादी होने और मकान बनाने का लक्ष्य पूरा करने के बाद ही उन्होंने बच्चे के विषय में सोंचा था। जीवन संघर्षों के बाद सुहावना हो गया।

                                                ( **3 )**

“आज इतना उदास क्यों हो नीलिमा?"

“ सुकन्या, पापा का यहाँ से स्थानान्तरण हो गया है। शायद इसी सप्ताह हम सबको यहॉ से जाना पड़े।” नीलिमा की ऑखों में ऑसू थे।

सुकन्या भी बहुत दुखी हो गई - ” फिर तो हम अलग हो जायेंगे, हमारी दोस्ती का क्या होगा? आठ साल से हम साथ पढ़ते खेलते आ रहे हैं। मेरी तो तुम्हारे अलावा कोई सहेली भी नहीं है।"

“क्या करें, पापा ने स्थानान्तरण रुकवाने का बहुत प्रयास किया है लेकिन प्रोन्नति के साथ स्थानान्तरण हुआ है, इसलिये जाना ही पड़ेगा वरना प्रोन्नति निरस्त हो जायेगी।"

आठ वर्ष से साथ रहते रहते दोनों परिवार एक दूसरे के साथ पूरी तरह घुल मिल गये थे। दोनों घर में बच्चों के कपड़े और खिलौने तीनों के लिये आते थे। पता ही नहीं चलता था कि कौन किस घर का सदस्य है?

इसलिये अलग होते समय सब बहुत दुखी थे। हफ्ते भर के अंदर कश्यप साहब नीलिमा और पत्नी सुमन को लेकर चले गये लेकिन दोनों परिवारों ने मिलकर यह तय किया कि साल में एक बार परिवार सहित वो लोग एक दूसरे से जरूर मिलेंगे और कुछ समय साथ छुट्टी मनायेंगे।

समय बीतने के साथ ही तीनों बच्चे अपने अपने अध्ययन में व्यस्त हो गये। बड़े लोगों की व्यस्तता बढ़ती गई और साल में एक बार मिलना भी संभव नहीं रहा। फोन से दोनों परिवार जुड़े तो रहे लेकिन पहले वाली आत्मीयता का अभाव होता गया। जबकि नीलिमा और सुकन्या की दोस्ती आज भी वैसी ही थी।

कालेज से आकर जब तक नीलिमा पूरे दिन की बातें सुकन्या को न बता दे तब तक उसे चैन नहीं था, यही हाल सुकन्या का था। नीलिमा का जब मन होता वह सुकन्या से मिलने चली जाती और सुकन्या भी नीलिमा के पास आ जाती। सुकन्या ने एक परिवर्तन देखा कि अब उनकी मंडली में नीलिमा का भाई मृत्युंजय शामिल नहीं होता था। नीलिमा ने एक बार पूँछा भी -”भाई, क्या तुम्हें सुकन्या का आना पसंद नहीं है, अब तुम हम लोगों के साथ नहीं आते।"

“ अब हम बच्चे नहीं रहे नीलू, किसी को अन्यथा सोंचने का अवसर क्यों दिया जाये? तुम कभी ऐसा कुछ न सोंचना। अपने घर में उसके आने से रोशनी हो जाती है। घर में गूँजती तुम दोनों की चिड़ियों सी चहकती आवाज बहुत अच्छी लगती है मुझे। साथ भले न रहूँ लेकिन उसके आने से घर में बिखरे उजाले को महसूस करता रहता हूँ "

अचानक नीलिमा के पापा की मृत्यु पर गुप्ता  साहब पत्नी और सुकन्या के साथ आये। इस परिवार पर अकस्मात्  आई विपत्ति से सभी दुखी थे, लेकिन कुदरत के आगे क्या किया जा सकता था। मृत्युंजय का एम० बी० ए० अभी अधूरा था, नीलिमा भी अभी पढ़ रही थी। घर का एकमात्र सहारा पेंशन रह गई थी। एक अच्छाई कि सिर छुपाने के लिये एक छोटा सा घर था।

कुछ दिन बाद नीलिमा ने सुकन्या से फोन पर कहा -”कुछ खाकर अपना मुँह मीठा कर लो फिर तुम्हें एक खुशखबरी सुनाऊॅगी।"

“पहले बताओ क्या बात है? कोई ब्वायफ्रेंड मिल गया क्या? ”सुकन्या का हॅसता स्वर।

“तुम तो पागल हो।” नीलिमा भी हॅस पड़ी -” मुझे नौकरी मिल गई है।"

“तुम नौकरी करोगी? तुम तो आगे पढ़ना चाहती थीं।"

“परिस्थिति ऐसी हो गई है कि मेरी और भाई की पढ़ाई एक साथ नहीं हो सकती जबकि भाई का एम०बी०ए० होते ही उसे नौकरी मिल जायेगी। इसलिये मैंने सबसे कह दिया है कि मैं आगे पढ़ाई नहीं करना चाहती और जब उसे नौकरी मिल जायेगी तो मैं फिर से अपनी पढ़ाई शुरू कर दूँगी । सिर्फ एक साल की तो बात है, उसका आख़िरी साल है| इसके बाद मैं यह नौकरी छोड़ दूँगी ।"

“तुम बहुत प्यारी और समझदार हो नीलिमा। आज की परिस्थिति में तुम्हारा निर्णय सही है। मेरी शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं।"

फिर नीलिमा ने सुकन्या को अपनी कम्पनी, वेतन आदि के बारे में पूरी बातें बताई तो सुकन्या ने हॅसते हुये कहा -”मैं आऊॅगी तो बहुत बढ़िया पार्टी और उपहार चाहिये मुझे।"

“पार्टी तो जब तुम आओगी तब जैसी चाहना लेना लेकिन अपने पहले वेतन से तुम्हें उपहार भेजूँगी, क्या चाहिये?"

“जो तुम्हें अच्छा लगे, मेरे लिये अमूल्य होगा वह।"

नीलिमा बहुत खुश थी। उसके काम से उसका स्टाफ और उसके बाँस दोनों खुश थे। चूँकि वह पर्सनल सेकेट्री थी तो उसका अधिकतर काम बॉस से ही सम्बन्धित रहते थे। इसलिये उसे घर पहुँचने में भी देर हो जाती क्योंकि उसका घर आफिस से बहुत दूर था। अब कई कई दिन तक उसकी सुकन्या से बात नहीं हो पाती थी।

एकाध बार जब नीलिमा को आफिस में देर तक रुकना पड़ा तो उसने बॉस को अपनी पूरी परिस्थिति से अवगत कराने के साथ यह भी बता दिया कि उसे यह नौकरी सिर्फ एक वर्ष के लिये ही चाहिये। अगर बॉस चाहें तो उसे पर्सनल सेकेट्री की बजाय दूसरा काम दे सकते हैं और उसका वेतन भी कम कर दें लेकिन न तो वह रात देर तक रुक पायेगी और न ही उनके साथ शहर के बाहर जा पायेगी।

उसकी स्पष्ट बात से बॉस बहुत खुश हुये -”तुम तो बहुत बहादुर और अच्छी लड़की हो। अब तुम निश्चिंत रहो, जैसे काम कर रही हो करो, कोई परेशानी हो तो मुझसे कहना।"

इसके बाद बॉस नीलिमा का बहुत ख्याल रखने लगे। उसके काम की, कभी कभी कपड़ों की भी सराहना करते। लंच समय होने पर खुद कह देते -” नीलिमा, लंच टाइम हो गया है।"

नीलिमा खुश थी उसे इतने अच्छे बॉस मिले हैं, यह बात उसने सुकन्या को और अपनी मम्मी को भी बताई लेकिन कभी कभी नीलिमा को बॉस के व्यवहार और ऑखों के हाव भाव में सामंजस्य नजर नहीं आता तो वह घबड़ा जाती लेकिन अगले ही क्षण अपने मन का भ्रम मानकर शान्त हो जाती।

नये साल की पार्टी बहुत बड़े फाइव स्टार होटल में रखी गई। स्टाफ के कुछ खास लोगों को ही निमंत्रित किया गया था। नीलिमा ने मना कर दिया -”सर, मम्मी इजाजत नहीं देंगी और मैं रात में घर कैसे जाऊॅगी?"

“देखो नीलिमा, यह भी आफिस के कार्य का एक भाग है। वैसे मैं तुम्हारी मजबूरी समझता हूँ  लेकिन इस पार्टी में कम्पनी के सभी बड़े अधिकारी और कम्पनी के एमoडीo भी आयेंगे। तुम्हारा आना जरूरी है, पार्टी में कुछ खास लोगों को ही बुलाया गया है। तुम एम०डी० साहब के लौटने के बाद चली जाना। मैं तुम्हें किसी के साथ वापस भिजवा दूगा। न आने से तुम्हारा नुकसान हो सकता है।"

नीलिमा का मन तो बिल्कुल नहीं था लेकिन नौकरी उसकी मजबूरी थी जिसे वह किसी भी हाल में खोना नहीं चाहती थी। वह मम्मी को जल्दी आने का आश्वासन देकर आ गई। आज वह बहुत सुंदर लग रही थी, सभी ने उसकी सराहना की। उसके बॉस तो उसे देखते ही रह गये। उन्हें ऐसे देखते देखकर नीलिमा शर्माकर रह गई।

बॉस ने आकर बताया कि आवश्यक काम आ जाने के कारण एम० डी० साहब नहीं आ पायेंगे। पार्टी अपने चरम पर थी। नीलिमा का मन नहीं लग रहा था, उसे घर जाने की जल्दी थी। नया साल शुरू हो गया। उसने जाकर बॉस से कहा तो उन्होंने कहा -”अभी कैसे? देख रही हो कि किसी को अपना होश नहीं है। तुम भी पार्टी का मजा लो, चली जाना।"

“नहीं सर, मैं अब जाऊॅगी। मम्मी इंतजार कर रही होंगी। आपने वापस भिजवाने का वादा किया था इसलिये चली आई थी, वरना मैं कभी न आती। अगर कोई न मिला तो मैं टैक्सी से चली जाऊॅगी।"

बॉस ने कुछ देर सोंचा, फिर कहा -”तुम चिन्ता न करो, मैं व्यवस्था करता हूँ ।"

नीलिमा को चैन नहीं पड़ रहा था। वह इतनी रात तक कभी घर के बाहर नहीं रही थी। जानती थी कि मम्मी दरवाजे पर टकटकी लगाये खिड़की पर बैठी होंगी। तभी बॉस आते दिखे -”कोई मिल नहीं रहा है, चलो मैं ही अपनी कार से तुम्हें छोड़ देता हूँ ।"

“आप रहने दीजिये सर, मैं टैक्सी से चली जाऊॅगी। आप मेरे लिये अपनी पार्टी छोड़कर मत जाइये।"

“कोई बात नहीं। एम० डी० साहब के न आने के कारण मेरा भी अब मन नहीं लग रहा है।"

नीलिमा बॉस के साथ आकर कार में गुमसुम सी बैठ गई, कुछ देर बाद बॉस खुद बोले -”इस तरह क्या सोंच रही हो?'

“कुछ नहीं, सोंच रही हूँ कि मेरे कारण आपको पार्टी छोड़कर आनी पड़ी।"

“यह कोई बड़ी बात नहीं है, इस विषय में मत सोंचो।”नीलिमा ने सीट पर सिर टिकाकर ऑखें बन्द कर ली लेकिन जब उसे लगा कि कार उसके घर के रास्ते पर जाने की बजाय दूसरी दिशा की ओर मुड़ने लगी है तो वह चौंक गई -” सर, मेरा घर इधर नहीं है।"

“मालुम है।”बॉस ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा -”इधर मुझे अपने दोस्त से एक जरूरी काम है। बस पॉच मिनट लगेंगे।"

“इतनी रात को कौन सा  काम? आपका दोस्त तो आराम से सो रहा होगा, आप जाकर उसकी नींद खराब ही करेंगे।"

परेशानी में भी नीलिमा हॅस पड़ी। हॅसते हुये वह और अधिक सुंदर लग रही थी, बॉस एकटक उसे देखने लगे -”इस तरह क्या देख रहे हैं सर? सामने देखकर गाड़ी चलाइये।"

“कुछ नहीं।” बॉस चुपचाप कार चलाने लगे।

“आओ नीलिमा।”एक स्थान पर कार रोककर बॉस ने कहा |

 ”मैं यहीं कार में बैठी हूँ, आप अपना काम करके आ जाइये।"

“इतनी खूबसूरत लड़की को मैं इस रात में अकेले छोड़ कर तो जा नहीं सकता, अगर तुम नहीं आओगी तो चलो, रहने दो।"

बॉस फिर से कार में बैठने लगे तो नीलिमा कार से उतर आई -”ठीक है सर लेकिन जल्दी कीजियेगा। मम्मी परेशान हो रही होंगी। मोबाइल की बैटरी भी डाउन हो गई है तो उन्हें फोन भी नहीं कर सकती। घर से लेकर तो आई थी लेकिन पता नहीं चार्जर कहाँ गिर गया  "

“ज्यादा देर नहीं लगेगी। टैक्सी से आतीं तो अभी आधे रास्ते में होतीं। बस काम होते ही मैं जल्दी से तुम्हें पहुँचा दूँगा ।"

वो लोग पहुँचे तो नीलिमा को ऐसा लगा कि बॉस का दोस्त जैसे इन्हीं लोगों का इंतजार कर रहा था -” मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। तुम्हारा काम तो हो गया है, लेकिन क्या मेरी सामान लाये हो?"

“हॉ, यह लो ।” बॉस ने उसे एक थैला पकड़ाया।

“चलें सर?"

नीलिमा का तो एक एक पल भारी था। उसको चैन नहीं था, तभी बॉस का दोस्त बोल पड़ा -”नीलिमा जी, आप पहली बार मेरे घर आईं हैं, एक कप चाय तो पीनी ही पड़ेगी।"

“नहीं, मुझे चाय की कोई जरूरत नहीं है। पहले ही बहुत देर हो चुकी है।"

“तुम्हें हो या न हो लेकिन मुझे है। बिना एक कप चाय पिये मुझसे गाड़ी नहीं चलेगी।” बॉस ने सोफे पर पसरते हुये दोस्त से कहा -”तुम जल्दी से चाय बना लाओ।"

नीलिमा इस सूने घर में अंदर से डर रही थी, मगर चुपचाप बैठी रही। चाय आई तो उसका पीने का बिल्कुल मन नहीं था लेकिन जब बॉस ने अपने हाथ से उसे कप पकड़ाया तो वह मना नहीं कर पाई। इसके बाद उसे कुछ याद नहीं कि वह कैसे घर पहुँची?

सुबह उठी तो उसका पूरा शरीर दर्द से फटा जा रहा था। सिर में जैसे कोई हथौड़े चला रहा हो। ऑखें खुल नहीं रही थीं, उठकर बैठना चाहा तो चक्कर आने के कारण फिर बिस्तर पर लुढ़क गई। उसमें बाथरूम तक जाने की ताकत नहीं बची थी।

तभी मम्मी आकर उसका सिर सहलाने लगीं -”अब कैसी तबियत है बेटा? तेरे साहब बता रहे थे कि रास्ते में तुम्हारी तबियत बहुत खराब हो गई थी और तुम बेहोश हो गईं थी। मैंने और तुम्हारे साहब ने तुम्हें बड़ी मुश्किल से सहारा देकर कार से उतारा था। इसलिये मैं मना कर रही थी| मैं जानती थी कि ऐसी पार्टियों में तुम सामंजस्य नहीं कर पाओगी।"

“मम्मी फोन उठा दीजिये, सर से कह दूँ कि मैं आज नहीं आ पाऊॅगी।"

मम्मी उसके हाथ में फोन देकर चली गईं -”हॉ, अब एक- दो दिन की छुट्टी ले लो।"

नीलिमा को अजीब सा लग रहा था, वह तो चाय पी रही थी उसके बाद उसे क्या हो गया, तबियत अचानक कैसे खराब हो गई? कहीं कुछ गलत तो नहीं हो गया, लेकिन नहीं ...... बॉस बहुत अच्छे हैं.....उसका कितना ख्याल रखते हैं.....उसे टैक्सी से नहीं आने दिया ...... उसके लिये अपनी पार्टी छोड़कर घर पहुँचाने आये।

नीलिमा ने बॉस को फोन किया तो उन्होंने खुद कहा-”तुम तो अच्छी भली चाय पी रहीं थी, अचानक क्या हो गया था तुम्हें?”

“सर, मुझे कुछ याद नहीं।"

“ गलती मेरी भी थी, तुम इस तरह के माहौल की आदी नहीं हो और देर के कारण तुम बहुत मानसिक तनाव में हो गईं थी, इसीलिये तुम चक्कर आने से बेहोश होकर गिर गईं थी। बड़ी मुश्किल से तुम्हें होश में लाया था, नये साल के कारण डाक्टर भी नहीं मिल सकता था। मुझे लगता है कि तनाव के कारण तुम्हारा ब्लड प्रेशर बढ़ या घट गया होगा। तुम चाहो तो डाक्टर को दिखाकर दवा ले लो।"

“मुझे एक दो दिन की छुट्टी चाहिये सर।"

“कोई बात नहीं आराम करो। कोई जरूरत हो तो बताना।"

नीलिमा के सारे संदेह मिट गये। बॉस तो सचमुच बहुत अच्छे हैं, उसकी परेशानी समझते हैं।

( **4 )**

नीलिमा आफिस तो आने लगी लेकिन उसके अंदर एक अजीब सी बेचैनी रहने लगी, तबियत बोझिल सी रहने लगी, काम में मन नहीं लगता था, काम में गलतियाँ  अधिक होने लगीं। सबसे बड़ी बात बॉस के व्यवहार में भी पहले जैसी बात नहीं रही।

एक दिन तो उन्होंने सबके सामने उसे बुरी तरह डॉट दिया -” क्या बात है नीलिमा, काम में मन नहीं लगता तो नौकरी छोड़ दो। मुझे काम चाहिये, तुम्हारी जगह कोई दूसरा आयेगा।” नीलिमा सिर झुका लेती। बॉस को मालुम था कि नीलिमा अभी नौकरी नहीं छोड़ सकती है।

अब नीलिमा के पास इतना काम होता था कि वह आठ बजे के पहले आफिस छोड़ ही नहीं पाती थी लेकिन वह चुपचाप सहती जा रही थी, । पॉच महीने बीत चुके हैं उसको नौकरी करते, किसी तरह बाकी भी बीत जायेंगे।

एक दिन शाम को नीलिमा काम कर रही थी। एकाध लोगों को छोड़कर करीब सभी लोग जा चुके थे। नीलिमा के इंटरकॉम पर फोन आया, बॉस उसे बुला रहे थे।

“बैठो।” बॉस कुछ गंभीर से लगे, नीलिमा चुपचाप बैठ गई। कुछ देर कोई कुछ न बोला, फिर बॉस ही बोले -” कल घर में बोलकर आना कि तुम रात में घर नहीं लौट पाओगी।"

नीलिमा चौंक गई -”क्यों सर, मैंने आपको पहले ही बता दिया था कि मेरी अपनी कुछ समस्यायें हैं, इसलिये मैं देर रात तक नहीं रुक पाऊॅगी। वैसे भी मुझे आजकल घर पहुँचने में देर हो जाती है।"

“यह तुम्हारी समस्या है, मेरा उन फालतू बातों से कोई लेना-देना नहीं है। रही बात इन्कार की तो यह लिफाफा खोलकर देख लो कि क्या तुम मना करने की स्थिति में हो।”बॉस ने नीलिमा के सामने एक बंद लिफाफा रख दिया -”इसे खोलकर देख लो फिर बताना कि क्या तुम सचमुच इंकार कर सकती हो?"

नीलिमा ने कॉपते हाथों से लिफाफा खोला तो उसके पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। मेज पर पड़ी तस्वीरें देखकर उसके होश उड़ गये। उसे समझते देर नहीं लगी कि पार्टी से लौटते समय बॉस और उसके दोस्त संजय ने उसे चाय में कुछ ऐसा पिला दिया कि वह अचेत हो गई। उसके बाद उन दोनों ने उसके साथ दुष्कर्म करके ये फोटो खींच ली। सामने बॉस कुटिल मुस्कान लिये बैठे थे ।

“ इतना बड़ा विश्वासघात? मैं आपको क्या समझती थी और आप क्या निकले? मैंने आपका क्या बिगाड़ा था?” नीलिमा की ऑखों से ऑसुओं की झड़ी लग गई।

बॉस बड़े इत्मीनान से उसे रोते हुये देख रहे थे, फिर बिना जरा भी संकोच के बोलने लगे -”तुम्हारा रोना - धोना खतम हो गया हो तो आगे काम की बात कर ली जाये।”फिर उन्होंने नीलिमा की ओर झुकते हुये कहा -”सोंच लो, अभी यह सब मेरे और तुम्हारे बीच में है। तुम्हारा भाई और तुम्हारी मॉ कभी नहीं जान पायेंगे। तुम्हारी नौकरी वैसे ही चलती रहेगी, एक साल बाद तुम अपने रास्ते चली जाना, मैं अपने रास्ते। मैं ये सारी फोटो पेनड्राइव सहित तुम्हें दे दूँगा। हमारे बीच का सम्बन्ध हमेशा के लिये  समाप्त हो जायेगा।"

नीलिमा के पास कोई रास्ता नहीं था। उसने एक बार समर्पण किया तो बॉस के हाथ की कठपुतली बनकर रह गई। नीलिमा के बहुत मिन्नत करने पर वो बस इतना मान गये कि उसे रात में रुकने को नहीं कहेंगे, जिससे माँ को पता न चले लेकिन दिन में वह कभी मना नहीं करेगी।

बॉस और उनके दोस्त  संजय का जब भी मन होता, होटल के किसी कमरे में या उस तलाकशुदा संजय के अकेले घर में नीलिमा को उन दोनों की वासना पूर्ति के लिये जाना पड़ता।

नीलिमा की हँसी खो गई। वह हर समय उदास रहने लगी। उसकी चहक भरी आवाज कहीं गुम हो गई। मम्मी के कई बार  पर भी उसने कुछ नहीं बताया। केवल इतना ही कहा -”बहुत काम रहता है मम्मी, बहुत थक जाती हूँ। बस, थोड़े दिन बचे हैं भाई का एम०बी०ए० पूरा होने में। उसके बाद मैं नौकरी नहीं करूँगी।"

“ हाँ , बेटा, जय की नौकरी लगने के बाद अपनी पढाई पूरी करना|”

सुकन्या को भी कुछ नहीं बताया उसने जबकि उसके व्यवहार में परिवर्तन सुकन्या अनुभव कर रही थी -” मुझे पता नहीं क्यों लगता है कि तुम मुझसे  कुछ छुपा रही हो, कोई परेशानी है तो बताओ।"

उसने सुकन्या को भी वही बताया जो अपनी मम्मी को बताया था -”कुछ नहीं सुकन्या, काम बढ़ गया है, इसलिये बहुत थक जाती हूँ  कभी कभी तो घर आते आते रात के ग्यारह बज जाते हैं।"

“तुम अपने बॉस को अपनी परेशानी बोलो कि तुम्हें इतनी देर तक न रोकें

“मैंने एक बार बोलकर देख लिया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अब मैं कुछ नहीं कहूँगी। आठ  महीने बीत चुके हैं ,बस थोड़े दिन बचे हैं, इसी आशा में तो समय काट रही हूँ।"

“ तू बहुत बहादुर है नीलू, अपना ख्याल रखना। मृत्युंजय बहुत भाग्यशाली है जिसके पास तेरे जैसी बहन है। मेरी शुभकामनायें तेरे साथ हैं।"

“अपनों के लिये अपने ही नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

इस बार जब नियत तिथि को माहवारी नहीं हुई तो नीलिमा पीरियड होने की दवा लेकर आई लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ तो नीलिमा को चिन्ता हुई। अब वह और परेशान हो गई। चुपके से ”प्रेगनेंसी टेस्ट किट” ले कर आई, जिस बात का शक था वही सच्चाई सामने थी।

वैसे नीलिमा बराबर गर्भनिरोधक दवाइयों का प्रयोग करती थी लेकिन पिछले महीने उसको बुखार आने के कारण एक हफ्ते तक वह ये दवाइयॉ नहीं ले पाई, डाक्टर से क्या कहती? दवा लेने मम्मी खुद जाती थीं, वह मम्मी से कैसे ये दवाइयॉ मॅगाती? और जिस दिन आफिस आई उसी दिन इतने दिन के भूखे बॉस की उसे इच्छा पूर्ति करनी पड़ी।

अब क्या करे? जाकर बॉस से बताया तो उन्होंने साफ मना कर दिया -”बकवास मत करो, मुझे इन सब फालतू बातों से कोई लेना-देना नहीं है।"

“सर, आपने ही मुझे इस स्थिति में पहुँचाया है। मेरे पास आपकी तस्वीरें हैं, यदि वो सब मैं आपकी पत्नी को दिखा दूँ तो?"

बॉस ठहाका मारकर हॅस पड़े -”जाओ, दिखा दो। पहले तो मेरी पत्नी को तुमसे अधिक मुझ पर विश्वास है, तुम्हारी बात मानेगी नहीं। अगर मान भी गई तो उसे बहलाना मुझे अच्छे से आता है ।न तुम पहली हो और न आख़िरी| तुम्हारे जैसी लड़कियॉ तो जिन्दगी में आती जाती रहती हैं।"

एक एक शब्द चबाते हुये बॉस ने कुटिलता से कहा -”मेरी छोड़ो, तुम अपनी बात करो, पेट में बच्चा लेकर कहॉ जाओगी तुम? ये सारी तस्वीरें देखकर तुम्हारी मॉ और भाई कितने खुश होंगे?"

नीलिमा रो पड़ी -”सर, ऐसा मत करिये। मेरी मम्मी यह बर्दाश्त नहीं कर पायेंगी। मेरे भाई की पूरी जिन्दगी बरबाद हो जायेगी, वह आत्महत्या कर लेगा। आप मेरे साथ डाक्टर के पास तो चल ही सकते हैं|"

“मुझे तुम्हारे झमेलों से कोई मतलब नहीं है। चुपचाप डाक्टर के पास जाओ और यह सब निपटाकर आओ।"

“सर, मेरी परेशानी समझिये, मैं किसके साथ डाक्टर के पास जाऊँ? इस समय मेरा साथ दीजिये, मेरे साथ डाक्टर के पास चलिये। मैं हमेशा आपकी बात मानती रहूँगी।"

“मुझे तुम्हारी फालतू बकवास में कोई दिलचस्पी नहीं है। यहॉ से जाओ।” नीलिमा चुपचाप अपनी बेबसी पर सिर झुकाये एक पत्थर दिल इंसान के सामने रोती रही लेकिन उस पर कोई असर न हुआ।

थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा फिर जैसे उन्होंने कोई फैसला लिया -”अच्छा, तुम अपने केबिन में जाकर बैठो, कोई निर्णय लेकर मैं तुम्हें बताता हूँ।”

नीलिमा अपने केबिन में आकर बैठ गई। करीब एक घंटे के अंदर उसकी मेज पर दो लिफाफे पड़े थे। एक में उसे नौकरी से निकाले जाने की सूचना थी, दूसरे में उसका तीन महीने का वेतन था।

हतप्रभ नीलिमा ने इंटरकाम पर बॉस से मिलना चाहा तो उन्होंने मिलने से मना कर दिया।

नीलिमा थके कदमों से आफिस से बाहर आई तो उसे दुनिया अंधेरी दिख रही थी। घर आकर भी उसने किसी से कुछ नहीं कहा। अपनी नौकरी छूटने की बात भी उसने मम्मी को नहीं बताई। पैसे की चिन्ता नहीं थी क्योंकि तीन महीने का वेतन उसके पास था। फिर भी उसे मालुम था कि नौकरी छोड़ने के बाद भी बॉस उसे ब्लेकमेल करना नहीं छोड़ेंगे।

उसे पता चल गया था कि उसके पहले की दो सेकेट्रियों ने भी बॉस की ऐसी ही हरकतों से परेशान होकर एक महीने के अंदर ही नौकरी छोड़ी थी। आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था लेकिन वह आत्महत्या नहीं कर सकती थी। उसकी मृत्यु के बाद पोस्टमार्टम में उसके गर्भवती होने का पता चलेगा, तब उसकी और उसके घर वालों की इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी। फिर जिस भाई की शिक्षा के लिये इतने दिन से जिल्लत भरी जिन्दगी बरदाश्त कर रही  थी’ वह तो अधूरी ही रह जायेगी | बिना सोंचे समझे कोई कदम ऐसा नहीं उठाना है जिससे उसके भाई या माँ पर कोई आँच आये|

दूसरे दिन भी वह नियत समय पर ही घर से निकली ताकि मम्मी को कुछ पता न चले। जाकर एक पार्क में बैठकर सोंचने लगी। क्या करे, क्या सुकन्या से बात करे लेकिन सुकन्या तो चुप बैठेगी नहीं।.....नहीं ....उससे बात करना ठीक नहीं है।

अचानक उसने निर्णय ले लिया कि सबसे पहले उसे डाक्टर से मिलकर अपने अंदर मौजूद बॉस की इस गंदगी से मुक्ति पानी है। वहीं बैठे बैठे उसने दो डाक्टरों से मिलने का समय ले लिया ताकि एक जगह काम न हो पाये तो दूसरी डाक्टर के पास भी आज ही जा सके। पहली डाक्टर ने तो इतनी पूँछताँछ की, लड़कियों के संस्कारों पर इतने उपदेश दिये कि नीलिमा और अधिक परेशान हो गई, दूसरे उसकी शर्त थी कि वह अपने साथ अपने प्रेमी या किसी घरवाले को लेकर आये।

दूसरी डाक्टर बहुत अच्छी थी। उसने नीलिमा से कोई बहस नहीं की। उसने नीलिमा को गर्भपात की दवाइयों के साथ कुछ परामर्श के साथ यह भी बताया कि उसे कम से कम तीन - चार बार उसे  उसके पास आना पड़ेगा।

एक सप्ताह के अंदर ही नीलिमा ने अनचाही समस्या से छुटकारा पा लिया। मम्मी यह तो समझ रही थीं कि नीलिमा किसी बात को लेकर परेशान है, लेकिन जब बार बार पूँछने पर भी उसने केवल इतना कहा कि आफिस की कुछ परेशानी है, जल्दी ही ठीक हो जायेगी तो उन्होंने भी अधिक पूँछना ठीक नहीं समझा।

नीलिमा शारीरिक रूप से ठीक हो रही थी लेकिन मानसिक रूप से और उलझती जा रही थी। मृत्युंजय ने उसे बताया कि एम० बी०ए० के इम्तहान के पहले उसके कालेज में कई कम्पनियॉ आने वाली हैं, शायद इम्तहान के पहले ही कैम्पस सेलेक्शन में उसे नौकरी मिल जाये। नीलिमा के समक्ष अपना निर्णय स्पष्ट हो गया। अब उसके सामने नौकरी की कोई मजबूरी नहीं है। वह जानती थी कि कैम्पस सेलेक्शन में आई कम्पनियों में किसी न किसी में उसके मेधावी भाई को नौकरी अवश्य मिल जायेगी।

अब उसे केवल मृत्युंजय के नौकरी मिलने की प्रतीक्षा थी। उसने मम्मी को बताया कि उसके बॉस एक महीने के लिये विदेश जा रहे हैं, वह भी काम करके बहुत थक गई है, इसलिये कुछ दिन की छुट्टी ले रही है। यही बात उसने फोन पर सुकन्या और मृत्युंजय को भी बताई तो मृत्युंजय ने कहा-” मुझे नौकरी मिल जाये तो तुम छुट्टियों बाद भी मत जाना, सीधे त्यागपत्र दे देना।"

मम्मी तो बहुत खुश हो गईं -”ईश्वर तुम्हारी जैसी बेटी सबको दे। जय ठीक कहता है, अब तुम फिर से अपनी पढ़ाई शुरू कर देना।"

एक बार बॉस ने उसे फोन करके बुलाना चाहा तो उसने कुछ न कहकर बहाना बना दिया -”सर, आपसे अलग होकर कहॉ जाऊॅगी लेकिन डाक्टर ने कुछ दिनों के लिये निर्देश दिये हैं। उसके बाद जैसा आप कहेंगे वैसा करूँगी। ऐसा लगता है कि जैसे अब आप ही मेरी नियति बन गये हैं।”

बॉस ने ठहाका लगाया -”तुम चाहोगी तो तुम्हारी नौकरी फिर तुम्हें मिल जायेगी।"

“स्वस्थ होकर आऊॅगी, तब आप जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा।"

अब घर में रहकर नीलिमा हर वक्त मम्मी को सुख देने का प्रयत्न करती लेकिन मन अंदर से रोता रहता। क्या बीतेगी उन पर जब वह नहीं रहेगी? उसकी अच्छी भली जिन्दगी किस मोड़ पर आकर खड़ी हो गई? मम्मी का असीम प्यार दुलार भी उसे अपने निश्चय से विचलित नहीं कर पा रहा था। उसे तो बस मृत्युंजय के एक फोन ही प्रतीक्षा थी।

जल्दी ही वह दिन आ गया जिसका नीलिमा को बेसब्री से इंतजार था। मृत्युंजय ने बताया कि कैम्पस में आई कम्पनियों में से एक में उसे अच्छे पैकेज के साथ नौकरी मिल गई है।

नीलिमा की ऑखों में ऑसू आ गये। आज उसकी तपस्या सार्थक हो गई है। इस दिन के लिये उसने कितना नरक सहा है, लेकिन अब नहीं.......।

“मम्मी, अब नौकरी नहीं करूँगी, मैं कल अपना त्यागपत्र दे देती हूँ ।"

“बिल्कुल, बेटा। अब हमारी सारी मुसीबतें दूर हो गईं हैं, अब तुम्हें नौकरी की जरूरत नहीं है लेकिन तुम्हारे बॉस तो विदेश गये हुये हैं।"

“तो क्या हुआ, मैं कल आफिस जाकर अपना त्यागपत्र बॉस की जगह काम देखने वाले दूसरे आफीसर को दे आऊँगी और आखिरी बार सबसे मिल भी आऊँगी।"

“ठीक है।"

उसने सुकन्या को फोन से बताया तो वह भी बहुत खुश हुई ;-”तुम्हारे उस समय के उचित निर्णय के कारण यह संभव हुआ, अब निश्चिंत होकर पढ़ाई करना।"

दूसरे दिन सारा दिन नीलिमा घर के बाहर रही और शाम को घर आकर मम्मी को बताया कि उसने त्यागपत्र दे दिया है। नीलिमा मन ही मन अपने निश्चय को दोहराती लेकिन मम्मी का सोंचकर मन डगमगा जाता। चौथे दिन दोपहर को उसने कहा -”मम्मी मेरा आज रसगुल्ले और समोसे खाने का मन कर रहा है।"

“ कल बना दूँगी।"

“नहीं, मेरा आज ही खाने का मन है। दो रसगुल्ले और चार समोसे के लिये मेहनत करने की क्या जरूरत? आप ज्यादा से बना लेंगी और मैं कई दिन तक खा खाकर ऊब जाऊॅगी। आप बाजार से ला दीजिये।"

“ठीक है, खाना खा लो फिर मुझे कुछ घरेलू सामान भी बाजार से लाना है। तुम्हारे रसगुल्ले और समोसे लेती आऊॅगी।” मम्मी प्यार से दुलराते हुये हॅस दीं।

उन्हें उस पर बहुत प्यार आ रहा था, न जाने कितने दिन बाद नीलिमा ने इतने प्यार से जिद करके कुछ खाने के लिये कहा था।

मम्मी को लौटने में करीब दो ढ़ाई घंटे लग गये। बहुत देर तक घंटी बजाने और दरवाजा खटखटाने के बाद भी जब नीलिमा ने दरवाजा नहीं खोला तो घबड़ाकर उन्होंने पड़ोसियों को आवाज दी। दरवाजा न खुलना था और न खुला। पुलिस बुलाई गई और दरवाजा तोड़ा गया लेकिन नीलिमा तब तक दुनिया छोड़कर जा चुकी थी और उसके पास ही मेज पर आत्महत्या का नोट पड़ा था जिसमें लिखा था कि अपनी मृत्यु के लिये वह खुद उत्तरदाई है, अपनी मर्जी से दुनिया छोड़कर जा रही है।

बहन की आत्महत्या सुनकर मृत्युंजय आया। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि नीलिमा ने ऐसा क्यों किया?

मृत्युंजय का मन माँ को अकेले छोड़कर जाने का नहीं था, कैसे सूने घर में मॉ को अकेले रहने दे? नीलिमा का दुख मम्मी अकेले कैसे ढ़ो पायेंगी? एक मॉ ही तो बची हैं ।पापा पहले ही छोड़कर जा चुके हैं, नीलिमा तो न जाने क्यों बीच मझधार में छोड़कर चली गई। मृत्युंजय यह सोंचकर काँप उठा कि अकेले घर में छोड़कर जाने से कहीं वह मम्मी को भी न खो दे।

लेकिन मम्मी नहीं मानी -” जो  हो गया लौटेगा नहीं। अपनी पढ़ाई पूरी करके इम्तहान दे ले फिर जहॉ तुम्हारी नौकरी होगी, ले चलना। अभी तुम खुद चार दोस्तों के साथ एक कमरे में रहते हो, मेरे चलने से परेशानी होगी। कुछ दिन मैं नीलू की यादों के सहारे गुजार लूँगी ।"

मृत्युंजय भी जानता था कि मम्मी ठीक कह रही हैं लेकिन उसका अपना मन नहीं मान रहा था। आखिर मॉ ने समझा बुझाकर मृत्युंजय को वापस भेज दिया।

                                          ( 5 )

नीलिमा की अचानक मृत्यु की खबर सुनकर सुकन्या के मम्मी पापा तुरन्त आये लेकिन लाख समझाने पर भी सुकन्या आने को तैयार नहीं हुई।

रोते हुये कहा उसने -”मैं नीलिमा का मृत शरीर देखने नहीं जा सकती। मैं कभी उसे मृत नहीं मानूँगी, मेरे लिये नीलिमा कभी नहीं मर सकती। आप लोग जाइये।"

“बेटा, हम लोगों को कश्यप साहब के यहाँ एक दो दिन रुकना पड़ेगा। तुम अकेले कैसे रहोगी?"

“मैं रह लूँगी, आप लोग जाइये।"

न चाहते हुये भी उन लोगों को सुकन्या को अकेले छोड़कर आना पड़ा । सुकन्या की पढ़ने की मेज पर ही उन दोनों की संयुक्त फोटो रखी थी। मोबाइल में तो न जाने कितनी थीं। उन्हीं को खोलकर देखती रहती -”तुम ऐसे कैसे चली गईं नीलू, वह भी आत्महत्या की तुमने? क्यों? सब तो ठीक हो गया था, जय को नौकरी मिल गई थी, तुम्हारी तपस्या सार्थक हो गई थी, नौकरी की तुम्हारी मजबूरी खतम हो गई थी और तुमने नौकरी छोड़ भी दी थी । तुम तो बहुत खुश थीं फिर तुम्हें आत्महत्या क्यों करनी पड़ी? किसी से न सही मुझे तो बता सकती थीं।"

सुकन्या उसकी तस्वीर से बातें करते करते रो पड़ती -” तुमने मुझे धोखा दिया है, तुम्हें कभी माफ नहीं करुँगी मैं ,ऐसे बीच में छोड़कर तुम कैसे जा सकती हो? चाची, जय और मेरे बारे में जरा भी नहीं सोंचा? मुझे अब भी विश्वास नहीं होता नीलिमा कि तुम अब कभी नहीं मिलोगी, कभी तुम्हारे फोन नहीं आयेंगे, कभी हम पहले की तरह एक दूसरे से घंटों बातें नहीं कर पायेंगे।"

सुकन्या को विश्वास नहीं हो रहा था कि परिस्थितियों की अनुकूलता पर विश्वास करने वाली उसकी नीलिमा आत्महत्या कर सकती है। उसे लग रहा था कि मम्मी पापा के साथ न जाकर उसने बहुत बड़ी गलती कर दी। उसे आखिरी बार नीलिमा से मिलने जाना चाहिये भले ही मृत नीलिमा से लेकिन अब क्या करे, अब तो नीलिमा चिता के रथ पर बैठकर अनंत में विलीन हो गई है और अपने पीछे छोड़ गई है कई अनुत्तरित प्रश्न।

नीलिमा की मृत्यु का चौथा दिन था जब सुकन्या को एक रजिस्टर्ड पत्र मिला, सुकन्या ने हस्ताक्षर करके पत्र ले तो लिया लेकिन पते पर नीलिमा की राइटिंग देखकर चौंक गई -”नीलिमा को गये तो चार दिन हो गये फिर यह पत्र?"

सुकन्या ने सबसे पहले पत्र की तारीख पर नजर डाली तो समझ गई कि यह पत्र नीलिमा ने अपनी मृत्यु से दो दिन पहले लिखकर पोस्ट किया है। रजिस्टर्ड पत्र होने के कारण आज प्राप्त हुआ है।

उस पत्र ने सुकन्या की सारी जिज्ञासाओं, उलझनों, परेशानियों और प्रश्नों का उत्तर दे दिया। नीलिमा ने कुछ नहीं छुपाया, शुरू से आखिरी तक सब बता दिया। पत्र के साथ वो तस्वीरें भी थीं जिसके माध्यम से बॉस उसे ब्लेकमेल करते थे।

सुकन्या का दिल बैठने लगा, इतनी मानसिक यंत्रणा सहकर भी उसने अपने परिवार की नाव मझधार में नहीं छोड़ी। जय की नौकरी लगने तक सब सहती रही और अंत में सब समेटकर चली गई । कहते हैं कि कलाई पर राखी बॉधकर बहन अपने भाई से अपनी रक्षा और संरक्षता का वचन मॉगती है लेकिन नीलिमा ने तो मृत्युंजय के जीवन और कैरियर के लिये अपना सब कुछ यहॉ तक प्राण भी न्यौछावर कर दिया।

सुकन्या जैसे जैसे पत्र पढ़ती जा रही थी, उसका खून खौलता जा रहा था। उस दिन उसने पूरा दिन कुछ नहीं खाया, मम्मी से फोन पर ज्यादा बात नहीं की। वो भी उसकी स्थिति समझती थीं, इसलिये बार बार अपना ख्याल रखने को कहा। अब सुकन्या को लगा कि उसके मम्मी के साथ न जाने की जिद के पीछे कुदरत का यही संदेश छिपा था कि उसे नीलिमा का यथार्थ पता भी चल जाये और किसी दूसरे को मालुम भी न हो।

सुकन्या को खुद पर गर्व हो आया। उसे याद आ रही थी पत्र की वो पंक्तियॉ -”जीवन में पहली बार तुमसे कुछ छुपाया है मैंने। जानती हूँ कि जीवन भर तुम्हें मेरी आत्महत्या का यह प्रश्न ”क्यों” सताता रहेगा, इसलिये तुम्हें सब बता रही हूँ । कम से कम तुम मुझे गलत नहीं समझोगी, मेरी विवशता समझोगी। पहले बता देती तो मेरे साथ और भी बहुत कुछ बरबाद हो जाता, उसी बरबादी को बचाने के लिये अभी तक चुप भी रही और आत्महत्या भी नहीं की थी ।”

सुकन्या का मस्तिष्क काम नहीं कर रहा था, वह अपनी प्यारी सहेली को इतनी यंत्रणा देने वाले को कभी क्षमा नहीं कर सकती। नीलिमा की यंत्रणा और उसकी मृत्यु का उसके बॉस से बदला लिये बिना वह चैन नहीं लेगी, चाहे इस प्रयत्न में उसकी मृत्यु भले हो जाये।

लेकिन कैसे? किसकी सहायता ले? क्या पुलिस को बता दे? लेकिन पर्याप्त प्रमाण के अभाव में रिश्वत के बल पर बॉस मिo वरदान आहूजा का कुछ नहीं बिगड़ेगा। फिर ..... बॉस के आफिस में जाकर उसे गोली मारकर खुद को गोली मार ले? लेकिन इससे क्या होगा, अपनी जान देकर भी नीलिमा की यंत्रणा का बदला तो ले नहीं पायेगी? मात्र मृत्यु बॉस का दंड नहीं है, उसे तो मृत्यु से भी भयंकर यंत्रणा मिलनी चाहिये। फिर क्या करे....... क्या मृत्युंजय को बता दे? लेकिन क्या वह बर्दाश्त कर पायेगा? कहीं उत्तेजना में गलत कदम उठा लिया तो नीलिमा की सारी तपस्या और बलिदान व्यर्थ हो जायेंगे।

नीलिमा ने केवल उसे अपना रहस्य बताया है तो जो कुछ भी करना है उसे अकेले ही करना है बिना किसी को बताये। नीलिमा ने सिर्फ उस पर विश्वास किया है। नीलिमा तो चली गई, अब सुमन चाची का एकमात्र सहारे मृत्युंजय का कैरियर और जीवन दाँव पर नहीं लगा सकती वह ।

सुकन्या के सामने अपना तीनों का बचपन तैर गया। मृत्युंजय और नीलिमा के साथ बिताये क्षण ऑखों के सामने तैर गये । मृत्युंजय हमेशा उन दोनों की हर काम में सहायता तो करता था लेकिन हमेशा एक कठोर अनुशासन में भी रखता था। इसी  कारण पीठ पीछे दोनों उसका ”हिटलर” कहकर मजाक भी उड़ाती थीं।

उसकी और नीलिमा की सहेलिया एक ही थीं, इसलिये सहेलियों के यहॉ जन्मदिन या ऐसे ही कभी देर तक रुकना हो तो वे दोनों मृत्युंजय के पीछे पड़ जातीं कि वह उन्हें सहेली के घर छोड़ कर भी आये और लेकर भी आये। कालेज का फंक्शन हो या किसी सहेली की शादी, आफत मृत्युंजय पर ही आती थी और मृत्युंजय भी कम खुशामद नहीं करवाता था दोनों से।

“मैं आने के पहले फोन कर दूँगा, मुझे गेट पर खड़ी मिलना तुम लोग। मुझे एक मिनट भी इंतजार न करना पड़े, नहीं तो मैं वापस लौट आऊँगा फिर जैसे मन हो आना ।"

“ ठीक है ,हम लोग तुम्हें बाहर ही मिलेंगे।"

फिर दोनों के घरों से उन दोनों के जाने अनुमति भी उसे ही दिलानी पड़ती -”जाने दीजिये, आप लोग चिन्ता न करें। मैं छोड़ भी आऊँगा और लिवा भी लाऊँगा।"

दोनों को मालुम था कि अगर मृत्युंजय ने मना कर दिया तो उन्हें जाने की इजाजत ही नहीं मिलेगी। इसलिये उसकी खुशामद करनी पड़ती थी।

“पूरे हिटलर है, जरा से काम के लिये कितनी मिन्नत करवाते हैं।"

“यही क्या कम है कि राजी हो जाते हैं, नहीं तो जा भी न पाते। काम निकलवाना हो तो इतना तो करना ही पड़ेगा हमें।"

“हॉ सचमुच, कहते हैं न मतलब पड़ने पर गधे को भी......।"

“अरे, चुप रहो यार, सुन लेंगे तो जायेंगे भी नहीं।” और दोनों की खिलखिलाहट बिखर जाती।

मृत्युंजय बड़ा था और अपनी वरिष्ठता को कायम रखता था। दोनों लड़कियों पर पूरा नियंत्रण रखता था। सुकन्या और नीलिमा उसके   इस कठोर नियंत्रण से कभी कभी बहुत झुंझला जाया करतीं -”सॉस भी लो तो इनको हिसाब देना पड़ता है।"

फिर हँस पड़तीं -”लेकिन वक्त पर काम भी तो वही आते हैं खोटे सिक्के की तरह।"

सुमन का बहुत मन था की नीलिमा की तरह सुकन्या भी मृत्युंजय को राखी बांधे लेकिन कश्यप साहब हमेशा हँसते हुए मना कर देते –“ ईश्वर यदि आवश्यक समझते तो उसे खुद ही भाई देते , यदि नहीं दिया है तो इच्छा| तुम क्यों उनके कम में रूकावट डालती हो ?” शायद उन्होंने कुछ आगे सोंच लिया था |

अक्सर नीलिमा कहती थी -”इतना खराब नहीं है मेरा भाई कि तुम ध्यान ही नहीं देती हो। कितना खुश होता है तुम्हारे आने से। मेरी भाभी बन जाओ, मेरे जैसी ननद मिलेगी नहीं तुम्हें।"

सुकन्या भी हॅसकर कह देती -”तुम्हारे जैसी ननद के लालच में फॅसने वाली नहीं हूँ  मैं। वो हिटलर तो मेरी ओर देखता भी नहीं है, अपना भाई अपने पास रख।”

लेकिन सुकन्या जानती थी कि भले ही अब मृत्युंजय उनका साथ नहीं देता है लेकिन उसे देखकर मृत्युंजय के ऑखों और चेहरे पर आई दमक से अनजान नहीं थी वो। इसीलिये मृत्युंजय के लिये हमेशा उसके मन में एक कोमल कोना बना रहा। मन ही मन प्यार करती थी उसे।

अपना कर्त्तव्य निश्चित किया उसने। मम्मी पापा के लौट के आने के बाद उसने उनसे कहा कि वह कुछ दिन के लिये सुमन चाची के पास जाकर रहना चाहती है, जिससे उनसे नीलिमा का दुख बॉट सके। घर में किसी को कोई एतराज नहीं था।

सुकन्या के आने से सुमन को लगा कि जैसे उनके जलते जख्मों पर किसी ने मरहम रख दिया हो। मृत्युंजय ने भी फोन पर सुकन्या को धन्यवाद दिया -”इम्तहान होने तक मैं मम्मी के लिये बहुत परेशान था, तुमने मेरी चिन्ता दूर कर दी। तुम ऐसे समय मम्मी के पास आई हो कि मैं तुम्हारा कृतज्ञ हो गया।"

“जय, इस तरह कहकर मुझे पराया क्यों कर रहे हो? क्या मैं इस परिवार का हिस्सा नहीं हूँ ? तुम चिन्ता न करो, मैं चाची का पूरा ध्यान रखूँगी। अपनी पढ़ाई और कैरियर पर ध्यान दो। नीलिमा की यही इच्छा थी। शायद तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिये नीलिमा ने पढ़ाई छोड़कर नौकरी की थी।"

मृत्युंजय फोन पर ही रो पड़ा -”हॉ जानता हूँ तभी तो समझ में नहीं आता कि उसने आत्महत्या क्यों कर ली? अब तो सब ठीक हो गया था। कहीं प्यार वगैरह .......।”कहते कहते रुक गया मृत्युंजय।

“नहीं जय, नीलिमा की जिन्दगी में कोई नहीं था।"

“फिर.........।"

“भूल जाओ जय। जो हो गया वह लौटेगा नहीं, अब तुम्हारा कैरियर ही उसे सच्ची श्रद्धांजलि है।"

यहॉ आकर उसकी सोंच को एक दिशा मिलनी शुरू हो गई। उसने नीलिमा के आफिस में फोन किया तो उसे पता चला कि आफिस में सेकेट्री की जगह के लिये इंटरव्यू तो लिया गया है लेकिन अभी तक बॉस को कोई लड़की उचित नहीं लग रही है।

दूसरे दिन सुकन्या नीलिमा के आफिस गई। वहॉ उसने रिसेप्शनिस्ट से बहुत विनती करके कहा -”मुझे एक बार साहब से मिल लेने दीजिये, शायद मेरी किस्मत साथ दे जाये।"

“आप मेरी बात समझने की कोशिश कीजिये, बॉस इस तरह बिना पहले से समय लिये किसी से नहीं मिलते। जब रिक्त स्थान का विज्ञापन प्रकाशित हो तब आप भी आवेदन कीजियेगा।"

लेकिन सुकन्या नहीं मानी, वह वहीं रिसेप्शनिस्ट के पास कुर्सी पर बैठ गई -”आप आज इस कुर्सी पर हैं लेकिन कभी तो आप भी नौकरी के लिये भटक रहीं होंगी, स्त्री होकर भी आप मेरी सहायता नहीं करना चाहती हैं। मैं आपसे किसी प्रकार की सिफारिश के लिये नहीं कह रही, बस एक बार मुझे बाँस  के पास भेज दीजिये, आगे मेरी किस्मत ।"

“मैं आपकी सहायता करना तो चाहती हूँ  लेकिन मेरी भी मजबूरी है। अच्छा ठीक है, आप यहीं रूकिये ।बाँस लंच समय में इधर से ही निकलेंगे, उस समय मैं कोशिश करूँगी, अगर बॉस का मूड सही हुआ तो ठीक है, वरना मुझे डॉट पड़ जायेगी।"

“आपकी शुक्रगुजार रहूँगी ।"

लंच के समय जब बॉस रिसेप्शनिस्ट के सामने से होकर गुजरे तो एक नये चेहरे को देखकर थोड़ा ठिठक गये। तभी रिसेप्शनिस्ट को खड़े होते देख सुकन्या भी उठकर खड़ी हो गई। रिसेप्शनिस्ट ने बॉस को अभिवादन करते हुये कहा - सर, यह लड़की सुबह से आपसे मिलने के लिये बैठी है, मेरे मना करने के बाद भी नहीं मानती।"

बॉस ने उसे गौर से देखा, इस समय वह गहरे गले का बिना बाहों वाला टाप और जीन्स पहने थी -”लंच के बाद इसे मेरे पास भेज देना।"

बॉस चले गये तो उस रिसेप्शनिस्ट ने सुकन्या से कहा -”अभी ज्यादा उम्मीद मत पालना, बॉस का कोई ठीक नहीं है।"

“कोई बात नहीं, आपने मेरे लिये जो किया, वही बहुत है।"

लंच के बाद जब सुकन्या बॉस के पास गई तो पहले तो वो उसे ऑखों से तौलते रहे, फिर पूँछा -” हाँ, बोलिये क्यों मिलना चाहती थीं आप मुझसे?"

सुकन्या ने जब बताया कि वह सेकेट्री की नौकरी के लिये आई है तो उन्होंने कहा -”सेकेट्री का मतलब व्यक्तिगत सहायक भी होता है। क्या तुम जानती हो कि सेकेट्री और व्यक्तिगत सहायक का कार्य क्या होता है?"

“जी सर, आप जो कहेंगे मैं करुँगी। आपको कभी शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा।"

“आपके पास न अधिक शैक्षिक योग्यता है और न कोई अनुभव। आपको यह नौकरी कैसे दी जा सकती है जबकि हमें अधिक शैक्षिक योग्यता और अनुभव वाले कर्मचारी आसानी से मिल रहे हैं।"

“सब जगह से निराश होकर आपके पास आई हूँ , आप मुझे निराश न करिये। अगर हर व्यक्ति यही कहेगा तो अनुभव आयेगा कहॉ से?"

फिर उसने आगे बढ़कर बॉस के हाथ पर अपना हाथ रखकर हटा लिया और बहुत मिन्नत भरे शब्दों में कहा -”सर, मैंने सुना है कि आप मेहनती और ईमानदार व्यक्ति को अवसर देते हैं। मुझे भी एक अवसर देकर देखिये, अगर मैं आपको संतुष्ट न कर सकूँ तो आप मुझे तुरन्त नौकरी से निकाल दीजियेगा, मैं कुछ नहीं कहूँगी|"

“ठीक है, मुझे सोंचने का अवसर दो। अपना फोन नम्बर दे दो। तुम्हें सूचित कर दिया जायेगा।"

सुकन्या ने अपना नम्बर दे दिया। दूसरे दिन सुकन्या के पास फोन आ गया कि वह आकर अपना नियुक्ति पत्र ले ले, उसे नौकरी मिल चुकी थी। सुकन्या की योजना का प्रथम चरण पूरा हुआ।

अब उसने अपने पापा को फोन किया -”सुमन चाची बहुत परेशान हैं और मैं चाची के पास कुछ दिन और रहना चाहती हूॅ।"

“लेकिन तुम्हारी पढ़ाई....... ।'

“मैं इस साल पढ़ाई नहीं कर पाऊॅगी, आप लोग समझ सकते हैं कि मेरी क्या स्थिति है? चाची के पास रहकर मुझे बहुत तसल्ली मिल रही है।"

“ठीक है, मैं हर महीने तुम्हारे लिये पैसे भेजता रहूँगा जिससे उन्हें बोझ न महसूस हो।"

“नहीं पापा, मुझे और चाची को नीलिमा की यादों से बाहर आना है इसलिये मैंने अपने लिये नौकरी ढूंढ ली है। खुद भी व्यस्त रहूँगी  और अपने तमाम कामों से चाची को भी व्यस्त रखूँगी ।"

फिर उसने पापा को एक दूसरी कम्पनी का नाम और वेतन बता दिया, वह जानती थी कि पापा को नीलिमा की कम्पनी का नाम मालुम है। यही नाम उसने सुमन चाची को भी बताया। बड़ी मुश्किल से मम्मी पापा राजी हुये -” तुम्हें जितने दिन रहना है, रहो। नौकरी की क्या जरूरत है?"

“जरूरत है मम्मी। कमबख्त नीलिमा हर वक्त याद आती है इसलिये अपने को व्यस्त रखना जरूरी है।"

सुमन जी को पता चला तो वो खुश हो गईं, उन्हें विश्वास हो गया कि अब सुकन्या ज्यादा दिन उसके पास रहेगी।

सुकन्या आफिस के काम से अधिक बॉस वरदान आहूजा के व्यक्तिगत कार्यों का अधिक ख्याल रखने लगी, कैसे कपड़े पहनने हैं , कहाँ और किसके साथ  जाना है इससे बॉस अधिक खुश रहते थे। बॉस को कब कहॉ क्या करना है, किसके साथ मीटिंग है -  यह तो उसका कार्य था ही लेकिन सुकन्या ने तो धीरे धीरे व्यक्तिगत जीवन में दखल देना शुरू कर दिया।

वरदान की गलत हरकतों के लिये उसने न कभी रोका और न ही कुछ कहा बल्कि ऐसे समय वह हल्के से मुस्करा देती जिससे वरदान को बढ़ावा मिलता। कभी सुकन्या खुद बॉस वरदान को गले लगा लेती फिर अगले ही क्षण ”सारी ” कहकर पीछे हट जाती।

पहले बॉस लंच के लिये कैन्टीन या बाहर जाया करते थो लेकिन अब वो लंच के लिये बाहर नहीं जाते थे बल्कि अब उनका और सुकन्या का लंच आफिस में ही आने लगा। बॉस और सुकन्या साथ ही लंच करने लगे। कई बार आफिस के लोगों ने उन दोनों को एक दूसरे को अपने हाथों से खाना खिलाते देखा। इतनी जल्दी बॉस और सुकन्या के गहराते सम्बन्ध से सब हैरान थे। ऐसा तो कभी नहीं हुआ था। सुकन्या के हिस्से के आफिस के सारे काम दूसरों को सौंप दिये जाते और सुकन्या को लेकर बॉस पूरा दिन मीटिंग के बहाने गायब रहने लगे।

अब सुकन्या को लगने लगा कि इतने से काम नहीं चलेगा तो एक दिन उसने वरदान से कहा -”सर, मेरा घर यहाँ से बहुत दूर है, आने जाने में ही मेरा बहुत समय बरबाद हो जाता है। उस पर मेरी मकान मालकिन की तमाम पाबन्दियों ने मेरा जीना हराम कर दिया है। घर आने में दस बजे से देर नहीं होनी चाहिये, वरना गेट नहीं खुलेगा। मेरा कोई पुरुष मित्र घर नहीं आ सकता। मैं तो तंग आ गई हूँ , कहाँ तक हिसाब दूँ? इसीलिये आपके कहने के बावजूद मैं रुक नहीं पाती। अगर आप मेरे रहने की व्यवस्था कर दें तो मैं आपकी आभारी रहूँगी ।"

“ठीक है, मैं एक दो ब्रोकर से बात करके तुम्हें मकान दिलवा देता हूँ ।”वरदान खुश था कि अब वह सुकन्या को रात देर तक रोक सकेगा। उसके घर भी  जा सकेगा।

बहुत फ्लैट दिखाये ब्रोकर ने लेकिन कोई सुकन्या को तो कोई वरदान को पसंद ही नहीं आया। आखिर हारकर ब्रोकर ने कहा -”सर, जैसा फ्लैट आप लोग चाहते हैं, वैसा एक फ्लैट है तो लेकिन वह किराये पर नहीं मिल सकता, उसके मालिक उसे बेंचना चाहते हैं अगर आप इच्छुक हों तो मैं बात करवा सकता हूँ।"

“ठीक है, तुम पहले दिखाओ। मैडम को पसंद आ गया तो सोचेंगे।"

दूसरे दिन ब्रोकर उन्हें पूर्ण सुसज्जित फ्लैट में ले गया -”देख लीजिये, आपको इससे अच्छा घर मिलेगा नहीं।"

“तुम्हें पसंद है?”वरदान ने सुकन्या से पूँछा।

“पसंद तो बहुत है लेकिन मेरे पास ........।"

“बस, आगे कुछ नहीं।” फिर उन्होने ब्रोकर से कहा कि हम विचार करके बतायेंगे।

सुकन्या ने फ्लैट खरीदने में अनिच्छा दिखाई -”मेरे पास इतने पैसे कहाँ हैं कि मैं इतना मंहगा फ्लैट खरीद सकूँ। रहने दीजिये, मैं जैसे रह रही हूँ वैसे ही ठीक है।"

“तुम पैसे की चिन्ता क्यों कर रही हो? अगर तुम्हें पसंद है तो समझो फ्लैट तुम्हारा हुआ। कैसे, यह सोंचना मेरा काम है। तुम मेरा इतना ख्याल रखती हो तो मेरा भी तो कुछ फर्ज है।"

“मैं तो आपको प्यार करती हूँ  इसलिये.........। तीर छोड़कर जान बूझकर चुप हो गई।

“क्या, जरा फिर से कहना, मैंने ठीक से सुना नहीं। ”वरदान के चेहरे पर मुस्कान छा गई।

“आप सब कुछ जानते हैं, फिर भी अनजान बनते हैं।” वरदान ने उसे अपने समीप खींच लिया। अधर से अधर मिल गये। सुकन्या ने ऑखें बंद कर ली, उसका रोम रोम घृणा से तड़प उठा लेकिन अपनी नीलिमा की मृत्यु और यंत्रणा का बदला लेने के लिये तो उसे वेश्या बनना भी स्वीकार है।

“फिर अब कोई बहस नहीं, हम यह फ्लैट खरीद रहे हैं जहाँ शान्ति के कुछ पल आराम से बिता सकें।"

सुकन्या ने सिर अपना झुका लिया -” जब आपने फैसला ले ही लिया है तो मैं क्या कह सकती हूँ ?"

वरदान ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया - खूबसूरत चेहरों पर उदासी अच्छी नहीं लगती और तुम तो बहुत सुंदर हो।"

सुकन्या ने सुमन को बताया कि उसे आफिस की ओर से फ्लैट मिलने वाला है तो उन्हें अच्छा नहीं लगा।

नीलिमा के अभाव में उन्हें सुकन्या से बहुत लगाव हो गया था -” मैं आने जाने में बहुत थक जाती हूँ  तो मेरे पास प्रतियोगिता परीक्षाओं की पढ़ाई के लिये समय ही नहीं बचता है।"

“यह बात तो है। नीलू भी बहुत थक जाती थी। लेकिन बेटा नौकरी की क्या जरूरत है? वापस लौट जाओ और अपनी पढ़ाई करो नीलू तो अब लौटकर आयेगी नहीं, मैं किसी तरह रह लूँगी।"

“अगर नौकरी नहीं होगी तो मम्मी मुझे वापस बुला लेंगी और मैं आपको छोड़कर जाना नहीं चाहती। इस शहर में रहूँगी  तो मुझे तसल्ली रहेगी। जब आपको जरूरत होगी, एक फोन करना आ जाऊॅगी। छुट्टी के दिन तो आपके हाथ का खाना खाने आऊॅगी ही। आप ढ़ेर सारा नाश्ता बनाकर दे देना जिससे एक सप्ताह मेरा उससे काम चल सके। नीलिमा नहीं है लेकिन आपकी यह बेटी अभी जिन्दा है। आखिर मेरा भी फर्ज है।"

दोनों की ऑखों से प्रेम और ममता के साथ नीलिमा की यादों के भी ऑसू गिरने लगे।

“लेकिन आपको मेरी एक बात माननी होगी।"

“क्या बेटा।"

“मम्मी पापा को यह बात पता नहीं चलनी चाहिये कि मुझे फ्लैट मिल गया वरना वो लोग मुझे एक दिन भी यहॉ रहने नहीं देंगे। ”सुकन्या ने उनके गले में बॉहें डाल दी -”मेरे लिये इतना झूठ तो बोलना ही पड़ेगा।

जब वरदान ने  सुकन्या के नाम से फ्लैट खरीदा तो वह दिखावे के लिये मना करने लगी -”मेरे नाम से नहीं अपने नाम से लीजिये जिससे जब आप मुझे कभी नौकरी से निकाल दें तो आपकी सम्पत्ति आपके पास रहे। मैं इसमें एक किरायेदार की हैसियत से रहूँगी और हर महीने अपने वेतन से आपको किराया दे दिया करूँगी।"

“मुझे प्यार भी करती हो और इतना संदेह भी करती हो? तुम्हारा यही स्वाभिमान और खुद्दारी तो मुझे अच्छी लगती है।”वरदान मुस्करा दिया -”अब तो यह फ्लैट मैं तुम्हारे नाम से ही खरीदूँगा जिससे कभी रुद्रा मुझे अपने घर से निकाल दे तो तुम्हारी बॉहों में पनाह पा सकूँ। तुम इस फ्लैट की मालकिन रहोगी, कोई इसे तुमसे छीन नहीं पायेगा।"

“कभी आपको यह न लगे कि मैं आपसे पैसे के लिये प्यार करती हूँ तो .......।”सुकन्या की ऑखों में नीलिमा को याद करके ऑसू आ गये -” उस दिन तो मैं मर ही जाऊँगी।"

“कैसी पागलों जैसी बातें करती हो? मैं तुम पर संदेह कैसे कर सकता हूँ?” वरदान ने उसे गले से लगा लिया।

फ्लैट के साथ वरदान ने सुकन्या को नई कार भी खरीदकर दी। वह बहुत खुश था लेकिन सुकन्या बहुत उदास दिख रही थी -”क्या बात है, आज खुशी के अवसर पर तुम इतनी उदास क्यों हो?"

“आप से मना करती हूँ तो आप मानते नहीं हैं लेकिन मैं सोंच रही हूँ  कि क्या करूँगी इस इतने बड़े फ्लैट का, रहना तो मुझे अकेले ही है। आपके पास तो पत्नी है, बच्चे हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा है मेरे पास अकेलेपन के सिवा कुछ नहीं है।” सुकन्या फूट फूटकर रो पड़ी।

“इतना भावुक होने से कैसे काम चलेगा?”वरदान ने उसे अंक में समेट लिया।

“आप तो बहुत अच्छे हैं, मेरा बहुत ख्याल भी रखते हैं और मुझे प्यार भी करते हैं लेकिन क्या करूँ ? कभी कभी मन बहुत घबड़ाने लगता है।"

“बेकार की बातें अधिक मत सोंचा करो, तुम्हारी सुंदरता के लिये हानिकारक है।” सुकन्या मुस्करा दी लेकिन कुछ बोली नहीं।

“लेकिन तुम मेरा बिल्कुल ख्याल नहीं रखती।”वरदान ने रहस्य भरे स्वर में मुस्कराते हुये कहा।

“आप यह क्या कह रहे हैं? मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ ।"

“दिन पर दिन मेरी प्यास तो बढ़ाती जा रही हो लेकिन उसे बुझाने का कोई प्रबन्ध नहीं करती। कितने बार कहा कि मेरे साथ टूर पर चलो लेकिन तुम मना कर देती हो। अब मुझसे और सब्र नहीं होता।"

सुकन्या ने अपनी दोनों बाँहें वरदान के गले में डाल दी -” अब मुझसे ही कहाँ सब्र होता है लेकिन यह सोचकर रुक जाती हूँ  कि आपकी पत्नी और बच्चों के साथ विश्वासघात है यह। प्यार का अर्थ मात्र दैहिक नहीं है आपसे मुझे इतना ही मिलता रहेगा तो मैं सारी जिन्दगी आपके नाम के सहारे काट लूँगी। मुझे आपसे इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये।"

वरदान से उसे गोद में खींच लिया और उस पर चुम्बनों की वर्षा कर दी -”लेकिन मुझे तो तुमसे सब कुछ चाहिये। रुद्रा ने ही तृप्त किया होता तो मैं क्यों भटकता? उसे मेरी परवाह ही नहीं है। अलग कमरे हैं हमारे, एक छत के नीचे रहकर पति पत्नी होने का दिखावा करते हैं हम। तुमने मुझे जो दिया है वह रुद्रा से कभी मिला ही नहीं।” साफ झूठ बोल रहा था वह लेकिन खुद नहीं जानता था कि वह सुकन्या के चंगुल में बुरी तरह फॅसता जा रहा है।

वरदान कई दिन तक सोंचता रहा था कि सुकन्या फ्लैट में आने के बाद खुद उससे आने के लिये कहेगी। वह सोंच रहा था कि सुकन्या को उसने अपने प्यार के धोखे में फॅसा लिया है लेकिन उसे क्या पता कि शिकारी खुद शिकार हो गया है।

जब कई दिन तक सुकन्या ने इस संबंध में कोई बात नहीं की तो उसने खुद सुकन्या से पूँछा- ”फ्लैट लिये इतने दिन हो गये,अभी तक तुमने उसमे रहना शुरू नहीं किया । अब अपने फ्लैट में जल्दी से आओ, अब क्या बात है?”

“सर.......।"

“पहले तो तुम ”सर” कहना छोड़ो। कब तक सेकेट्री बनी रहोगी? चलो पहले मेरा नाम लेकर बोलो फिर कुछ बात सुनूँगा ।"

“लेकिन .…... अगर नाम लूँगी तो आप को “तुम” भी कहना पड़ेगा। नहीं ..... मैं यह नहीं कर  सकती |"

“फिर आज से मेरी तुम्हारी बोलचाल बन्द....।” वरदान ने नकली नाराजगी दिखाई| वह हल्के से  मुस्करा रहा था।

सुकन्या ने लजाते हुये वरदान का नाम ले दिया तो वरदान ने उसे अपने से लिपटाते हुए कहा  -” अब  हमेशा नाम लेकर ही  बोलना। बताओ क्या समस्या है?"

“मैं बहुत असमंजस में हूँ । कभी सोंचती हूँ कि नौकरी छोड़ दूँ  लेकिन तुम्हारे बिना मैं रह भी नहीं सकती।” सुकन्या की ऑखों से ऑसू गिरने लगे।

“रह तो मैं भी तुम्हारे बिना नहीं सकता।"

“तो रुद्रा जी.......।"

“मैं कोई रास्ता निकालूँगा , तुम चिन्ता मत करो। अभी तुम अपने फ्लैट में आ जाओ।"

“ठीक है लेकिन मेरी एक ख्वाहिश है, तुम्हें उसे पूरी करना पड़ेगा।"

“बोलो।"

“जिस दिन मैं फ्लैट में जाऊॅगी उस रात तुम मेरे पास रहोगे। अपने सपनों के घर में पहली रात मैं अकेली नहीं रहूँगी ।"

वरदान बेहद खुश हो गया। सुकन्या खुद आमंत्रण दे रही है। अभी तक उसे सुकन्या से वह नहीं मिल पाया था जो वह चाहता था।

सुकन्या ने दो दिन की छुट्टी ली -” परसों शाम को तुम आना। उसी दिन सुबह मैं अपने घर में प्रवेश करूँगी और वह शाम हमारे लिये ऐसी यादगार शाम होगी जिसे हम कभी नहीं भूल पायेंगे।"

“मैं दिन में आ जाता हूँ , मेरे साथ नये घर में प्रवेश करना।"

“नहीं वरदान, दो दिन मुझे तैयारी के लिये चाहिये। तुम्हारे लिये वह रात पता नहीं कैसी हो लेकिन मेरे लिये विशेष होगी।"

“मेरे लिये भी विशेष ही होगी।” और उसने सुकन्या के कपोल थपथपा दिये।

                                          ( 6 )

आखिर वह दिन आ गया जिसकी वरदान से अधिक सुकन्या को प्रतीक्षा थी। सुमन जी को समझाकर सुकन्या अपने फ्लैट में आ गई लेकिन आने के पहले अपनी योजना को साकार रूप देने के लिये कमरे में इस तरह छुपाकर दो आटोमेटिक ऐसे कैमरे रख दिये जो निर्धारित समय के बाद बिना छुये या बटन दबाये काम करने लगते थे। बेडरूम का सारा दृश्य अपने आप उन कैमरों में कैद हो सकता था।

वरदान का दिन भर खुशी के कारण काम में मन नहीं लग रहा था। रुद्रा से उसने सुबह ही कह दिया था कि वह रात को घर नहीं आ पायेगा क्योंकि उसे काम से बाहर जाना है, कल उधर से ही आफिस चला जायेगा।

शाम को जब वरदान बड़ा सा उपहार लेकर सुकन्या के फ्लैट पर पहुँचा तो सुकन्या ने मृदु मुस्कान से उसका स्वागत करते हुये कहा - ” मेरे घर में कदम  रखने वाले पहले अतिथि का बहुत बहुत स्वागत है।” वरदान ने उसे हॅसकर बॉहों में भर लिया।

“इसमें क्या है?”सुकन्या ने उपहार लेते हुये कहा।

“अन्दर चलकर देखना।"

वरदान ने स्वयं अपने हाथों से उपहार का डिब्बा खोलकर सुकन्या को दिखाया। हीरों के हार का पूरा सेट देखकर उसने ऑखें बन्द कर ली और मन ही मन कहा -”मुझे शक्ति दे नीलू। मुझे आशीर्वाद दे आज की सफलता के लिये।"

“क्या बात है, पसन्द नहीं आया क्या?"

“बहुत सुन्दर है लेकिन मैंने तुम्हें मना किया था कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। तुम इसे ले जाकर रुद्रा जी को दे देना।”  जानती थी कि जितना वह मना करेगी उतना ही वरदान पर जुनून सवार होता जायेगा। वह अधिक से अधिक उस पर लुटाता जायेगा।

“यह तो तुम्हारे गृह प्रवेश का उपहार है, इसके लिये कैसे मना कर सकती हो तुम?”

बहुत मुश्किल से सुकन्या उपहार लेने के लिये मानी तो वरदान खुश हो गया फिर वरदान ने अपने हाथों से हार सुकन्या को पहनाकर प्यार से उसे बॉहों में भरकर गर्दन पर चूम लिया। सुकन्या ने प्यार से उसे हटाया और हँसते हुये किचन में चली गई। किचन में आकर उसने अपने क्रोध और ऑसुओं पर नियंत्रण किया।

फिर कुछ देर बाद नाश्ता और काफी ले आई। दोनों ने नाश्ता किया और बातें करने लगे।

रात गहराने लगी तो सुकन्या ”अभी आती हूँ ” कहकर अंदर चली गई और जब लौटी तो ट्रे को देखकर वरदान का मन खुश हो गया। उसके मनपसंद ब्राण्ड की शराब सामने थी। वरदान ने सुकन्या की ओर देखा -”इतनी समझदार पत्नियॉ क्यों नहीं होती?"

सुकन्या का चेहरा उतर गया -” मैंने तो आज की रात यादगार बनाने के लिये तुम्हें बुलाया था लेकिन अगर तुम्हें रुद्रा जी की याद आ रही है तो तुम इसी वक्त जा सकते हो।"

“तुम सामने हो तो किसी की याद कैसे आ सकती है?”वरदान ने उसे गोद में खींच लिया। वह उतावला हो रहा था लेकिन सुकन्या अलग बैठकर पैग बनाने लगी -”पूरी रात पड़ी है, जरा सुरूर तो आने दो।"

वरदान का पैग बनाने के बाद जब उसने अपना पेग बनाया तो वरदान दंग रह गया -”तुम तो पीती नहीं हो।” लेकिन सुकन्या ने पैग उठाकर कहा -”आज की यादगार शाम के नाम।"

वरदान बेहद खुश हुआ -”तुम बहुत समझदार हो।” वैसे उसने वरदान का साथ देने के लिये बियर पीना तो पहले ही शुरू कर दिया था लेकिन शराब आज पहली बार पी रही थी।

उसका लक्ष्य उसके सामने था, उसके लिये वह कुछ भी करने को तैयार थी। अपने गिलास में थोड़ी सी डालकर वह पूरा गिलास पानी और सोडा से भर लेती थी जबकि वरदान को अधिक से अधिक पिलाती जा रही थी और खुद नशे में होने का नाटक करती जिससे वरदान आगे बढ़े और उत्तेजित हो।

बहुत थोड़ा सा खाना खाया गया फिर सुकन्या ने उसे बेडरूम में भेज दिया -”तुम चलो, मैं यह सब किचन में रखकर आती हूँ ।"

थोड़ी देर बाद जब वह बेडरूम में गई तो वरदान बेसुध पड़ा था। उसने कैमरों में निर्धारित समय लगा दिया। इसके बाद जैसे ही कैमरे अपना काम करने लगे। उसने अपनी  और वरदान की कई निवस्त्र तस्वीरें खींची। तस्वीरें कुछ इस तरह थीं कि वरदान का चेहरा तो स्पष्ट था लेकिन सुकन्या का चेहरा वरदान के सीने में छुपा हुआ दिख रहा था। सुकन्या के कपड़े और शरीर स्पष्ट दिख रहा था ।तस्वीरें देखकर कोई भी कह सकता था कि यह रत क्रिया में मग्न जोड़े की तस्वीरें हैं।

अपना काम हो जाने के बाद सुकन्या ने कैमरे बंद करके रख दिये और अस्त व्यस्त कपड़े में आकर वरदान के बगल में आकर लेट गई। आज उसे बहुत दिन बाद अच्छी नींद आई थी।

सुबह वरदान उठा तो उसका सिर दर्द कर रहा था, कल रात का उसे कुछ याद नहीं था। बगल में अस्त व्यस्त सुकन्या गहरी नींद में सो रही थी।

वरदान उठकर बाथरूम में गया। वाश बेसिन में अच्छे से मुँह धोकर तौलिये से हाथ और मुँह पोंछते हुये जब दुबारा बेडरूम में आया तो सुकन्या को सोते हुये देखकर मुस्कुरा दिया। आखिर उसने सुकन्या को पा ही लिया। अब पक्षी उसके जाल में केवल छटपटाने के सिवा कुछ नहीं कर सकता | साथ ही वह सोंचने लगा कि यह  चिड़िया तो खुद ही उसके  जाल में आ गई है ,इसलिए इसका संजय के साथ बटवारा नहीं करेगा| प्यार के जाल में फँसी इस चिड़िया का जीवन भर  खुद ही भोग करेगा और जब उड़ने की कोशिश करेगी तो संजय के हवाले करके  वीडियो बना लेगा | अभी तो यह बेवकूफ लडकी खुद उस पर दिलो जान से फ़िदा है |

सुकन्या को उठाया तो उसने वरदान का हाथ पकड़कर फिर उसे बिस्तर पर खींच लिया -”सो जाओ, बहुत रात है।"

“रात नहीं मैडम, नौ बज गये हैं। आफिस चलना है हमें।"

“मैं तो आफिस जाने की स्थिति में ही नहीं हूँ । तुम भी मत जाओ और सो जाओ।"

वरदान ने उसके कपोल थपथपा दिये -” तुम आराम करो, मैं चला जाता हूँ ।"

“वादा करो कि शाम को फिर आओगे?"

“आज तो घर जाना ही पड़ेगा। रुद्रा से एक दिन के लिये कहा था उसे शक नहीं होना चाहिये।“

सुकन्या ने उठकर उसके गले में बॉहें डाल दी -”क्या तुम भी......दो दिन के लिये नहीं .... कह सकते थे ?”

“ मुझे क्या पता था की रात इतनी अच्छी होगी कि एक दिन की और आवश्यकता पड़ेगी |” वरदान ने हँसते हुये कहा|”

“ बिलकुल   भी मन नहीं कर रहा तुम्हें छोड़ने का।"

“ मन तो मेरा भी नहीं कर रहा जाने का लेकिन मजबूरी है।” वरदान के अधर सुकन्या के अधरों से मिल गये। सुकन्या ने कल उसे जो कपड़े उपहार में दिये थे, आज उन्हीं को पहनकर वरदान आफिस गया।

दोनों खुश थे। वरदान अपनी जीत पर और सुकन्या अपनी जीत पर मुस्कराती हुई चुपचाप पड़ी रही। उसकी योजना का प्रथम चरण सकुशल पूरा हो चुका था।

वह जानती थी कि अब वरदान इस भ्रम में रहेगा कि उसने सुकन्या का एक बार भोग कर लिया तो अब हमेशा ही कर सकेगा। यही भ्रम उसे बाँधे रहेगा लेकिन अभी तो योजना का प्रथम चरण ही पूरा हुआ था

फ्लैट खरीदने के बाद वरदान रोज सुकन्या को छोड़ने के बहाने उसके घर जाने लगा सुकन्या उसे कभी काँफी के बहाने  तो कभी खाने के लिये रोक लेती लेकिन जब कभी वरदान आगे बढ़ने का प्रयत्न करता, वह प्यार से रोंक देती -”अभी तुम्हें घर जाना है ना। "

अक्सर वरदान देर से घर पहुँचने लगा, रूद्रा कुछ पूंछती तो वह  काम का बहाना बना देता। अक्सर वरदान घर आकर खाना भी नहीं खाता था । उसने रुद्रा से कह दिया -”तुम खाना खाकर सो जाया करो। हमारी मीटिंग में अक्सर डिनर भी होता है।"

“ अचानक यह कैसा काम हो गया है तुम्हारा कि तुम्हारे पास मेरे और बच्चों के लिये जरा भी समय नहीं है। तुम्हें पता भी है कि बच्चे तुम्हें कितना याद करते हैं।"

“ पता क्यों नहीं ? यह सब तुम्हारे और उन्हीं के लिये तो कर रहा हूँ |” वरदान रुद्रा को  बहला देता और रुद्रा चुप हो जाती।

जब वरदान ने सुकन्या को रुद्रा की यह बात बताई तो उसने वरदान को समझाया कि वह छुट्टी का पूरा दिन अपने परिवार के साथ बिताये जिससे रुद्रा को कोई शक न हो। वरदान मान गया और सुकन्या पूरा दिन नीलिमा के घर में बिताती लेकिन वह  कभी मृत्युंजय से बात नहीं करती थी जब वह आता था तो सुकन्या जाती ही नहीं थी। सुकन्या के कहने से सुमन जी मृत्युंजय की नौकरी लगने के बाद भी मृत्युंजय के साथ जाने के लिये तैयार नहीं हुईं -” मेरे लिये उसने घर, माँ - बाप पढ़ाई सब छोड़ दी है। मैं उसे छोड़कर कैसे जा सकती हूँ ?”

“मम्मी, वो आपके साथ रहती कहाँ  है?”

“तो क्या हुआ, मेरा ख्याल तो पूरा रखती है। दिन में दो बार फोन करती है। जब मौका मिलता है, भागी चली आती है।” मृत्युंजय हारकर अपनी नई नौकरी पर चला गया।

एक बार वह नीलिमा के घर से लौट रही थी तो उसे मेट्रो में एक लड़की मिली, उसने सुकन्या से उसकी कम्पनी का नाम लेकर पूँछा कि क्या वह उस कम्पनी में काम करती है?

“ हाँ , आपको कैसे पता चला?"

“मैंने आपको कई बार मि० आहूजा के साथ देखा है। कभी वो मेरे बॉस हुआ करते थे।"

“तो आपने नौकरी क्यों छोड़ दी?"

“क्योंकि मि० आहूजा की शर्तों पर मैं समझौता नहीं कर पाई।” उस लड़की के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कुराहट थी -”लेकिन लगता है कि तुमने उनकी शर्तों से समझौता कर लिया है, तभी तो बॉस शापिंग मॉल के ज्वैलरी शो रूमों में तुम्हें लेकर जाने लगे हैं।"

“क्या मतलब है तुम्हारा?"

“यह मेरा मोबाइल नम्बर है, जब रोने के लिये कंधे की जरूरत हो तो आ जाना।"

सुकन्या को लगा कि जैसे ईश्वर भी उसकी मदद करना चाहता है। यह लड़की रजनी भी उसकी योजना में काम आ सकती है।

सुकन्या ने वरदान की ऐसी तस्वीरें खींची थी कि उसे चरित्र हीन सिद्ध कर सके लेकिन नीलिमा के साथ किया गया उसका अपना कृत्य उसी के मुँह स्वीकार करवाना था उसे।

इस बार जब वरदान टूर पर जाने लगा तो सुकन्या भी तैयार हो गई -” यह प्यार भी कितना मजबूर कर देता है व्यक्ति को। पहले जब तुम मुझे टूर पर ले जाने के लिये कहते थे तो जानते हो मैं क्यों तुम्हें मना कर देती थी?"

“क्यों?”वरदान के अधरों पर मुस्कराहट थी।

“क्योंकि मैं डरती थी कि कहीं तुम मेरे साथ कुछ गलत हरकत न कर बैठो।"

“तो अब क्या हुआ? वह डर अब कहाँ चला गया?"

“अब बचा ही क्या है मेरे पास जिसके लिये तुमसे डरूं ? अब तो मैं अपना सब कुछ तुम्हें दे चुकी हूँ ।"

“अच्छा!” वरदान ने बनावटी आश्चर्य प्रकट किया -”क्या सचमुच? मुझे तो कुछ याद नहीं। नशे में क्या पता क्या हुआ, मजा तो आया ही नहीं।"

“ठीक है, जब तुम्हें कुछ याद ही नहीं है तो मैं जा रही हूँ  ”सुकन्या ने रूठने का अभिनय किया -” एक लड़की तुम्हारे प्यार और विश्वास में अपने जीवन का कीमती मोती, अपना सर्वस्व तुम्हें सौंप देती है और तुम केवल एक शब्द कहकर सब कुछ नकार देते हो। तुम्हारी नजर में मेरी कोई कीमत ही नहीं है।” सुकन्या सिसकने लगी।

“अरे, रोओ मत” वरदान परेशान हो गया -”मै तो मजाक कर रहा था।"

“मेरा सर्वस्व समर्पण तुम्हारे लिये मजाक है? मैं अब तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी| अब मैं केवल तुम्हारी सेकेट्री बनकर रहूँगी|” इतना कहकर सुकन्या जोर जोर से रोने लगी और रोते हुये ही कहा – “ मैं तो इसलिए तुम्हारे साथ जाना चाहती थी कि मैं अब तुम्हारे बिना नहीं रह सकती| ” बड़ी मुश्किल से वरदान उसे मना पाया।

टूर पर वरदान होटल में एक ही कमरा लेना चाहता था लेकिन सुकन्या ने सावधानी के तौर पर दो कमरे लेने को कहा। दिन भर का कार्य समाप्त हो जाने के बाद वो दोनों फ्रेश होने के लिये अपने अपने कमरों में आ गये। आज सुकन्या को अपनी योजना का दूसरा चरण पूरा करना था। नहाने और फ्रेश होने के बाद वरदान सुकन्या के कमरे में आ गया।

सुकन्या जानती थी कि वरदान को खाना खाने के पहले शराब की आदत पड़ गई है, इस बात के लिये कई बार रुद्रा से बहस भी हुई लेकिन उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता था।

“आज तो हमारी रात बहुत खूबसूरत रहेगी इसलिये खाना जल्दी मॅगा लेना जिससे हम पूरी रात ऐश कर सकें।"

“हॉ, लेकिन तुम्हें तो खाने के पहले कुछ और भी चाहिये।"

“पहले वही मॅगा लो, तुम्हें भी तो चाहिये होगा।”वरदान हॅस पड़ा।

“मेरी आदत तो तुमने खराब कर दी है, वरना मुझे तो इसकी महक से नफरत थी।"

“चलो, मेरी संगत में तुमने एक अच्छी आदत सीख ली है।"

सुकन्या उठ गई, फ्रिज से वरदान की पसंद का ब्राण्ड लाकर मेज पर रख दिया। साथ में सोडा, पानी, बरफ और भी बहुत कुछ।

जब वरदान नशे में पूरी तरह आ गया तब सुकन्या ने अपने मोबाइल का रिकार्ड चालू कर दिया -” मुझसे पहले तुम्हारी सेकेट्री कोई नीलिमा नाम की लड़की थी। आफिस में लोग बता रहे थे कि उसे बिना किसी कारण के नौकरी से निकाल दिया गया था।"

“हॉ, लेकिन उसे बिना कारण नहीं निकाला गया था। वह लड़की सेकेट्री और व्यक्तिगत सहायक का मतलब ही नहीं जानती थी। कई बार सीधे रास्ते से समझाने की कोशिश की लेकिन उस पर तो सती सावित्री बनने का जुनून सवार था।"

“तुम तो बहुत शानदार आदमी हो। सहायता करने वाले, उदार, दयालु और खुले हाथों से देने वाले - ऐसे बॉस तो नसीब वालों को ही मिलते हैं। तुम्हें तो हर लड़की पाना चाहेगी। मैं तो ईश्वर की बहुत कृतज्ञ हूँ  कि मुझे तुम मिले।” सुकन्या वरदान के बगल में बैठी थी और वरदान के एक हाथ में गिलास और दूसरा हाथ सुकन्या के कंधे पर था।

“हर लड़की तुम्हारे जैसी समझदार नहीं होती। मुझे पहली बार तुम जैसी सेकेट्री मिली है, अब मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूँगा।"

“मैं तो नहीं जाऊॅगी लेकिन कहीं तुमने मुझे नीलिमा की तरह निकाल दिया तो क्या करुँगी मैं?"

“तुम तो बहुत अच्छी हो, तुम्हें कैसे निकाल सकता हूॅ? लेकिन तुम्हें आज नीलिमा की बात कहाँ से याद आ गई? तुम्हारा उसका क्या लेना-देना?"

“कुछ नहीं। मेरे लिये तुमसे बढ़कर कुछ नहीं है लेकिन लोग तुम्हारे बारे में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं तो बहुत बुरा लगता है। मैंने सुना है कि नीलिमा गर्भवती थी इसलिये आत्महत्या की थी और उसका संबंध तुमसे जोड़ा जाता है।"

“तुम किसी की बात पर ध्यान मत दिया करो। इतने कम समय में तुमने इतनी उन्नति की और बॉस के करीब आ गई हो इसलिये सभी तुमसे ईर्ष्या करते हैं। नीलिमा ने नौकरी से जाने के बाद आत्महत्या की थी, मेरा उससे कोई लेना-देना नहीं था। उसने मुझसे कहा था कि वह नौकरी नहीं करना चाहती तो मैंने उसे तीन महीने का अतिरिक्त वेतन भी दिलवा दिया था।"

“निश्चित ही बेवकूफ होगी वो जो जिन्दगी का मतलब नहीं समझती थी। ईश्वर ने नारी और पुरुष को एक दैहिक आवश्यकता देकर भेजा है तो उसकी पूर्ति गलत कहॉ है? तुमने उसे समझाया नहीं कि खोखली सड़ी हुई मान्यताओं को ढ़ोते रहने से कुछ नहीं मिलता, बल्कि जीवन बरबाद ही होता है। तुम्हारी तो बातों में जादू है, इतने लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने वाले तुम एक लड़की को समझा नहीं पाये, हार मान ली, मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

सुकन्या ने वरदान के शराब में भीगे होंठ चूम लिये तो खुशी और शराब के दोहरे नशे में वह सब कुछ कहता चला गया, जिसके लिये सुकन्या ने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था, जिसके लिये वह इतने दिन से वरदान की घिनौनी हरकतें सहन कर रही थी।

“ समझ तो वह भी गई थी लेकिन उसे समझाने के लिये मुझे टेढ़ा रास्ता चुनना पड़ा था।” शायद वरदान को शराब से अधिक सुकन्या के समक्ष अपनी शेखी दिखाने का नशा चढ़ गया था। शायद वह सुकन्या को बताना चाहता था कि यदि वह सीधे रास्ते से राजी न हुई होती तो उसे दूसरे रास्ते इस्तेमाल करना अच्छी तरह आता है।

वरदान सब कुछ कहता चला गया कि कैसे नये साल की पार्टी वाले दिन उसने अपने दोस्त संजय सक्सेना से फोन पर सब कुछ समझा दिया और चाय में मिली बेहोशी की दवा के कारण अचेत नीलिमा से जब वरदान ने दुष्कर्म किया तो संजय ने तस्वीरें खींच ली और जब संजय ने अपनी प्यास बुझाई तो वरदान ने। उसके बाद उन तस्वीरों के कारण नीलिमा उसके और संजय की कामेच्छा पूर्ति की कठपुतली बन गई। वो और संजय जब चाहते नीलिमा को आना पड़ता।

सुकन्या का खून खौल रहा था । उसका मन कर रहा था कि या तो वरदान का गला दबा दे या शराब में जहर मिला कर दे दे। सुकन्या ने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया, अभी उसे और भी बहुत कुछ जानना है, और भी बहुत कुछ कहलाना है।

उसने वरदान का सिर अपनी गोद में रख लिया -”वरदान, तुम इतने खतरनाक लगते तो नहीं हो। क्या इसी कारण उसने आत्महत्या की थी? क्या गर्भवती वाली बात सिर्फ अफवाह है?"

“नहीं, अफवाह नहीं है। वह सचमुच एक दिन पेट में बच्चा लेकर मेरे सामने आकर खड़ी हो गई थी कि मुझसे शादी करो। बेवकूफ आजकल की लड़की होकर नहीं जानती थी कि सतर्कता कैसे रखी जाती है? तुरन्त नौकरी से हटाकर बाहर फेंक दिया। अपनी गलती भुगते जाकर, मुझसे क्या लेना-देना था? मरे या जिये।"

“उसके बाद उसने कुछ नहीं किया?"

“डार्लिंग, क्या करती, अपनी ही जान दे दी, मेरा क्या गया?” वरदान ने उसकी गोद में लेटे लेटे सुकन्या के गले में बॉहें डालकर उसे चूम लिया -”उसके बाद मुझे इतनी समझदार, इतनी प्यार करने वाली तुम मिल गई जिसने सेकेट्री और व्यक्तिगत सहायक का मतलब समझा। सच सुकन्या तुमने मुझे जो सुख दिया है वह तो मैंने कभी अपनी पत्नी से भी नहीं पाया है।"

सुकन्या का अब थोड़ा काम ही शेष रह गया था। वह वरदान का सिर तब तक सहलाती रही जब तक वह सो नहीं गया। इसके बाद उसने अपने आटो मैटिक कैमरे से अपनी और वरदान की वैसी ही तस्वीरें खींची जैसी गृह प्रवेश वाले दिन खींची थी लेकिन इस बार सुकन्या का चेहरा स्पष्ट नजर आ रहा था ऐसा लग रहा था कि उसके साथ जबदस्ती की जा रही है, वरदान का हाथ उसके मुँह पर था और वह छटपटा रहे थी ।

सुबह जब वरदान उठा तो सुकन्या कमरे में नहीं थी लेकिन बाथरूम से उसके गुनगुनाने की आवाज आ रही थी। वास्तव में आज वह बहुत खुश थी, उसे वरदान से जो पाना था पा लिया था। थोड़ी देर बाद मुस्कराती हुई सुकन्या आ गई -”क्या बात है, आज बहुत खुश हो।"

सुकन्या बिस्तर पर ही बैठ गई -” इतनी सुंदर रात बिताकर कौन खुश नहीं होगा?”सुकन्या वरदान के ऊपर झुकी तो उसके रेशमी केश वरदान के चेहरे पर छा गये। वरदान ने उसे अंक में भरकर चुम्बनों की बारिश कर दी।

“लेकिन मुझे तो रात का कुछ याद ही नहीं रहता। अगली बार मैं एक  बून्द भी नहीं पियूँगा जिससे मैं तुम्हारी उत्तेजक देह का सुख उठा सकूँ मैं  भी तो देखूँ कि होश में रहते हुये तुम कितना सुख देती हो।"

“ठीक है, अगली बार याद रखना ।"

                                                ( 7 )

टूर से लौटने के बाद सुकन्या के लिये वरदान को बर्दाश्त करना मुश्किल होने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सब कुछ पुलिस को बता दे या इस खेल को और आगे बढ़ाये। या तस्वीरों से वरदान को ब्लैकमेल करके उसकी सारी सम्पत्ति छीनकर उसे दर दर का भिखारी बना दे या सब कुछ ले जाकर उसकी पत्नी रुद्रा के सामने रखकर उसकी बेहद विश्वास करने वाली पत्नी और प्यारे बच्चों के साथ उसका सारा सुख चैन नष्ट कर दे। उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी। उसे लगने लगा कि वह कुछ दिन के लिये वरदान से दूर होकर ही इत्मीनान से कुछ सोंच पायेगी। चिन्ता और परेशानी उसके चेहरे पर स्पष्ट दिख रहे थे -”क्या बात है सुकन्या, कोई परेशानी या समस्या है तो मुझसे कहो।"

“वरदान मम्मी की तबियत खराब है। पापा मम्मी बुला रहे हैं, जबसे आईं हूँ , एक बार भी नहीं जा पाई हूँ । अगर तुम नाराज न हो तो  चार पाँच दिन की छुट्टी चाहिये।"

“तो इसमें परेशानी की क्या बात है? चली जाओ।"

“सच?” सुकन्या खुश हो गई, उसने वरदान के गले में अपनी बाँहें डाल  दीं  -” मैं तो सोंच रही थी कि तुम मना कर दोगे।"

“तुम्हारे बिना मन तो मेरा नहीं लगेगा लेकिन तुम्हें उदास नहीं देख सकता। इसलिये  जल्दी आना।"

“मन तो मेरा भी तुम्हारे बिना नहीं लगेगा लेकिन जाना भी जरूरी है |  मुझे पता नहीं था कि तुम इतने अच्छे हो कि मेरे एक बार कहने से ही मान जाओगे। मैं कैसे तुम्हें शुक्रिया कहूँ ?"

“ मत कहो, जल्दी आना। आने के बाद मैं खुद वसूल लूँगा ।”वरदान ने मुस्कराते हुये कहा ।

“तुम भी.......।”सुकन्या ने शर्माकर वरदान की और देखा तो वह  ठहाका मारकर हॅस दिया।

दूसरे दिन सुकन्या की फ्लाइट थी। वरदान की इच्छा सुकन्या को एयरपोर्ट छोड़ने जाने की थी लेकिन चूँकि फ्लाइट रात की थी इसलिये सुकन्या ने मना कर दिया -”कोई जरूरत नहीं नींद खराब करने की। बेकार में घरवालों को शक का मौका देने की क्या जरूरत? मैं पहुँचते ही तुम्हें मैसेज कर दूँगी ।"

“ अपनी मम्मी की तबियत की भी खबर देना, मुझे चिन्ता लगी रहेगी।"

“ठीक है, तुम फोन मत करना। पता नहीं मेरे पास उस समय कौन हो, मैं खुद समय निकाल कर तुम्हें फोन या मैसेज  करती रहूँगी । अभी मैं पापा - मम्मी को भी कोई शक नहीं होने देना चाहती।"

सुकन्या को एयरपोर्ट तो जाना ही नहीं था वह नीलिमा के घर आ गई। बहुत दिन बाद सुकन्या को देखकर सुमन जी बहुत खुश हुईं -”कितने दिन बाद माँ  के पास आने का समय मिला है? ऑखें पथरा गईं अपनी बिटिया को देखने के लिये।"

“क्या करती चाची, इधर समय ही नहीं मिल पा रहा था इसलिये नहीं आ पाई। अब चार पाँच  दिन आपके पास रहूँगी , खूब सारी बाते करेंगे । खूब खाऊॅगी और खूब सोऊॅगी। थक गई हूँ  काम करते करते।"

यहाँ  आकर जैसे वह वरदान की कैद से आजाद हो गई है। स्वतन्त्रता का एक नया आनन्द उसे आ रहा था। उसे लगने लगा कि अब उसे किसी की सहायता लेनी चाहिये। क्योंकि हो सकता है कि बिना किसी की सहायता के उसने इतनी मुसीबत उठाकर जो कुछ प्राप्त किया है, वह बरबाद हो जाये और वह खुद किसी मुसीबत में न फॅस जाये। अपनी जान की तो उसे चिन्ता नहीं थी लेकिन इकट्ठा किये सबूतों की वह मरकर भी रक्षा करना चाहती थी लेकिन किसकी सहायता ले? कौन है जो इस कार्य में उसकी सहायता कर सकता है? सहायता तो दूर किसी को पता भी चल गया तो बना बनाया काम बिगड़ जायेगा क्योंकि अभी तक उसने जो भी किया है, उससे वरदान अनभिज्ञ है लेकिन अब उसे वरदान के सामने आकर चोंट करनी है इसलिये अब बहुत सतर्कता की आवश्यकता है। इसलिये बहुत सोंच विचार कर उसने मृत्युंजय को फोन किया। हालांकि जानती थी कि मृत्युंजय बहुत नाराज होगा। यहाँ  आने के बाद उसने केवल एक बार मृत्युंजय से बात की थी, यहाँ  तक उसकी नौकरी की बधाई भी नहीं दी। लेकिन मृत्युंजय के अतिरिक्त न तो किसी को कुछ बता सकती है और न ही किसी दूसरे की सहायता ही ले सकती है।

“हाय जय, कैसे हो?"

“बिल्कुल ठीक हूँ , बोलो कैसे याद किया? ”मृत्युंजय के स्वर की रुखाई स्पष्ट थी।

“मैं तुम्हारी नौकरी की बधाई नहीं दे पाई थी इसलिये.......।

“ठीक है, अब दे दी है ना, अब फोन बंद करो।"

“जय, मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये। क्या किसी भी तरह तुम एक दिन के लिये आ सकते हो? मैं आजकल चाची के पास हूँ ।"

“क्यों तुम्हारे सब चाहने वाले मर गये हैं क्या जो तुम्हें मेरी जरूरत पड़ गई? क्या मुझे पता नहीं कि तुम क्या कर रही हो? तुम क्या सोचती हो कि मैं दूर हूँ  तो मुझे कुछ पता नहीं है? नीलिमा जिस कम्पनी में काम करती थी तुम्हें नौकरी करने के लिये वही कम्पनी मिली थी? क्या मि० वरदान आहूजा की मेहरबानियॉ कम पड़ गई हैं जो तुम्हें यह अदना सा नाचीज मृत्युंजय याद आ गया? मुझे तुमसे कोई लेना देना नहीं है, जो करना है करो। मुझे क्यों परेशान कर रही हो?”इतना कहकर उसने फोन काट दिया।

सुकन्या ने दुबारा फोन मिलाया और बिना मृत्युंजय की बात सुने गंभीर स्वर में कहा -”फोन मत काटना जय। मैंने तुम्हारी बात सुनी है इसलिये मेरी बात सुन लो। किसी भी तरह कल यहाँ  आओ, मैं तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ  वरना जिन्दगी भर पछताओगे। आकर चाची को मत बताना कि मैंने तुम्हें बुलाया है।” यह कहकर उसने फोन काट कर बंद कर दिया।

सुमन जी खुशी से बावली हुई जा रहीं थी। सुकन्या भी सब कुछ भूलकर उनके प्यार में खो गई।

दूसरे दिन सुबह कालबेल की आवाज से सुमन चाची दरवाजा खोलने गईं तो चौंक पड़ी -”अरे, जय बेटा, तुम कैसे आ गये? तुमने तो कहा था कि नई नौकरी में जल्दी नहीं आ पाऊॅगा।"

“क्या करूँ मम्मी, आप साथ चलती नहीं है इसलिये मुझे तो आना ही पड़ेगा| बहुत याद आ रही, मन नहीं मान ही नहीं रहा था ।” मृत्युंजय ने झुककर सुमन  के पैर छुये और अपने से लिपटा लिया -”बहुत अच्छे समय आये हो तुम। देखो, सुकन्या भी आई है। काश! नीलिमा भी होती।”तीनों की ऑंखें भर आईं।

दोपहर का खाना खाने के बाद सुमन जी हाथ में थैला लेकर आ गईं -”आज मेरे दोनों बच्चे आ गये हैं, कुछ सामान लेकर अभी आती  हूँ । तब तक तुम दोनों बातें करो।"

“आप लिस्ट बना दो, मैं ला दूँगा| "

सुमन की आँखें भर आई - “ इसी सुकन्या ने ही सामान के लिये जबरदस्ती मुझे बाहर निकलना सिखाया। खुद भी कुछ लेने जाती थी तो मुझे लेकर जाती थी। अब भी जब आती है अपनी मनपसंद की चीजें लेने मुझे ही भेज देती है। नीलिमा के जाने के बाद इसी के कारण मैं जी पाई हूँ ।"

“आप जाइये चाची और मेरे लिये मोहन की दुकान से इमरती लेती आइयेगा। कल सुबह नाश्ते में छोले भटूरे बनाऊॅगी, जो सामान घर में न हो, लेते आइयेगा नहीं तो सुबह आपको ही दौड़ना पड़ेगा।” मृत्युंजय मुस्करा दिया और सुमन जी भी हॅसती हुई चली गईं।

मृत्युंजय उतावला हो रहा था लेकिन सुकन्या ने हाथ के इशारे से उसे  रोक दिया। सुमन जी के जाने के पांच  मिनट बाद सुकन्या उसे अंदर वाले कमरे में ले आई।

अब उसने नीलिमा की मृत्यु के रहस्य से पर्दे उठाकर सब कुछ सच सच बता दिया। सारी तस्वीरें, सारे रिकॉर्ड सब दिखा दिया। सुनकर मृत्युंजय फटी फटी ऑखों से सुकन्या को देखता रह गया। उसके लिये विश्वास करना असंभव हो रहा था। उसकी प्यारी बहन के साथ इतना सब हो गया और उसे कुछ पता ही नहीं -”जय, मैंने खुद को और नीलिमा की आत्मा को वचन दिया था कि इस व्यक्ति को ऐसे नहीं छोड़ दूँगी चाहे इसके लिये मुझे जान देनी पड़े या कितना भी नीचे गिरना पड़े। हमारी नीलिमा इसके कारण चली गई और यह व्यक्ति वैसे ही बेपरवाह घूम रहा है तमाम लड़कियों की जिन्दगी बरबाद करने के लिये।"

“ तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैं मार डालूँगा  उस नीच को जिसने मेरी बहन के साथ ऐसा दुष्कर्म करके उसे आत्महत्या के लिये मजबूर कर दिया।"

उत्तेजना में मृत्युंजय उठ कर खड़ा हो गया तो सुकन्या ने उसे हाथ पकड़कर बैठा लिया -”शान्ति से काम लो जय। तुम क्या समझते हो कि मैं उसे नहीं मार सकती थी? जब चाहती मार सकती थी लेकिन इससे मैं कानून द्वारा सजा की हकदार हो जाती जबकि मैं क्यों सजा भोगूँ? मौत तो नीलिमा की यंत्रणा के सामने इसके लिये बहुत आसान सजा है। इसकी मौत हो भी तो यंत्रणा से।"

सुकन्या की ऑंखें भीगने लगीं -” दिल पर पत्थर रखकर अन्दर से तड़पते हुये मैंने उस नीच की हर हरकत सहन की है। प्यार का झूठा नाटक करके उससे तमाम पैसा, फ्लैट, कार, मॅहगे कपड़े और गहने लेती रही, इन सबकी रसीदें मेरे पास हैं क्योंकि मुझे और भी प्रमाण चाहिये थे। नीलिमा के दिये प्रमाण पूरी तरह पर्याप्त नहीं थे।"

मृत्युंजय सिर झुकाये बैठा था अचानक उसने सुकन्या के दोनों हाथ पकड़कर अपनी गीली ऑखों से लगा लिये -”तुमने मेरी बहन के लिये अपना सब कुछ दॉव पर लगा दिया और मैं तुम्हें गलत समझता रहा।"

“जय, नीलिमा ने सबसे अधिक मुझ पर विश्वास किया था, वह जानती थी कि तुम आवेश में कोई गलत कदम उठा लोगे।"

सुकन्या ने मेट्रो में मिली लड़की रजनी की बात भी उसे बताई। मृत्युंजय चाहता था कि सब कुछ पुलिस को बताकर वरदान को गिरफ्तार करवा दिया जाये जबकि सुकन्या चाहती थी कि वरदान का दाम्पत्य पूरी तरह बरबाद हो जाये और उसके पास अपनी पत्नी और बच्चों के पास लौटने के रास्ते बन्द हो जायें। उसकी पत्नी और बच्चे यहॉ तक रिश्तेदार, दोस्त, समाज उससे इतनी नफरत करें कि कोई उसकी ओर देखना भी पसंद न करे| वह जेल की सजा काटकर बाहर आये तो अपनी ही प्रिय जनों की नफरत उसे जीने न दे और वह  घबराकर आत्महत्या कर ले |  अभी तो वह अपनी पत्नी और बच्चों की दृष्टि में बहुत प्यार करने वाला पति और स्नेहिल पिता है । अभी तो  उसके इस घिनौने रूप से सब लोग अनजान हैं | वह समाज का एक सम्मानित व्यक्ति है, बहुत इज्जत है उसकी| मैं उसकी वह इज्जत धूल में मिलाना चाहती हूँ, समाज के सामने बेपर्दा करना चाहती हूँ | अभी तो वह पत्नी, बच्चों और आत्मीय लोगों से कह सकता है कि उसे गलत फॅसाया गया है, सारे आरोप झूठे हैं। वह खुद परेशान हो कर तड़पे और खुद  अपने मुँह से अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ने की बात अपनी पत्नी से कहे|

हालांकि मृत्युंजय का बिल्कुल मन नहीं था कि इस नाटक को और आगे बढ़ाया जाये। उससे सहन नहीं हो रहा था -” सब कुछ जानकर मैं अब तुम्हें उसके पास कैसे जाने दे सकता हूँ ? मेरा मन कर रहा है कि अभी जाकर उसे गोली मार दूँ ।"

“ और चाची के एकमात्र सहारे तुम्हें फॉसी हो जाये? थोड़े से आवेश में तुम उसे इतनी आसान मौत देकर मेरी और नीलिमा की यंत्रणा को क्या उत्तर दोगे? इसीलिये नीलिमा ने सब कुछ मुझे बताया क्योंकि वह जानती थी कि मैं जो भी निर्णय लूँगी बहुत सोंच समझकर लूँगी ।"

फिर सुकन्या ने मृत्युंजय के हाथ पर अपना हाथ रख दिया -”जय, मुझे दुख है कि मैं तुम्हें तुम्हारी नीलिमा वापस नहीं दे सकती । उसने मुझे पहले कुछ नहीं बताया। उसने तुम्हारे लिये सारे समझौते किये और अपने परिवार को अपमान से बचाने के लिये अपने प्राण दे दिये।"

“यही सोचकर तो मर जाने का मन करता है कि यह सब मेरे कारण हुआ है। मेरी शिक्षा अधूरी न रहे , मेरा कैरियर बर्बाद न हो, इसलिये मेरी नीलू, मेरी छोटी बहन ने अपना सब कुछ यहाँ तक अपनी जिन्दगी तक मिटा दी| यह बोझ लेकर कैसे जी पाऊँगा मैं? खुद तो आसमान से ऊँची हो गई और मुझे मेरी ही नजर में गिरा गई|" मृत्युंजय फूट फूट कर रोने लगा

सुकन्या ने मृत्युंजय के कंधे पर हाथ रखकर एक ठंडी साँस ली -” हमारी नियति यही थी जय कि हम जिन्दगी भर अपनी नीलू के लिये तड़पते रहें तो क्या कर सकते थे हम? बस यदि हमने वरदान को उसके कृत्य का दंड दे दिया तो नीलू का प्रतिशोध पूर्ण हो जायेगा। हम दोनों मिलकर उसे यही सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।"

फिर उन दोनों ने मिलकर आगे की योजना बनाई लेकिन मृत्युंजय ने एक शर्त रख दी -”अब मैं वापस नहीं जाऊॅगा तुम्हें खतरे में छोड़कर।"

“लेकिन तुम्हारी नौकरी.........।"

“जाने दो, नौकरियॉ तमाम मिल जायेंगी लेकिन जानते हुये तुम्हें छोड़कर चला गया और तुम्हें कुछ हो गया तो जिन्दगी भर खुद से नजरें नहीं मिला पाऊॅगा।” आवेश में मृत्युंजय ने सुकन्या का चेहरा अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया। थोड़ी देर दोनों बेसुध से हो गये। फिर चौंककर अलग हो गये।

“ठीक है, न तो मैं यहॉ रहूँगी  और न ही तुम इस शहर में किसी को मेरे साथ दिखोगे। अभी मैं अपने ही फ्लैट में रहूँगी ।"

फिर उन्होने तय किया के दिए मोबाईल कि आफिस के अलावा जब भी सुकन्या वरदान के साथ रहेगी, उसकी स्थिति ( लोकेशन ) की मृत्युंजय को पूरी जानकारी रहेगी जिससे दूर से ही सही वह सुकन्या के साथ रह सके। साथ ही उसने मृत्युंजय को यह भी बताया कि वह वरदान के दिए फोन से सुमन या अपने मम्मी पापा से कभी बात नहीं करती है ताकि यदि वरदान उसका फोन देख भी ले तो उसे कुछ पता न चले| अपनी और वरदान की सारी  फोटो और ऑडियो उसने पेन ड्राइव में सुरक्षित करके अपने फोन से मिटा दिया है|   मृत्युंजय उसके इतना सब अकेले कर लेने पर दंग था | मृत्युंजय को सब कुछ बता कर सुकन्या को बहुत  तसल्ली मिली कि इतने बड़े खतरनाक कार्य में कोई तो उसके साथ है| इस अभियान में यदि उसको कुछ हो भी जाये तो मृत्युंजय वरदान आहूजा को छोड़ेगा नहीं |  इसके बाद मृत्युंजय अपने कमरे में और सुकन्या अपने कमरे में चली गईं। सुमन ने नीलिमा का कमरा सुकन्या को दे दिया था।

जितने दिन सुकन्या रही, वरदान को बराबर मैसेज करके फोन बंद कर देती थी। सुकन्या के मम्मी पापा से जब चारो लोग मृत्युंजय के फोन से वीडियो काल से बात करते थे तो वो लोग बहुत खुश होते थे क्योंकि उन लोगों को सुकन्या के नये फोन के बारे में पता नहीं था और उसके पुराने फोन में यह सब सिस्टम है नहीं।

वैसे मृत्युंजय और सुकन्या में सामान्य बातें होती थीं लेकिन अपनी योजना सम्बन्धी बातें सुमन के शाम को बाजार या मंदिर जाने पर ही होती थीं।

मृत्युंजय ने सुमन को बता दिया कि उसे यह नौकरी पसंद नहीं है इसलिये उसने दूसरे स्थानों पर आवेदन किया है तब तक वह घर में रहेगा। सुमन की खुशी का ठिकाना न रहा।

जाने से पहले उसने  मृत्युंजय से मोबाइल के कुछ नये सिम लेने को कहा, साथ ही यह भी कहा कि वह सिम अपने नाम से न ले।

आज  आ रही हो, मैं तुम्हें लेने एयरपोर्ट आ जाता।"

“फिर अचानक मुझे देखकर तुम्हारे चेहरे की यह दमक और खुशी कैसे देखती?”

“मम्मी ठीक हैं?'

“हॉ ठीक हैं।” सुकन्या ने उतरे हुये स्वर में कहा।

“फिर इतना उदास क्यों हो?"

“लंच के लिये बाहर चलना तुम्हें कुछ बताना है।"

“तो फ्लैट पर चलते हैं जहॉ हम इत्मीनान से बातें भी करेंगे और इतने दिन बाद अच्छे से मिल भी लेंगे। तुम नहीं जानती कि मैंने यह समय तुम्हारे बिना कैसे बिताया है?"

“वरदान यह समय इन बातों का नहीं है, मैं सचमुच बहुत परेशान हूँ ।"

“कह तो रहा हूँ  कि घर चलते हैं, वहीं अच्छे से बात करेंगे। रास्ते से खाना भी लेते चलेंगे।"

“ठीक है, तब तक कुछ काम कर लेते हैं, इसके बाद निकलेंगे। मैं अपने केबिन में जा रही हूँ ।” सुकन्या ने उसी उदासी से कहा।

घर जाते हुये कार में भी सुकन्या चुपचाप बैठी थी। अपने फ्लैट में पहुँचकर सुकन्या कपड़े बदलने चली गई और थोड़ी देर बाद जूस लेकर आ गई लेकिन उसकी उदासी जरा भी कम नहीं हुई।

वरदान ने उसे हाथ पकड़कर अपनी बगल में बैठा लिया -”पहले बताओ क्या बात है? तुम्हारे चेहरे पर उदासी मुझे अच्छी नहीं लगती, बहुत प्यार करता हूँ तुम्हें। तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूँ । तुम नहीं जानती कि तुम्हें ऐसे देखकर मुझे कितनी तकलीफ हो रही है?” सुकन्या का चेहरा दोनों हाथों में भरकर चूम लिया उसने।

“वरदान क्या सचमुच तुम मुझे प्यार करते हो? या सिर्फ मेरी देह से ही खेलते रहे इतने दिन।” सुकन्या की ऑखों में ऑसू थे।

“तुम्हें क्या हो गया है, इस तरह मेरे प्यार पर शक क्यों कर रही हो? तुम्हारे लिये क्या नहीं किया है मैंने?"

“अगर तुम सचमुच मुझसे प्यार करते हो तो रुद्रा को तलाक देकर मुझसे शादी कर लो।"

वरदान चौंक गया -” जब हमारे बीच में सब इतना अच्छा चल रहा है तो यह नई बात कहाँ  से खड़ी हो गई? तुम अपनी जगह हो वो लोग अपनी जगह| न उनका तुमसे कोई लेना देना है न तुम्हारा उनसे|"

“मेरे घरवाले मेरी शादी करना चाहते हैं लेकिन मैंने उनसे कह दिया है कि मैं तुम्हारे सिवा किसी की नहीं हो सकती। बहुत प्यार करती हूँ  तुम्हें।"

“प्यार तो मैं भी करता हूँ लेकिन शादी.......  यह कैसे हो सकता है? रुद्रा और बच्चों को कैसे छोड़ सकता हूँ ? "

“ मुझे अपना लो वरदान, वरना मैं कहीं की नहीं रहूँगी । तुम्हारे प्यार का अंश मेरे भीतर पनप रहा है। मैं भी तुम्हें बच्चे दूँगी, प्यार दूँगी| रूद्रा से तो तुम भी प्यार नहीं करते, केवल दिखावे की पत्नी है वह तुम्हारी, फिर ऐसे सम्बन्ध को समाप्त करने में नुक्सान ही क्या है? "

“ कब तक तुम यह बेकार के सम्बन्ध का बोझ ढ़ोते रहोगे ? रुद्रा से छुटकारा पाकर हम अपनी नई जिन्दगी शुरू करेंगे|”

“यह कौन सी नई कहानी शुरू कर दी है तुमने?” वरदान सचेत होकर सीधा बैठ गया।

“ मैं सच कह रही हूँ वरदान |” सुकन्या ने वरदान का हाथ पकड़ लिया – “ तुम मेरा साथ नहीं दोगे तो कौन देगा? इस स्थिति में कौन मुझे अपनायेगा, कौन मुझसे शादी करेगा? अगर तुमने इंकार कर दिया तो मैं मम्मी पापा को क्या मुँह दिखाऊँगी? आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं बचेगा मेरे पास? मैं कहीं की नहीं रहूँगी, बर्बाद हो जाऊँगी|”

वरदान के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आ गई - “तुम लड़कियों में यही सबसे बड़ी खराबी है कि तुम बातें तो बहुत बड़ी बड़ी करती हो लेकिन बाद में उसी सदियों पुराने स्थान पर आकर खड़ी हो जाती हो। किसी डाक्टर के पास जाओ और अंदर का सब कचरा बाहर फेंक कर तरोताजा होकर आ जाओ।"

“ वो कचरा नहीं है, हमारे प्यार का अंश है। उसे मारने के लिये मत कहो।"

“फिर यह तुम्हारी समस्या है तुम जानो।” वरदान उठने लगा तो सुकन्या ने फिर उसका हाथ पकड़ कर बैठा लिया और रोते हुये उसके घुटने पर सर रख दिया  - ” तुम जो कुछ कहोगे मैं करुँगी  लेकिन इस तरह मुझे छोड़कर न जाओ। इस समय तुम भी छोड़ दोगे तो मैं कहॉ जाऊॅगी? जिस डाक्टर के पास चाहो, ले चलो।” सुकन्या जानती थी वरदान कभी डाक्टर के पास नहीं जायेगा।

  वरदान ने उसी समय जेब से चेक बुक निकाल कर उसमें दस लाख की रकम भरी और सुकन्या के सामने डाल कर कहा - “ मुझे कहीं नहीं जाना है, अपनी समस्या तुम्हें खुद निपटानी है। मुझे इन सब झंझटों से कोई मतलब  नहीं है।"

“तुम मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हो? तुम मुझे इस तरह मझधार में नहीं छोड़ सकते?"

“डार्लिंग” वरदान ने एक खलनायकी  मुस्कान से कहा -” तुम तो जीवन के आनन्द की बहुत बड़ी बड़ी बातें करती थीं। अब उसमें तुमने सतर्कता नहीं रखी तो मैं क्या कर सकता हूँ? उसका फल तो तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा।"

“और हमारा प्यार.......।"

“आज के युग में प्यार वगैरह सब बेवकूफी की बातें हैं। शरीर की एक स्वाभाविक आवश्यकता होती है। उसी के कारण तुम मेरी जरूरत बन गईं थी और उसका मैंने तुम्हारी औकात से ज्यादा मूल्य चुका दिया है।"

सुकन्या फूट फूटकर रोती रही तभी वरदान उठकर खड़ा हो गया -”मैडम सुकन्या, अब तुम मेरी जरूरत नहीं रहीं इसलिये अब हमारे रास्ते अलग हैं। किसी दिन आफिस आकर अपना तीन महीने का वेतन ले जाना। मुझे और आफिस दोनों को अब तुम्हारी जरूरत नहीं है।"

रोती हुई सुकन्या को छोड़कर वरदान चला गया। इसके तुरन्त बाद अपनी योजनानुसार सुकन्या फ्लैट छोड़कर मृत्युंजय के बताये दूसरे छोटे से मकान में आ गई।

अगले दिन सुकन्या सचमुच नहीं आई लेकिन वरदान के मोबाइल पर बहुत कुछ ऐसा आया जिसे देखकर वह बौखला गया उसने तुरन्त सुकन्या को फोन किया -”हाँ  बोलो वरदान, कैसे याद किया?"

“यह क्या बदतमीजी है?” वरदान क्रोध से दहाड़ा।

“कौन सी बदतमीजी डार्लिंग?"

“यह सब क्या भेजा है मेरे पास? भूल गईं कि इन तस्वीरों में तुम भी हो मेरे साथ। तुम्हारी कितनी बदनामी होगी, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

“इस धोखे में मत रहियेगा मि० वरदान। ध्यान से देखिये , इन तस्वीरों में आप मुझसे जबरदस्ती कर रहे हैं साथ ही आपका हाथ मेरे मुँह पर है, मैं आपके नीचे छटपटा रहीं हूँ और मेरी आँखों से आँसू बह रहे हैं | आप अपनी चिन्ता कीजिये। यदि मैं यौन शोषण के आरोप के साथ ये  सब कुछ पुलिस को दे  दूँ और बता दूँ कि  इन तस्वीरों के माध्यम से आप लगातार मुझे ब्लैकमेल करके मुझसे शारीरिक सम्बन्ध बनाते रहे हैं और गर्भवती हो जाने पर दस लाख रूपये  देकर मुझे नौकरी और अपनी जिन्दगी दोनों से निकाल रहे हैं| सोंचिये क्या होगा  आपका ?”

वरदान कुछ कहना चाहता था लेकिन तभी सुकन्या ने रोंक दिया – “ झूठ बोलने के सम्बन्ध में तो सोंचियेगा भी मत| हर बात का मजबूत  प्रमाण है मेरे पास|”

“ तुम झूठ बोल रही हो, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं| कुछ नहीं है तुम्हारे पास |”

“ कोई बात नहीं इन्तजार कीजिये प्रमाण  आपकी सुलक्षणा पत्नी तक पहुँच जायेंगे| वैसे आपकी बहनों तक भी पहुँचाने की सोंच रही हूँ ।"

“ तुमने मुझे धोखा दिया है| तुम ऐसा नहीं कर सकती।” वरदान के स्वर में कॅपकॅपाहट स्पष्ट थी।

“ क्यों? जब तुम दूसरों को धोखा दे सकते हो तो यदि तुम्हे कोई धोखा दे तो वह गलत कैसे हो गया ? तुम तो जीवन भर अपनी उस पत्नी को धोखा देते रहे जिसने तुम्हारे लिये अपना सब कुछ छोड़ दिया था|” वरदान अवाक था और सुकन्या कहती जा रही थी – “ जब  हमारे रास्ते अलग हैं तो  तुम्हें मुझसे कोई उम्मीद नहीं करनी चाहिये। अभी तो मैं इस बच्चे को जन्म देकर इसका डी०एन०ए० टेस्ट करवाऊॅगी, तब कहना कि यह बच्चा  तुम्हारा नहीं है। इस बच्चे का तुम्हारी सम्पत्ति में भी अधिकार होगा।"

“इस तरह रखैलों और वेश्याओं के बच्चों का कोई दावा नहीं होता, समझीं तुम।”वरदान क्रोध से पागल हुआ जा रहा है।

“यह सब मुझे मत बताओ, पुलिस और कोर्ट को समझाना।"

सुकन्या ने फोन बंद कर दिया। वरदान को विश्वास नहीं था कि इस बार शिकारी खुद शिकार हो गया है। वह बार बार सुकन्या को फोन करता रहा लेकिन हर बार फोन बन्द आ रहा था। वह सुकन्या के फ्लैट पर भी गया लेकिन  वहॉ पर ताला पड़ा था। गार्ड ने सुकन्या को  एक एयरबैग लेकर अकेले  जाते देखा था। कहाँ गई सुकन्या?

वरदान तनाव में पागल हुआ जा रहा था। घर आफिस कहीं उसे चैन नहीं था | किसी से कुछ कह भी नहीं सकता था। आफिस में रहता तो अपने स्टाफ पर चीखता चिल्लाता रहता और घर में आते ही अपने कमरे में बन्द हो जाता। रुद्रा कुछ पूँछने का प्रयत्न करती तो वह बुरी तरह बरस पड़ता, चीखने चिल्लाने लगता, अगर रुद्रा उसे शान्त करने का प्रयास करती तो वह तोड़ फोड़ करने लगा।

जब से गुड़िया के रोने पर उसने उसे थप्पड़ मार दिया था , बच्चे बहुत डर गये थे। वरदान के आते ही वे दोनों सहमकर रुद्रा से चिपट जाते। बच्चों में जान बसती थी वरदान की| कभी कभी तो बच्चों के कारण रुद्रा को भी डांट खानी पड़ती थी| पापा के बदले व्यवहार से वो दोनों डरे सहमे रहने लगे |

एक दिन रुद्रा ने आफिस में फोन करके वरदान की समस्या का पता करना चाहा तो वहॉ भी कुछ पता नहीं चला। बस इतना पता चला कि काफी दिन से सुकन्या मैडम नहीं आ रही हैं तो बॉस को आफिस के कामों में परेशानी हो रही है। रुद्रा समझ गई कि विभागीय परेशानी के कारण वरदान का व्यवहार ऐसा हो गया है और कुछ दिन में सब ठीक हो जाएगा| वरदान ने शुरू से ही घर और आफिस को अलग रखा है। आफिस की कोई भी समस्या वह रुद्रा को नहीं बताता था।

कभी रुद्रा ने कहा भी तो वह कह देता -”आफिस की चिन्ताओं के लिये मैं हूँ  तुम्हारे पास और भी समस्यायें हैं उनको सम्हालकर तुमने मुझे निश्चिंत कर दिया है तो मेरा भी तो कर्तव्य है कि कुछ मामलों में तुम्हें निश्चिंत रखूँ ।"

जबकि आज घर आकर पहली बार उसने रुद्रा को थप्पड़ मारा -”मेरी जासूसी करने की जरूरत नहीं। शान्ति से जीने दो मुझे।"

रुद्रा हतप्रभ थी वरदान के इस व्यवहार से। एक स्नेहिल पिता और प्रेमी पति को अचानक क्या हो गया? वरदान का बाहर और घर का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था। वह रुद्रा और अपने बच्चों को बेहद प्यार करता था और बहुत खुश रखता था।

घर में दहशत का माहौल व्याप्त हो गया था। रुद्रा ने भी वरदान से कुछ पूँछना छोड़ दिया। उसे लगा कि सामान्य होने के बाद वरदान खुद उसे बतायेगा। उसे वरदान पर पूर्ण विश्वास था इसलिये वह वरदान को और अधिक परेशान नहीं करना चाहती थी।

एक हफ्ते के अंदर वरदान टूट गया। एक हफ्ते बाद किसी अनजान नम्बर से फोन आया -”हलो” बोलते ही सुकन्या की आवाज आई -”कैसे हो वरदान?"

“तुम कहाँ  हो और क्या चाहती हो?"

“शादी।"

“तुम्हें पता है कि मैं यह नहीं कर सकता। तुम्हें जितना पैसा चाहिये, बोलो?"

“शादी से कम कुछ नहीं। तुम अपना सारा पैसा रुद्रा और बच्चों को दे दो। मुझे केवल तुम और मेरे बच्चे को तुम्हारा नाम चाहिये।"

“अगर मैं अब भी मना कर दूँ तो.......।"

“तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम मना नहीं कर सकते।” सुकन्या कुछ देर चुप रही फिर उसे वरदान की आवाज सुनाई दी -”क्या हम एक बार मिलकर सारी बातें आराम से नहीं कर सकते?"

बदले में सुकन्या की हॅसी सुनाई दी -” मुझे इतना मूर्ख कैसे समझ लिया? एक बार धोखा खाने के बाद दुबारा धोखा खाना मेरा स्वभाव नहीं है। मैं जानती हूँ कि तुम कोई चाल चलकर मुझसे वो सारे प्रमाण प्राप्त करने का प्रयत्न करोगे लेकिन सूचना के लिये बता दूँ कि मेरे अपहरण और मृत्यु से भी कोई अन्तर नहीं पड़ेगा बल्कि तुम्हारे अपराधों में कुछ अपराध और बढ़ जायेंगे। उन सभी की और भी प्रतियाँ हैं और वह व्यक्ति इतना खूंखार है कि रुद्रा और तुम्हारे बच्चों के साथ ही तुम्हारी बहनों के परिवार को भी नुकसान पहुँचा सकता है।"

वरदान काँप  कर रह गया लेकिन अपने को सम्हालकर कहा -” तुमने मुझे इतना नींच समझकर रखा है क्या? मैं तो बस एक बार तुमसे मिलना चाहता था ताकि हमारे बीच की सारी गलतफहमी दूर हो सकें।"

“हमारे बीच सब कुछ स्पष्ट है, गलतफहमी का प्रश्न ही नहीं है।"

“तब ठीक है, मुझे तुम्हारी कोई बात स्वीकार नहीं है, तुमसे जो करते बने कर लो। मैं तुम्हारी धमकियों से डरने वाला नहीं हूँ।"

“मैं तुम्हें कोई धमकी नहीं दे रही बल्कि केवल तुम्हें दर्पण दिखा रही हूँ। अभी तो मैं केवल अपनी ही बात कर रही हूँ  जबकि मेरी पिटारी में ऐसे बहुत से नाग हैं जो तुम्हें डसने को तैयार बैठे हैं।"

“नाग? कैसे नाग। मैं कुछ समझा नहीं।” वरदान के आश्चर्य की सीमा नहीं थी।

“आशा है तुम नीलिमा को नहीं भूले होगे। उसके साथ तुम्हारे कारनामों और आत्महत्या की सारी कहानी तुम्हारे ही शब्दों में मेरे पास है। सुनना चाहते हो तो भेज सकती हूँ। वैसे रजनी और मेघना ने एक महीने के अंदर जिस कारण नौकरी छोड़ी थी, उसका भी पता मुझे चल गया है।"

“यह क्या बकवास है? कौन हैं ये लड़कियॉ? न तो मैं इन्हें जानता हूँ और न मेरा इनसे कोई सम्बन्ध है।"

“कोई बात नहीं, पुलिस की हिरासत में सब याद आ जायेगा।"

“पुलिस का डर मत दिखाओ, मैं भी पुलिस के पास जा सकता हूँ  कि न जाने किसका पाप मेरे सिर मढ़कर मुझे ब्लैकमेल कर रही हो।"

“जाओ, मैंने कब मना किया है? डी०एन०ए० रिपोर्ट और अपनी आवाज के आडियो को कैसे नकार पाओगे?” अपने बचाव का कोई रास्ता वरदान की समझ में नहीं आ रहा था। पुलिस की मदद लेने पर तो वह और बुरी तरह फॅस जायेगा।

“मैं बरबाद हो जाऊॅगा। मुझ पर रहम करो।"

“तुमने तो कभी किसी पर रहम नहीं किया। इसलिये तुम्हारे मुँह  से यह शब्द शोभा नहीं देता। सोंच लो मैं दुबारा फोन करुँगी । आशा है तुम कुछ भी अनर्गल करने के लिये मुझे बाध्य नहीं करोगे।” फोन बंद हो गया साथ ही उसके पास नीलिमा के बारे में सारी सच्चाई को बयान करता उसी के स्वर का आडियो पहुँच  गया। साथ सुकन्या को दस लाख का चेक देने वाले दिन की सारी बातचीत का आडियो  भी था |

वरदान समझ गया कि सुकन्या की बात मानने के अलावा कोई रास्ता शेष नहीं बचा है। आत्मसमर्पण ही एकमात्र रास्ता है। अपनी रुद्रा जैसी पत्नी और प्यारे से घर संसार के होते हुये उसने जिस राह पर कदम बढ़ाये थे उसका एक न एक दिन यह हश्र तो होना ही था। वह बेसब्री से सुकन्या के फोन का इंतजार करने लगा। उसे कहीं चैन नहीं था। आफिस जाता भी तो इसलिये कि सारा दिन घर में रहेगा तो और परेशान होगा।

पाँच  दिन तक सुकन्या का कोई फोन नहीं आया तो वह और भी परेशान हो गया। क्या करे? कहॉ जाये? कहॉ है सुकन्या? कुछ पता नहीं। उसका फोन भी लगातार बंद आ रहा है। वह हर बार एक नये नम्बर से फोन करती है, इसलिये उसे फोन भी नहीं कर सकता था।

छठे दिन एक नये नम्बर से फोन आया, समझ गया कि सुकन्या का ही फोन होगा -”हॉ बोलो सुकन्या।” बेहद थकी आवाज थी उसकी।

“अब बताओ क्या सोंचा है  तुमने?"

“तुमने कुछ सोंचने लायक छोड़ा ही कहाँ  है? मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है।"

“ अब समझ में आया ना की वे बेबस लडकियाँ कैसे परेशान हुईं होंगी ?” सुकन्या हल्के से हँसी – “ खैर.... ठीक है, इंतजार करो, मैं तुम्हें फोन करती हूँ ।"

“जल्दी फोन करना, मैं बुरी तरह थक गया हूँ ।”

“ इतनी जल्दी |” प्रत्युत्तर में सुकन्या की हॅसी सुनाई दी।

दो दिन बाद उसी नम्बर से वरदान के पास फोन आया, सुकन्या ने उसे बताया कि वह रुद्रा से कहे कि वह उसे तलाक देने वाला है और आज से तीन दिन बाद टूर का बहाना करके बुलन्दशहर के रायल होटल में आये। वहॉ रिसेप्शन पर उसे सुकन्या मिल जायेगी। वहॉ से वो लोग आर्य समाज मंदिर जाकर शादी करेंगे और वापस आ जायेंगे।

“बिना तलाक के शादी कैसे हो सकती है? एक पत्नी के होते हुये दूसरी शादी नहीं हो सकती, इतना तो तुम्हें मालुम ही है।"

“रुद्रा को जब हमारी शादी की बात पता चलेगी तो वह खुद तुम्हें तलाक दे देगी।"

“अगर मैं अब भी न आऊॅ तो.......।"

“मत आओ, तलाक तो रुद्रा तुम्हें दे ही देगी। अगर तुम समय पर नहीं आये तो सारी तस्वीरें, वीडियो, आडियो और नीलिमा का वह पत्र भी रुद्रा के अतिरिक्त पुलिस और मीडिया तक पहुँचा  दिये जायेंगे। अभी तो रुद्रा और तुम्हारे बच्चों के बदले में मैं और मेरा बच्चा तुम्हारे पास होंगे वरना न मैं मिलूँगी और न रुद्रा तुम्हें मिलेगी, जेल की सलाखें साथ में मुफ्त मिल जायेंगी। साथ ही मीडिया तुम्हारी क्या हालत करेगी सोंच लो | मुझे कोई जल्दी नहीं है फैसला तुम्हारे हाथ में है, मैं बाद में फोन कर लूँगी । ” फोन एक बार फिर कट गया।

उसी दिन जब शाम को सुकन्या का फोन आया तो वरदान ने बुलन्दशहर आने की हामी भर ली।

**( 8 )**

सुबह वरदान को चुपचाप सूटकेस में कपड़े रखते देख रुद्रा समझ गई कि वरदान टूर पर जा रहा है। न जाने कितने दिन से वरदान ने उससे और बच्चों से बात नहीं की है, घर में खाना नहीं खाया है। रुद्रा उसकी परेशानी समझकर खुद भी चुप हो गई और बच्चों को भी समझा दिया।

लेकिन उसे आज तो पूँछना ही पड़ा -” टूर पर जा रहे हो क्या?"

“हाँ '' वरदान ने बिना उसकी ओर देखे कहा।

“कब तक लौटोगे?"

“सारी बातें तुम्हें बतानी जरूरी है क्या? अपने काम से काम नहीं रख सकती क्या तुम?' वरदान चीख पड़ा।

रुद्रा ने वरदान का हाथ पकड़ लिया -” मुझे बताओ कि तुम्हारी समस्या क्या है? क्यों इतने तनाव में जी रहे हो? खुद भी परेशान हो और हम लोगों को भी परेशान कर दिया है। कुछ तो बताओ, ऐसे कैसे चलेगा? शायद मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँ ।"

“ हाँ , तुम मेरी सहायता कर सकती हो।” वरदान एक पल के लिये रुका फिर दिल को मजबूत करके बोला - '' मुझसे दूर जाकर। मुझे घुटन होती है तुम्हारे साथ, अब तुम्हें और अधिक नहीं सह पा रहा हूँ  मैं। मेरे जीवन में अब तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा पीछा छोड़ दो, तंग आ गया हूँ तुमसे। जो चाहे ले लो और मुझे स्वतंत्र करो।” अपना हाथ उसने झटके से रुद्रा के हाथ से छुड़ा लिया।

रुद्रा अवाक रह गई। पहले तो वह समझ ही नहीं पाई कि वरदान कहना क्या चाहता है फिर धीरे से बोली   -” मैं क्या बाजार से खरीदा हुआ सामान हूँ जो आवश्यकता न होने पर हटा दी जाये। मैं पत्नी हूँ तुम्हारी। हमारे बीच तो जन्म जन्मान्तरों का सम्बन्ध है। मैं तो अगले जन्मों में भी तुम्हारी ही कामना करुँगी ।"

“मुझे इसी जन्म में तुम्हारा साथ नहीं चाहिये।"

“और हमारे ये बच्चे.......।"

“इन्हें भी ले जाओ। मुझे न तो तुम्हारी जरूरत है और न तुम्हारे इन बच्चों की। मेरे लौटकर आने तक जहॉ मन हो इन बच्चों को लेकर चली जाना। खाली चेकबुक रखी है जितना पैसा चाहना भर लेना और घर से भी जो चाहना ले जाना लेकिन मुझे खाली घर मिलना चाहिये।"

“कैसी बातें कर रहे हो वरदान? तुम्हें क्या हो गया है? हम तो एक दूसरे को बेहद प्यार करते हैं फिर तुम इस तरह की बातें क्यों कर रहे हो?”रुद्रा समझ नहीं पा रही थी कि वह क्या करे? ” अच्छा इतना तो बता दो कि हम तीनों का अपराध क्या है जो तुम अपने जीवन से हमें काटकर फेंकना चाहते हो?"

“मुझे कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है। बस इतना समझ लो कि ऊब गया हूँ  मैं तुम सबसे और कान खोलकर सुन लो कि मेरा फैसला बदल नहीं सकता। तलाक के कागजात तुम्हारे पास  पहुँच जायेंगे।” यह सब कहते हुये उसका दिल फटा जा रहा था। इस रुद्रा ने उसके लिये क्या नहीं किया और आज वह उसके साथ ऐसा व्यवहार करने को मजबूर है।

वरदान तो उस पर वज्रपात करके चला गया लेकिन रुद्रा में सोंचने समझने की शक्ति ही नहीं रही थी।

वरदान के शब्दों को सुनकर अपनी गृहस्थी में आकण्ठ निमग्न उसके हृदय में हलचल मच गई। स्वयं वरदान से न सुनती तो कभी विश्वास न करती कि उसका वरदान ऐसा भी कह सकता है। उसके प्रेम वृक्ष की जड़ों में विश्वासघात का दीमक कब प्रविष्ट हो गया, उसे पता ही नहीं चला और जब पता चला तो समूचा वृक्ष धराशाई होने की स्थिति में आ गया है। वह तो ऑंखें बन्द करे वरदान के विश्वास के कंधे पर सिर रखे चली जा रही थी कि अचानक किसकी नजर लग गई कि वरदान ने वह कन्धा हटाकर उसे जमीन पर गिरा दिया।

वरदान के प्यार का अथाह सागर ही उसकी सबसे बड़ी पूँजी थी, जब वह नहीं तो उसे और क्या चाहिये?

पैसा तो उसने अपने व्यापार में कमा ही लिया है। एक तीन बेडरूम वाला फ्लैट भी है, जिसको किराये पर दे रखा है। उसका व्यापार तो बहुत अच्छा चल रहा था। बेटे के बाद भी कोई अन्तर नहीं पड़ा था लेकिन सास के न रहने के बाद चार महीने की बिटिया के कारण रुद्रा को परेशानी होने लगी।

तब वरदान ने ही कहा -” रुद्रा तुमने संघर्ष में बहुत साथ दिया, अब तुम्हें इतनी मेहनत करने की जरूरत नहीं है। अभी तक मॉ थीं तो बच्चों और घर की जिम्मेदारियॉ सम्हाल लेती थीं, आराम से चल जाता था। मेरा काम तो जानती हो, पदोन्नति होने से जिम्मेदारियॉ भी बढ़ गई हैं, अक्सर टूर पर भी जाना पड़ता हैं। बच्चों को बिल्कुल समय नहीं दे पाता हूँ । कम से कम तुम्हारा पूरा प्यार और समय तो इन्हें मिलना ही चाहिये।"

“मैं भी यही सोंच रही थी कि अगर पहले की तरह मेरा काम घर तक ही सीमित रहता तो मैं किसी तरह सम्हाल लेती लेकिन नन्हीं सी गुड़िया को नौकरों के सहारे छोड़कर जाने का मेरा भी मन नहीं करता। मैं भी नहीं चाहती कि मेरे बच्चे नौकरों के सहारे पलें लेकिन दो सौ स्त्रियों की आजीविका का प्रश्न है। उनके परिवार इसी कार्य से पलते हैं।"

“मैं विज्ञापन दे देता जो तुम्हारी मशीनों सहित तुम्हारा पूरा व्यापार खरीद ले”

थोड़े दिनों बाद ही मि० सुधीर अग्रवाल ने उसकी सारी समस्या हल कर दी। सुधीर अग्रवाल ने रुद्रा की सभी शर्तें मान ली। रुद्रा की सबसे प्रमुख शर्त थी कि उसके किसी भी कर्मचारी को नौकरी से न निकाला जाये। चूँकि उसके कारखाने में सभी कर्मचारी महिलायें थी तो उनकी सुविधानुसार उन्हें घर में काम ले जाने की भी सुविधा थी। सुधीर अग्रवाल बहुत खुश थे। उन्हें पूरी तरह जमा जमाया कारोबार, मेहनती और ईमानदार कर्मचारी के साथ रुद्रा का इतने दिनों का अनुभव और मार्गदर्शन भी मिला। रुद्रा ने उन्हें वो सभी स्थान दिखाये जहाँ उसके कारखाने का सामान जाता था, सारे दुकानदारों से परिचय भी करा दिया।

सुधीर अग्रवाल की भी एक शर्त थी कि वह हफ्ते में कम से कम एक बार अपने कारखाने में आयेगी और अपने कर्मचारियों की समस्यायें सुनेगी। उन्होंने अपने आफिस में रुद्रा के लिये एक बढ़िया सा केबिन भी बनवा दिया -” जब मन हो आकर बैठना, कभी न समझना यह व्यापार तुम्हारा नहीं है। तुम इसकी मालिक थीं और हमेशा रहोगी। बच्चे बड़े हो जायें तो मेरा हाथ बटाना।” रुद्रा विभोर हो गई चूँकि  सुधीर अग्रवाल उससे उम्र में काफी बड़े थे इसलिये वह उनके प्रस्ताव को मना नहीं कर पाई।

सुधीर अग्रवाल से मिले पैसों से ही उसने फ्लैट खरीदकर किराये पर दे दिया था। बचे हुये पैसे बैंक में जमा कर दिये थे। बैंक का ऋण तो उसने पाँच  साल में ही दे दिया था। समय से पहले ऋण लौटा देने के कारण उसे ब्याज में काफी छूट भी मिली थी।

वह जानती थी कि उसे पैसे की कोई कमी नहीं होगी। जितना है उसमें उसका और उसके बच्चों का पोषण आराम से हो जायेगा। फ्लैट के साथ ही बैंक में पैसे भी है। सुधीर अग्रवाल के साथ काम करने लगेगी। दो प्यारे से बच्चे हैं। अभी मात्र तीस वर्ष उम्र है तमाम मर्द हाथ थामने को तैयार हो जायेंगे।

सब कुछ रहेगा लेकिन अपने हृदय के लिये वरदान कहाँ  से लायेगी जिसके लिये सारी दुनिया ठुकरा दी थी। अपने बच्चों के लिये वो स्नेही पिता कहाँ  से लायेगी जो बच्चों को गर्म हवा से भी बचाने का प्रयत्न करता था।

सुबह से शाम हो गई लेकिन उसके मुँह  में खाना तो दूर पानी की बूँद  भी नहीं गई। चिन्ता और परेशानी ने उसकी भूख और प्यास हर ली थी। बच्चे भी इतने छोटे थे कि उनसे कुछ कहा नहीं जा सकता था। तीन साल की गुड़िया और पॉच साल के बेटे से क्या कहे?

शाम को उसके पास एक फोन आया -”रुद्रा जी, क्या आपको पता है कि आपके पति आपके होते हुये कल दूसरा विवाह कर रहे हैं।"

“कल......?” रुद्रा चौंक गई आज सुबह ही तो वरदान उससे निर्णय लेने को कह रहा था

“यह झूठ है। ऐसा नहीं हो सकता, तुम झूठ बोल रहे हो।"

“यह सच है। आप पता कर सकती हैं कि बुलन्दशहर के रायल होटल में मि० और मिसेज वरदान आहूजा के नाम से कमरा नंबर 308 बुक करवाया गया है या नहीं। मेरी कोई सहायता चाहिये या कुछ पूँछना   हो तो इसी नंबर  पर फोन कीजियेगा, वरना जैसी आपकी मर्जी। रायल होटल का फोन नम्बर भेज रहा हूँ ।"

अभी तक रुद्रा को विश्वास था कि वरदान जो कुछ कहकर गया है, किसी मानसिक परेशानी के कारण कह गया, टूर से लौटने के बाद वह चाहे जैसे भी हो उसकी मानसिक परेशानी को जानकर रहेगी और उसका वरदान फिर पहले जैसा हो जायेगा। परन्तु यह कैसा फोन है, कैसी अनहोनी बात कर रहा है यह व्यक्ति?

थोड़ी देर बाद उसके मैसेज बाक्स में एक मोबाइल नम्बर था।

उसने काँपते हाथों से रायल होटल में फोन किया तो उस अजनबी फोन वाले की बात सच थी। अब तो रुद्रा का धैर्य जवाब दे गया, वह फूट-फूटकर रोने लगी। करीब एक घंटे बाद उसी अजनबी का फोन फिर आया -”अब बताइये रुद्रा जी मैं सही हूँ  या गलत।"

“तुम कौन हो? वह लड़की कौन है?'

“ मैं कौन हूँ , जानकर क्या करेंगी, समझ लीजिये एक शुभ चिन्तक हूँ  आपका। सच्चाई बताना मेरा फर्ज था, अब आपको जो करना हो कीजिये। हाँ, लड़की आपके पति की सेकेट्री है।"

“सुकन्या।"

“हॉ ।"

“लेकिन वह तो बहुत दिनों से आफिस आ ही नहीं रही है।"

वह अजनबी हॅस दिया -” जिस लड़की को आपके पति ने रानी बना दिया है वह सेकेट्री की नौकरी क्यों करेगी?"

उसके बाद फोन बंद हो गया और रुद्रा के लाख प्रयासों के बाद भी दुबारा नहीं खुला।

रुद्रा ने अपने ऑसू पोंछ लिये। अपना कर्तव्य निश्चित किया। सुबह से कुछ न खाने पीने से उसे चक्कर आने शुरू हो गये थे।

बच्चों के लिये खाना बनाया। उन्हें खिलाकर खुद भी खाया। जब परिस्थिति का मुकाबला करना ही है तो भूखे रहकर क्या फायदा? बुलन्दशहर की फ्लाइट के लिये पता किया तो  मालुम हुआ कि एक फ्लाइट जाने वाली है जो चार बजे पहुँच  जायेगी। शायद इसी फ्लाइट से वरदान जा रहे होंगे। टूर पर वरदान अक्सर आफिस से सीधे ही चले जाते  हैं, इसलिए घर से सुबह ही अपना बेग ले जाते हैं| दूसरी फ्लाइट रात एक बजे जायेगी जो सुबह  सात बजे पहुँच जायेगी।"

उसने तैयारी करनी शुरू कर दी – “ तुम्हारे साथ  मुझे रहना तो अब है ही नहीं लेकिन तुम्हें ऐसे नहीं छोडूँगी वरदान आहूजा। देखती हूँ  कि  तुम कैसे शादी करते हो?"

बच्चों से उसने बताया कि वो लोग पापा के पास जा रहे हैं तो बच्चे खुश हो गये,  हालांकि वरदान के इधर कुछ दिनों से व्यवहार से बच्चे कुछ डरे हुये थे इसलिये बेटे ने पूँछ लिया -” मम्मी पापा नाराज तो नहीं होंगे।"

“नहीं बेटा, पापा ने खुद हमें घुमाने के लिये बुलाया है। हम लोगों के लिये जहाज की टिकट भेजी है।"

टैक्सी भी रात में ही बुक करा ली जिससे वह समय से एयरपोर्ट पहुँच सके। उसका अंग अंग जला जा रहा था। सामान वगैरह लेकर जब वह एयरपोर्ट से बाहर निकली तो सवा आठ बज चुका था। वह जल्दी से जल्दी रायल होटल पहुँचना  चाहती थी।

एयर पोर्ट से रायल होटल पहुँचने में उसे एक घंटा और लग गया। जब वह रायल होटल पहुँची  तो उसे पता चला कि मिसेज वरदान तो कल आ गईं थी जबकि मि० वरदान सुबह आये हैं। अभी थोड़ी देर पहले ही यहाँ  से होटल छोड़कर जा चुके हैं।

अब क्या करे रुद्रा? वरदान और सुकन्या कहाँ  मिलेंगे उसे पता ही नहीं है। न ही वो यह जानती है कि शादी कहॉ हो रही है? रुद्रा की ऑखों में ऑसू आ गये। उसका मन कर रहा था कि वह यहीं दहाड़े मारकर रोने लगे।

तभी उसके मोबाइल पर उसी अजनबी का फोन आया -” रुद्रा जी.......।

लेकिन उसके बोलने के पहले ही रुद्रा बोल पड़ी -”वो दोनों रायल होटल में नहीं हैं।"

“आप कहाँ  हैं?"

“रायल होटल में।"

“वो लोग शादी के लिये निकल चुके हैं। आप होटल वाले से बोलिये , वो आपके लिये टैक्सी की व्यवस्था कर  देगा | आप उसी टैक्सी से आर्य समाज मंदिर आ जाइये।"

“ लेकिन आप......"

“ रुद्रा जी समय बहुत कम है, जल्दी कीजिये।” रुद्रा का गुस्से के कारण बुरा हाल हो रहा था। वह सोती हुई गुड़िया को कंधे से लगाये और बेटे का हाथ पकड़े टैक्सी से सीधे आर्य समाज मंदिर पहुँच  गई। वरदान और सुकन्या दूल्हा और दुल्हन के वेश में खड़े फेरे लेने जा रहे थे। रुद्रा और बच्चों को देखकर वरदान जड़ हो गया।

तभी मृत्युंजय पुलिस और मीडिया वालों को लेकर आ गया। उसके मोबाइल में सुकन्या के कई मैसेज थे -” जय, मुझे बचा लो। मेरे बॉस मुझे ब्लैकमेल करके जबरदस्ती अपनी पत्नी के होते हुये मुझसे शादी कर रहे हैं।"

एक मैसेज जो करीब बीस - पच्चीस मिनट पहले लिखा गया था -” जय, जल्दी करो नहीं तो अनर्थ हो जायेगा।

पुलिस और मृत्युंजय के आते ही सुकन्या भागकर उनके पास आ गई, उसने पुलिस अधिकारी से कहा -”सर, आपने सही समय पर आकर मुझे बचा लिया। ये इनकी पत्नी और बच्चे हैं।"

पुलिस के पूँछने पर रुद्रा ने स्वीकार किया कि वो लोग ही वरदान की पत्नी और बच्चे हैं।

सुकन्या की शिकायत पर वरदान को गिरफ्तार कर लिया गया। सुकन्या ने सारे वीडियो, आडियो और तस्वीरों के साथ वह पत्र भी पुलिस को सौंप दिया जो नीलिमा ने आत्महत्या के पूर्व उसको लिखा था।

सारे प्रमाण वरदान के विपरीत थे। समाचार पत्रों और मीडिया में यह खबर छा गई। समाचार पत्रों और टी०वी० के हर चैनल में यह कहानी दिखाई जाने लगी। सुकन्या के पापा बैठे शाम के समाचार देख रहे थे कि अचानक एक अप्रत्याशित समाचार देख कर चौंक गये, उन्होंने वहीं से सुकन्या की मम्मी को आवाज दी, लेकिन वो नहीं आईं -”मुझे नहीं देखना है, आप बार बार वही समाचार देखते हो।"

सुकन्या के पापा रसोई तक गये और उन्हें जबरदस्ती लिवा कर लाये। वो गुस्से में बड़बड़ाती हुईं आकर सोफे पर बैठ गईं -”क्या है, जो मुझे काम करते से जबरदस्ती लिवा लाये।” लेकिन जैसे ही उनकी नजर टी० वी० की ओर गई वो हड़बड़ा गईं। टी०वी० पर नीलिमा, वरदान और सुकन्या की पूरी कहानी दिखाई जा रही थी। उन्होंने घबड़ाकर अपने पति की ओर देखा तो उन्होंने चुपचाप उन्हें टी० वी० की ओर देखने का इशारा किया। वे दोनों लोग चकाचौंध से टी० वी० देख रहे थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वो जो सामने देख रहे हैं, उस घटना का सम्बन्ध उनकी अपनी पुत्री से है और इस बारे में उन्हें कुछ पता नहीं। उन्हें टी० वी० से जानकारी मिल रही है। देखते देखते उन दोनों की ऑखों से गर्व और खुशी के ऑसू गिरने लगे, साथ ही भय से उनकी आत्मा तक कॉप उठी कि इस सबमें वे अपने इकलौते बच्चे को खो देते तो क्या होता?

समाचार समाप्त होने के बाद उन्होंने सुमन जी को फोन किया तो वो अपने को अपराधी समझने लगीं -” यकीन कीजिये भाई साहब मुझे कुछ पता नहीं था वरना मैं नीलिमा को खोकर इन लोगों को यह खतरा कभी न उठाने देती। मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ ।”सुमन जी फूट-फूटकर रो रहीं थीं।

“आप परेशान मत होइए, बच्चे बड़े हो जाते हैं तब हमसे बहुत कुछ छुपाने लगते हैं।” फिर भी जब सुमन जी का रोना बन्द नहीं हुआ तो उन्होंने फोन अपनी पत्नी को दे दिया उन्होंने बड़ी मुश्किल से सुमन जी को चुप कराया और आपस में कुछ तय किया।

कम्पनी के मालिकों और एम० डी० ने साफ कह दिया कि उन्हें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। साथ ही उन लोगों ने वरदान को नौकरी से भी हटा दिया।

कम्पनी के खातों में भी वरदान द्वारा की गई हेरा फेरी सामने आ गई। वरदान पर इतने आरोप सिद्ध होते जा रहे थे कि उसे किसी भी तरह लम्बी सजा से बचाया नहीं जा सकता था। आजीवन कारावास की सजा हो सकती है उसे।

मीडिया वरदान और रुद्रा से बहुत कुछ पूँछना चाहती थी लेकिन दोनों ने चुप्पी साध ली।

बहुत प्रयत्न करने पर रुद्रा ने इतना ही कहा कि उसे अपने पति के चरित्र और ऐसे गंदे कारनामों के साथ ही पैसे के गबन के   बारे में कुछ नहीं मालुम था। अभी तक वो बहुत अच्छे पिता और बेहद प्यार करने वाले पति थे लेकिन यदि बात केवल गबन तक ही होती तो वह अपने पति को फिर भी माफ़ कर देती और जेल से आने के बाद उन्हें अपना लेती| जबकि अब मासूम लड़कियों की अस्मत से खेलने के बाद उन्हें ब्लैकमेल करके आत्महत्या के लिये मजबूर करने वाले व्यक्ति का वह न तो अपने स्वयं मुँह देखना चाहेगी और न अपने  बच्चों पर उसका साया ही  पड़ने देगी।

सुकन्या ने मीडिया के सामने आकर सब कुछ सच बताया कि न तो वह गर्भवती है और न ही वरदान ने उसे ब्लैकमेल किया है क्योंकि वे तस्वीरें उसने खुद वरदान को ब्लैकमेल करने के लिये खींची थी। वरदान से उसका कभी कोई शारीरिक सम्पर्क नहीं हुआ है। नीलिमा की मृत्यु का बदला लेने और वरदान की घिनौनी सच्चाई सबके सामने लाने के लिये उसे यह सब करना पड़ा।

वरदान का वह दोस्त संजय भी गिरफ्तार कर लिया गया जिसने वरदान का साथ दिया था। नीलिमा के पहले की दोनों सेकेट्री रजनी और मेघना जो अभी तक बदनामी के डर से चुप थीं ने भी पुलिस और मीडिया को सच्चाई बताई कि कैसे एक महीने के अंदर ही वरदान से तंग आकर उन्होंने खुद नौकरी छोड़ दी थी।

**( 9 )**

रुद्रा का तो सब कुछ लुट चुका था। जिस वरदान पर अपने से अधिक भरोसा किया था, उसने इस कदर उसके विश्वास को चकनाचूर कर दिया है कि उन टूटी हुई किरचों को समेटने में उसका दामन तार तार हो गया है।

उसे लग रहा था कि यह सब स्वप्न है, अभी ऑख खुलेगी और उसका हॅसता मुस्कराता संसार फिर पहले जैसा हो जायेगा। टी0वी0 और समाचारों को सुनकर इतने सालों बाद मम्मी, पापा और सात्विक आये भी तो वह सबके सामने शर्म से सिर तक न उठा पाई। पापा ने बहुत कहा उससे कि उसे अपने कर्मों की सजा भुगतने दो और मेरे साथ चलो।

मम्मी ने भी अपनी ममता का वास्ता देकर उसे अपने साथ ले जाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन अब किस मुँह  से जा सकती है वो पापा के साथ जब पहले नहीं गई थी। उसका वरदान पर जो गर्व था चूर चूर हो गया था आज। जो भी होगा उसे अपने बच्चों के सहारे खुद भुगतना है।

उसकी ननदों ने तो एक बार आना तक उचित न समझा कि एक बार आकर तसल्ली तो दे देंती बल्कि उन लोगों ने तो यहॉ तक कह दिया कि उसने ही उनके भाई पर ध्यान नहीं दिया तभी उनका भाई भटक गया। कितना संघर्ष और मेहनत की थी इस परिवार के लिये। सुभद्रा से कभी कम नहीं समझा था इन लोगों को। बड़ी ननद की शादी बाद बच्चे के बारे में सोंचा था।

लेकिन किसी का क्या दोष? इन लोगों के लिये तो वरदान के प्यार के कारण किया था और जब वरदान ने न केवल उसके साथ छल ही किया है बल्कि अपराधी भी सिद्ध होता जा रहा है। जितने मुँह  थे, उतनी बातें थी। वह किस किस को जवाब दे और क्या जवाब दे? सच्चाई से कैसे मुँह मोड़ पायेगी?

वरदान ने कितना भी बड़ा अपराध किया होता, उसने क्षमा कर दिया होता लेकिन इतने जघन्य और घृणित अपराध के लिये तो वह उसका नाम तक जीभ पर नहीं लाना चाहती है। दो बहनों का भाई और एक बेटी का पिता होकर क्या उसे एक बार भी ख्याल नहीं आया कि वो लड़कियॉ भी किसी की बहनें और बेटियॉ हैं? उसे यह ख्याल क्यों नहीं आया कि यही कृत्य यदि कोई उसकी बहनों और बेटी के साथ करता तो उस पर क्या बीतती?

उससे बार बार पूँछा जाता है कि क्या वह सचमुच कुछ नहीं जानती थी, वह सबको क्या जवाब दे? फिर उसके उत्तर से पूँछने  वाला संतुष्ट भी तो नहीं होता है।

उसने कम्पनी के मालिकों से कह दिया है कि वह गबन किये गये सारे पैसे देने को तैयार है, उसे वरदान का कुछ नहीं चाहिये। वह अपने बच्चे अपनी कमाई से पालेगी।

वह जितना सोंचती उतना ही वरदान के अपराधों का कद बढ़ता नजर आता। पड़ोसियों ने उसके घर आना छोड़ दिया है। वरदान के पापों का दंड उसे मिल रहा है।

वह तो घर छोड़कर चली जाती लेकिन जब तक वह वरदान की कम्पनी को गबन किये गये सारे पैसे नहीं दे देगी, कहीं नहीं जायेगी। उसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि उसे सबसे मुँह छुपाना पड़े। जो कुछ किया है वरदान ने किया है तो वरदान के कृत्य के लिये वह अपराधियों की तरह मुँह छुपाकर क्यों भागे?

ऐसे ही बैठे सोंच रही थी कि कालबेल की आवाज से उठकर दरवाजा खोलने गई तो चौंक गई। सामने सुकन्या को देखकर उसके मुँह  से आवाज नहीं निकली। वैसे ही खड़ी रह गई। न उसे अंदर आने को कह सकी और न जाने को। फटी फटी ऑखों से देखती रह गई -” मैं अंदर आ जाऊॅ दीदी?"

“दीदी........।” रुद्रा असमंजस में थी -”अब कौन सा नया खेल खेलना चाहती हो? क्या चाहिये मुझसे?"

“मैं आपसे कुछ लेने नहीं आईं हूँ , मेरा उद्देश्य पूरा हो गया है। मैं अपनी नीलिमा को श्रद्धांजलि दे चुकी हूँ ।"

फिर उसने साथ लाये हुये बड़े से बैग की ओर इशारा किया -” इसके अन्दर आज तक वरदान ने जो दिया है, सब है। फ्लैट भी मैंने आपके नाम कर दिया है। उसके कागजात, ज्वैलरी, नगद पैसे  यहाँ  तक जो ड्रेसेज वरदान ने दिलवाई हैं, वो भी इसी में हैं। मैं इन सबका क्या करुँगी , मुझे तो घिन आती है इन सबसे लेकिन अपने लक्ष्य के लिये मुझे घृणित से घृणित कार्य करना स्वीकार था।"

फिर वह रुद्रा के हाथ पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगी -”मैं जानती हूँ  कि आप मुझसे घृणा करती होंगी लेकिन आप बताइये, आप मेरे स्थान पर होतीं तो क्या करतीं? मेरी बहन से भी प्रिय सहेली ने पूरे विश्वास से मुझे सब कुछ बताया था तो उसका बदला तो मुझे लेना ही था, यही मेरा लक्ष्य था। मुझे विश्वास था कि अगर पत्र मिलते ही पुलिस को बता देती तो केस उतना मजबूत नहीं होगा और सबूतों के अभाव में रिश्वत देकर वरदान साफ बच जायेंगे और हो सकता है कि मुझे और नीलिमा को ही झूठा कहकर फॅसा दिया जाये। आज मेरी नीलिमा की आत्मा संतुष्ट हो गई है। इससे बड़ी दौलत मेरे लिये कुछ भी नहीं है।"

रुद्रा कुछ बोल नहीं पा रही थी -” आपके लिये मुझे सचमुच बहुत दुख हो रहा है लेकिन क्या यह उचित नहीं हुआ कि वरदान का घृणित रूप उजागर हो गया। वरना क्या फर्क पड़ता वरदान के लिये रजनी, मेघना, नीलिमा, सुकन्या जाती रहेंगी और दूसरी लड़कियाँ शिकार बनती रहेंगी। मेरी नीलिमा तो वापस नहीं आयेगी लेकिन न जाने कितनी नीलिमा शिकार बनने से बच गईं।"

सुकन्या ने अपने ऑसू पोंछते हुये कहा -”रजनी और मेघना के सामने कोई मजबूरी नहीं थी इसलिये उन्होंने तुरन्त नौकरी छोड़ दी थी लेकिन नीलिमा को तो इतना मजबूर कर दिया गया था कि उसने बिना किसी को बताये मृत्यु का वरण कर लिया। बहुत प्यार करती थी वो अपनी मम्मी और भाई को।"

रुद्रा मूर्तिवत बैठी रह गई, उसमें सुकन्या की किसी बात का जवाब देने की हिम्मत नहीं थी। सुकन्या उठकर खड़ी हो गई -”चलती हूँ दीदी, हो सके तो क्षमा कर देना।"

रुद्रा में इतनी शक्ति ही नहीं बची थी कि वह उठकर गेट बन्द कर सके। वह तो फटी फटी ऑखों से गेट से बाहर निकलती सुकन्या को देखे जा रही थी।

**( 10 एवं  अन्तिम )**

सुकन्या अपने छोटे से कमरे से सामान समेट कर एयरबैग और अटैची में रखती जा रही थी। साथ ही सोंचती जा रही थी कि मम्मी पापा तो इतने नाराज हैं कि इतना सब होने के बाद एक बार भी फोन नहीं किया। वह फोन करती है तो फोन काट देते हैं। वैसे कल मृत्युंजय ने उससे कहा था कि वह शाम को उसे लेने आयेगा। इसीलिये वह जल्दी जल्दी सामान समेट रही है ताकि वह मृत्युंजय और सुमन चाची से बिना मिले चुपचाप चली जाये| वह अब किसी से मिलना नहीं चाहती थी | फ्लैट छोड़ने के बाद मृत्युंजय के कहने से सुरक्षा की दृष्टि से वह  इस कमरे में रह  रही थी ।

सुकन्या की ऑखों में बार बार ऑसू आ रहे थे। अपना लक्ष्य सफल होने से खुश तो बहुत थी लेकिन भीतर ही भीतर कुछ चुभ भी रहा था। सामान रखते रखते अचानक नीलिमा की तस्वीर हाथ में  आ गयी तो वह उसे ध्यान से देखने लगी- “ तुम खुश हो ना नीलू, वरदान आहूजा पूरी तरह से बर्बाद हो गये हैं| अब कोई नीलिमा वरदान आहूजा के कारण आत्महत्या नहीं करेगी| उनकी पत्नी, बच्चे, परिवार , आत्मीय लोग उनसे घृणा कर रहे हैं| मैं जानती हूँ नीलू की तुम मुझे और जय को साथ देखना चाहती थीं| मुझे अपनी भाभी बनाना तुम्हारा सपना था और सच तो यह है कि मैं भी जय को प्यार करती हूँ लेकिन उनके जीवन में आने वाली भाग्यशाली लडकी मैं नहीं हूँ | उन्हें कोई भी अच्छी लडकी मिल जायेगी जो उनको बहुत खुश रखेगी | मैं जहाँ रहूँगी जय की खुशियों की ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी |”

उसे पता था कि मृत्युंजय शाम को आयेगा इसलिए उसने दरवाजा भी नहीं बन्द किया था। तभी दरवाजे को खोलकर चुपचाप कोई अंदर आया और बिना जरा भी आवाज किये सुकन्या के पीछे आकर  खड़ा हो गया।

सुकन्या ने तस्वीर रखकर  अटैची बन्द की और जैसे ही मुड़ी, पीछे खड़े व्यक्ति को देखकर हतप्रभ रह गई। दोनों एक-दूसरे को देख रहे थे, ऑंखें पूरी तरह से भीगी थीं - ”कहॉ जा रही हो?"

“मुझे मत रोको जय। मेरा उद्देश्य सफल हो गया और बिना तुम्हारी सहायता शायद मैं भी अपने लक्ष्य में इतनी आसानी से सफल न हो पाती। हमने नीलिमा को सच्ची श्रद्धांजलि दी है, उसकी आत्मा बहुत खुश होगी।"

“  नीलिमा को दी गई श्रद्धांजलि अधूरी है। उसका एक सपना भी तो था, उसे कौन पूरा करेगा? उसे पूरा किये बिना नीलू को तुम्हारे द्वारा दी गई श्रद्धांजलि अधूरी रह जायेगी | जब उसकी आत्मा की शांति के लिये अपना जीवन, आत्मसम्मान यहाँ तक स्त्री की सबसे कीमती वस्तु दाँव पर लगाकर इतना किया है तो उसकी दूसरी अधूरी इच्छा भी तो  पूरी करो|  "

“नहीं जय, ऐसा मत कहो तुमने वो सारे वीडियो, आडियो और तस्वीरें देखी और सुनी हैं जिसमें मैं वरदान के साथ कैसी अवस्था में थी। परिस्थिति कुछ भी रही हो लेकिन कोई भी व्यक्ति ऐसी लड़की को सही नहीं कहेगा जिसने किसी गैर मर्द से ऐसे सम्बन्ध रखे हों।'

“ यह सब मुझे क्यों बता रही हो? अपनी आत्मा को कुचलकर, अपनी जिन्दगी को दॉव पर लगाकर तुमने दोस्ती के नाम पर मेरी बहन के लिये जो किया है, वह दुनिया की कोई भी लड़की नहीं कर सकती थी। अपनी जिन्दगी और अपनी अस्मिता दॉव पर लगाकर तुमने वरदान का सच दुनिया के सामने उजागर किया है, वरना न जाने कब तक और कितनी लड़कियॉ वरदान के हाथों बरबाद होकर आत्महत्या करती रहती। तुमने केवल नीलू को श्रद्धान्जलि नहीं दी है बल्कि उन तमाम लड़कियों को भी बचाया है जो आगे चलकर वरदान की कुत्सा का शिकार होने वाली थीं। मैं तुम पर जितना भी गर्व करूँ , कम है। फिर इतनी बहादुर होकर ऐसे कायरों की तरह मुँह छुपाकर क्यों जा रही हो, मुझे छोड़कर।"

“मैंने जो कुछ किया अपनी नीलिमा के लिये किया है, तुम पर कोई अहसान नहीं किया है। इस प्रयत्न में अगर मेरे प्राण भी चले जाते तो मुझे परवाह नहीं थी।"

“मैं भी तुम पर कोई अहसान नहीं कर रहा। कब से तुमसे प्यार कर रहा हूँ , खुद नहीं जानता लेकिन मेरे सपनों में हमेशा एक ही लड़की रही, वह तुम थी।”

मृत्युंजय की ऑखों में सपने तैरने लगे -” कभी कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी। तुम्हारी और नीलिमा की मीठी नोक झोंक के बावजूद तुम्हारे अंदर छुपे प्यार से कभी अनजान नहीं रहा। सोंचता था कि पहले पढ़ाई पूरी करके कैरियर बना लूँ फिर पहले तुमसे तुमको माँग लूँगा । अंकल और आंटी को मनाने के लिये तो नीलू और मम्मी थीं ही, वो दोनों तो यह सुनकर वैसे ही खुशी से पागल हो जातीं। फिर पहले हम नीलू की शादी करते इसके बाद अपनी।” मृत्युंजय की ऑंखें भर आईं -” लेकिन हर देखा हुआ ख्वाब पूरा नहीं हो पाता, जिन्दगी और किस्मत अपना काम करती है। नीलिमा की किस्मत में ऐसे ही जाना लिखा था। अब हम दोनों का कर्तव्य है कि अपनी नीलू का सपना पूरा करके इस अधूरी श्रद्धांजलि को पूर्ण श्रद्धांजलि बनाये, जिससे वह जहाँ भी हो हमें एक साथ देखकर खुश और संतुष्ट हो सके |”

“नहीं जय मुझे जाने दो। अभी सब कुछ नया है। जबकि यह ज्वार उतरने के बाद यही प्यार तुम्हें बोझ लगने लगेगा और वो सारे वीडियो एवं तस्वीरें तुम्हें मेरी विवशता और नाटक न लगकर सच लगने लगेंगी और तुम सब कुछ भूलकर सोंचने लगोगे कि मेरे सचमुच वरदान से अवैध सम्बन्ध थे। तब क्या करुँगी  मैं? कैसे सह पाऊॅगी ? इससे अच्छा है मैं अभी सबसे दूर चली जाऊँ।"

“ऐसा कभी नहीं होगा, तुम्हें क्या मुझ पर जरा भी विश्वास नहीं है। जब मैं सब कुछ जानता हूँ तो ऐसी गन्दी और बेहूदी बात तुम्हें कैसे कह सकता हूँ ?"

“मैंने भी तुम्हें बहुत प्यार किया है और आज जानकर बहुत खुश हूँ कि तुमने भी मुझसे प्यार किया है। मुझे इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये। मुझे सबसे दूर जाने दो, मैं तुम्हारे प्यार और नीलिमा की यादों के सहारे कहीं भी जिन्दगी बिता लूँगी। तुम किसी भी अच्छी लड़की को अपनाकर सुख से रहना।” सुकन्या की ऑखों में बसे ऑसू कपोलो पर लुढ़क आये, जिन्हें उसने तुरन्त पोंछ दिया।

“तुम जाना चाहती हो ना, इस अधूरी श्रद्धांजलि को पूर्ण नहीं बनाना चाहती तो कोई बात नहीं जाओ।"

मुस्कराकर मृत्युंजय आगे बढ़ा और उसने सुकन्या को अपनी बॉहों के घेरे में बॉध लिया -”इन बॉहों की जंजीरों को तोड़कर जा सकती हो तो जाओ, मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं।"

अब सुकन्या मृत्युंजय के सीने से लगकर अपने ऑसुओं से उसके सीने की शर्ट भिगोने लगी। मृत्युंजय ने भी सुकन्या के सिर पर अपना चेहरा रखकर ऑखें बंद कर ली। बॉहों का घेरा कसता जा रहा था सुकन्या की पीठ पर भी और मृत्युंजय की पीठ पर भी।

एक बार फिर दरवाजा धीरे से बिना आहट के खुला और छै: जोड़ी ऑंखें इस खूबसूरत नजारे को आकर देखने लगीं। जब दोनों की ऑंखें खुलीं तो दोनों हड़बड़ाकर एक दूसरे से अलग हो गये।

कमरे में तीन लोगों के ठहाके गूँज रहे थे और दो व्यक्ति शर्माये हुये खड़े थे। कभी कभी नीची नजर से एक दूसरे को देख भी लेते थे।

 श्रद्धांजलि

**( 1 )**

**विवाह** का प्रसन्नता एवं उमंग भरा अवसर । नीरजा की दीदी के बगल में खड़ी रुद्रा ने जब दूल्हे के साथ खड़े वरदान को देखा तो जैसे उसका दिल अवश हो गया। नीरजा की बहन की शादी में परिहास, शरारत और मस्ती के लिये देखे गये अनेक स्वप्न, तमाम योजनायें धराशाई हो गईं, वह तो मुग्धा बन बार बार वरदान की मुस्कराती ऑखों से छिपती फिर रही थी।

“कोई हर पल उसे निहार रहा है”, इस बात ने उसकी स्वाभाविकता छीन ली थी ।

जूते चुराने की योजनायें बन रहीं थीं। सभी सहेलियॉ और बहनें जीजाजी के जूते ” कैसे मिलें ” यह सोंचने में व्यस्त थीं, इसी सम्बन्ध में आपस में बात कर रही थीं लेकिन वह तो जैसे कुछ न सुन रही थी और न ही समझ रही थी। वह क्या करे, उसका तो अपना मन ही चोरी हो गया था।

“क्या बात है रुद्रा, हम लोग जूते चुराने की योजना बना रहे हैं और तुम कुछ बोल नहीं रही हो.?”

“लगता है हमारी रुद्रा का दिल बारात में किसी ने चुरा लिया है।” नीरजा ने चुटकी ली।

“तुम लोग भी....... ।“रुद्रा शर्मा गई –” कुछ भी बोलती रहती हो। मेरा दिल इतना आवारा नहीं है जो बिना मेरी मर्जी के इधर उधर भागता  फिरेगा, वह  मेरे पास है, निश्चिंत रहो।“

“फिर जीजाजी के जूते ढ़ूढ़ने में हमारी मदद करो। अंदर बाहर सब जगह देख लिया, मिल ही नहीं रहे हैं।“ लड़कियों का मायूस स्वर।

“अच्छा, तुम लोग एक बार फिर से अंदर अच्छी तरह देखो, मैं बाहर देखती हूँ ।“

“हॉ यार, जूते तो हर हाल में ढ़ूंढने ही पड़ेंगे, वरना हम हार जायेगे। बात नेग की नहीं है, हम सबकी प्रतिष्ठा की है।”नीरजा का उलझन भरा स्वर।

“ऐसे कैसे हार जायेंगे हम? जूते तो हम ढ़ूँढ़ कर रहेंगे। तुम बाहर देखो रुद्रा, हम भीतर देखते हैं।” एक दूसरी लड़की ने कहा।

जैसे ही रुद्रा बाहर आई सामने ही वरदान दिख गया। उसे देखकर ही मुस्कराते हुये पास आ गया – ”भइया के जूते ढ़ूढ़ रही हैं ना?”रुद्रा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

“लगता है आपके लिये अपने ही दोस्तों और भाइयों से गद्दारी करनी पड़ेगी। आप यहीं रुकिये, मैं अभी आता हूँ।” वही मुस्कराती चमकदार ऑखें।

थोड़ी देर बाद एक अखबार में लिपटे दूल्हे के जूते लिये वरदान सामने था –” ये लीजिये और जल्दी से अंदर जाइये और थोड़ा सावधानी से जाइयेगा, किसी ने देख लिया तो मेरी मुसीबत हो जायेगी।” रुद्रा ने मुस्कराकर वरदान को देखा और दुपट्टे में जूते छुपाये विजयी मुस्कान लिये अंदर आ गई।

“मिले?”रुद्रा ने बाहर से आकर पूँछा।

“नहीं यार, ”हताशा भरा स्वर-” लड़के देखो कैसे व्यंग्य से मुस्करा रहे हैं?”

“मुस्कराने दो,थोड़ी देर बाद इन सबकी मुस्कराहट का पता भी नहीं चलेगा|” रुद्रा मुस्करा रही थी |

“ कैसे?” सब एक साथ बोल पडीं |

“ अभी पता चल जायेगा कि किसमें कितना दम है? ये लो।“

रुद्रा ने जूते निकालकर सबके सामने रख दिये तो सहेलियाँ खुशी से उछल पड़ीं –“अरे वाह, कहाँ से मिले तुम्हें?”

“ तुम लोग आम खाओ, पेड़ गिनने के चक्कर में न पड़ो।” एक बार फिर वरदान की सूरत नयनों में उतर आई।

मण्डप में दोस्तों के साथ बैठे वरदान की मन्द स्मित रुद्रा को बार बार गुदगुदा रही थी। मूक संभाषण, नजरों का आदान प्रदान। जूतों के नेग के समय दोस्तों के साथ वरदान भी दिखावे के लिये अड़ गया – ”तुम लोगों के पास भइया के जूते हैं ही नहीं, नेग किस बात का? अगर हैं तो दिखाओ।“

लड़कियाँ विजय के उन्माद में इठला रहीं थीं –”दिखा तो देंगे लेकिन अभी तो हम केवल नेग माँग रहे हैं फिर सभी दोस्तों को जूतों की मुँह दिखाई में एक एक हजार रुपये देने पड़ेंगे।“

“हमारी सुरक्षा व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि तुम लोगों को जूते मिल ही नहीं पायेंगे, इसलिये बहानेबाजी है यह सब।“

“आप लोग हमारी शर्त मानने को तैयार हों तो हम दूर से अभी दिखा सकते हैं, लेकिन मिलेंगे तभी जब हमारा हिसाब बराबर हो जायेगा।“

“हमें मंजूर है।” सभी ने एक स्वर में कहा।

और लड़कियों ने जब मुस्कराते हुये एक डिब्बा खोलकर जूते दिखा दिये तो सबके साथ नीरजा के जीजाजी भी चौक पड़े - ”हममें से किसी ने गद्दारी की है, कौन है वो गद्दार?” लड़के एक दूसरे का मुँह देख रहे थे। आशा के विपरीत वे सब बाजी हार चुके थे।

“कौन हो सकता है? सभी तो यहीं हैं।” नीरजा के जीजाजी ने तुरन्त नेग के पैसे निकालकर दे दिये। सभी दोस्तों ने जब पैसे दिये तो नीरजा ने मना कर दिया -”यह तो  केवल एक परिहास था। हमें आपसे पैसे नहीं चाहिये, केवल शुभ अवसर का नेग चाहिये था, वह जीजाजी ने दे दिया है।"

“यह कैसे हो सकता है? हम लोग शर्त हार चुके हैं।” लड़के मान नहीं रहे थे।

लड़कियाँ इतरा रहीं थीं – तब तो हम यह पैसे और भी नहीं ले सकते ताकि आप सबको अपनी यह हार हमेशा याद रहे कि कोई तो होगा जो हमारे नैन बाणों से घायल होकर आपसे गद्दारी कर बैठा है।“

विदाई की भीड़ में किसी ने रुद्रा की  हथेली के मध्य कुछ दबा दिया।उसने  अलग ले जाकर देखा तो छोटे से टुकड़े में जैसे पूरा संसार समा गया था – ”आपके जीवन में हमेशा के लिये प्रवेश की अनुमति चाहता हूँ। उत्तर ”हाँ” या ”ना” में अभी दीजिये। नीचे वरदान ने अपना मोबाइल नम्बर लिख दिया था।

रुद्रा के पास तो मोबाइल था ही नहीं हालांकि पापा ने वायदा किया था कि यदि इस बार उसके अच्छे नम्बर आयेंगे तो वह उसे मोबाइल दिलवा देंगे। रुद्रा ने ऑखों के काजल वाली पेंसिल से उसी कागज पर ”हॉ” लिखकर अपने स्कूल का नाम भी लिख दिया। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे इस छोटे से टुकड़े की वह वर्षों से प्रतीक्षा कर रही है।

दूसरे दिन छुट्टी के समय स्कूल के गेट पर वरदान को देखकर मुस्करा दी क्योंकि उसे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास था कि आज वरदान जरूर आयेगा, इसलिये मम्मी के मना करने के बाद भी वह आज स्कूल आ गई थी। सुबह मम्मी कितना मना कर रही थीं -”इतने दिन से शादी की भाग दौड़ में कितना थक गई है, आज स्कूल जाने की क्या जरूरत है? एक दिन आराम कर लो।“

लेकिन वह न मानी –”वैसे भी बहुत छुट्टियॉ हो गई हैं मम्मी नीरजा भी अभी कई दिन तक नहीं जा पायेगी तो मैं ही चली जाती हूँ।“

“जो तुम्हारी मर्जी हो करो।"

नित्य ही स्कूल के गेट पर वरदान को खड़े देखकर रुद्रा प्रसन्नता से खिल उठती। कभी वरदान के आग्रह से मजबूर होकर स्कूल का नागा भी कर देती। नीरजा के समझाने का भी कोई असर न पड़ता - ”उपस्थिति कम हो गई तो स्कूल वाले इम्तहान नहीं देने देंगे, उस समय वरदान का इश्क काम नहीं आयेगा।"

“मेरी उपस्थिति लगवा दिया करो।” नीरजा के लिये रोज यह कर पाना असम्भव था क्योंकि कोई टीचर से कह देगा तो उसकी भी मुसीबत हो जायेगी, फिर भी वो कभी कभी रुद्रा की उपस्थिति लगवा ही देती।

रुद्रा और वरदान के मध्य सम्बन्धों की डोर मजबूत होने लगी। रुद्रा का जब मन होता वह अपने लैंड लाइन से वरदान के मोबाइल पर बात कर लेती लेकिन वरदान ऐसा नहीं कर पाता था। वह रुद्रा  से तभी बात कर पाता जब रुद्रा स्वयं फोन करे |

 इसलिए  उसने कहा –” मैं तुम्हें एक मोबाइल उपहार में दे देता हूँ, जिससे जब मेरा मन हो बात तो कर पाऊँगा।“

“नहीं वरदान, मैं उसे कैसे छुपा पाऊँगी, कुछ दिन रुक जाओ, रिजल्ट बाद तो पापा मुझे मोबाइल ला ही देंगे।” प्यार के झूले में दोनों आने वाले खतरे से अनजान सुख से झूल रहे थे।

रुद्रा की परीक्षायें हो गईं थी, अब वह अपने रिजल्ट का इंतजार कर रही थी। उसे मालुम नहीं था कि परीक्षाओं के पहले ही अजय सिंह ने रुद्रा और वरदान को एक साथ देख लिया था। पहले तो सोंचा कि बच्चे साथ पढ़ेंगे तो हो सकता है कि मात्र दोस्ती हो इसलिये उन्होने बिना किसी से कुछ कहे दोनों के सम्बन्ध में पूरा पता लगाया। यहाँ तक कि वरदान के घर - परिवार के बारे में भी पूरी जानकारी कर ली |

रुद्रा की मम्मी महिमा सिंह को जब यह बात पता चली तो वो  गुस्से से पागल सी  हो गईं –”मैं अभी बुलाकर उससे पूँछती हूँ कि यह सब क्या है?”

“बच्चे के साथ बच्चा बनने की बेवकूफी मत करो, शान्ति से काम लो। तुम परेशान मत हो| मेरा विश्वास करो मैं सब ठीक कर दूँगा।“

“क्या करेंगे आप? यही सब करने के  लिये हम इसे स्कूल भेजते हैं क्या? कोई जरूरत नहीं आगे पढ़ाने की। यह लडकी इस लायक है ही नहीं कि उच्च शिक्षा प्राप्त करे | ”महिमा सिंह क्रोध से उबल रहीं थी –" आप के दुलार ने ही इसे बिगाड़ दिया है। लड़का देखिये और तुरन्त शादी करके फुरसत कीजिये।“

अजय सिंह ने महिमा को कन्धे से पकड़ कर पास बैठाया –” तुम बहुत जल्दी आवेश में आ जाती महिमा और आवेश में लिये गये फैसले हमेशा गलत ही सिद्ध होते हैं|  हम लोग तो उसके माता पिता हैं, उसकी जिन्दगी कैसे बरबाद कर सकते हैं? यह उम्र ही ऐसी होती है कि बच्चों को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता है लेकिन हमें समझदारी से काम  लेना होगा  उसने गलती की है लेकिन वह इतनी बड़ी नहीं है कि हम उसे सुधार न सकें। इस नादान उमर में न तो हम उसकी शादी कर सकते हैं और न ही उसकी पढ़ाई छुड़वाकर उसका भविष्य बरबाद कर सकते हैं।“

“फिर क्या करें? मुझे इस लड़की से ऐसी उम्मीद बिल्कुल नहीं थी ” महिमा का उदास स्वर।

“देखो महिमा”, अजय सिंह पत्नी को बड़े धैर्य से समझा रहे थे –”हमें बिना अपना व्यवहार बदले बुद्धिमानी से काम लेना होगा। उसे पता नहीं चलना चाहिये कि हम सब कुछ जान गये हैं। उसका रिजल्ट आ जाने दो, इसके बाद कालेज की पढ़ाई के लिये इसे मैं अपनी दीदी और जीजाजी के पास भेज दूँगा। मैंने उनसे बात कर ली है।"

“आपने सचमुच बहुत सही सोंचा है। एक बार रुद्रा यहाँ से चली जायेगी तो थोड़े दिन में भूल जायेगी उस लड़के को।“

“और क्या? केवल उम्र का आकर्षण है । नई जगह, नये दोस्त, नई राहें सामने होंगी तो सारा बचपना स्वतः ही समाप्त हो जायेगा और एक दिन तुम देख लेना कि मेरी बेटी मेरी तरह बैंक मैनेजर बनेगी। बस तुम अपना व्यवहार सामान्य रखना। गुस्से और आवेश में तुम कोई गड़बड़ न कर देना, रुद्रा को ज़रा भी पता नहीं चलना चाहिए वरना हमारी सारी योजना बेकार हो जायेगी | “

“मुझे तो बहुत गुस्सा आ रहा है। मन कर रहा है कि थप्पड़ मार मार कर चेहरा लाल कर दूँ। हमारे प्यार का यह फल दिया है इसने?”

“अपने अंदर की क्षत्राणी को शान्त करो महिमा।”अजय सिंह ने हँसते हुये कहा – मैंने कहा है ना तुमसे कि मुझ पर भरोसा रखो मैं सब ठीक कर दूँगा।"

रुद्रा को कुछ पता न था, वह तो रंगीन सपनों में मग्न थी।उसके लिये दुनिया बहुत सुन्दर और प्यारी थी| उसके तो हृदय में इस समय वरदान के प्यार का सागर लहरा रहा था। उसका रिजल्ट आया तो परिणाम आशा के अनुरूप नहीं था। वह पास तो हो गई थी लेकिन उसके नम्बर बहुत कम आये थे। हाई स्कूल में उसके 78% नम्बर आये थे लेकिन इस बार उसके सिर्फ 63% नम्बर आये थे। पापा मम्मी ने योजनानुसार कुछ नहीं कहा - ”कोई बात नहीं बेटा, बी0एस0सी0 में अच्छे नम्बर लाना। जो बीत गया भूलकर आगे बढ़ो। सोंचो कहीं न कहीं तुमने कुछ गलती की होगी, इसलिये आगे अपनी गलती सुधारने की जिम्मेदारी तुम्हारी ही है। तुम जानती हो ना कि तुम्हें बैंक का उच्च अधिकारी बननाहै|”

“जी,   पापा, मैं अगली बार अच्छे नम्बर लाऊॅगी।"

रुद्रा जानती थी कि सचमुच वरदान के प्यार में पड़कर उसने पढ़ाई पर बहुत कम ध्यान दिया था। वह बहुत कम स्कूल जाती थी और जब जाती भी थी तो उसका पढ़ने में मन ही नहीं लगता था। जब भी पढ़ने बैठती, वरदान की सूरत और बातें उसके कानों में गूँजने लगतीं। हर वक्त वह वरदान के ख्यालों में डूबी रहती।

उसने निश्चय किया कि अब वह अपनी पढ़ाई पर ध्यान देगी वरना उसका भविष्य बरबाद हो जायेगा। रिजल्ट के चौथे दिन उसकी अठ्ठारहवीं वर्षगाँठ थी। अपने कम नम्बरों के कारण वह बहुत शर्मिन्दा थी, उसकी सभी सहेलियों के अच्छे नम्बर आये थे, इसलिये उसने अपना जन्मदिन मनाने से इंकार कर दिया, लेकिन मम्मी पापा नहीं माने -” एक छोटी सी असफलता से इतना दुखी नहीं होते।"

“लेकिन मम्मी हर आने वाला मेहमान सबसे पहले मेरे नम्बर पूंछेगा तो मैं क्या उत्तर दूँगी?"

“ मैं  तुम्हारी परेशानी समझती हूँ इसीलिये तो  मैं केवल तुम्हारी सहेलियों को बुला रहीं हूँ ।” रुद्रा को असमंजस में देखकर उन्होंने फिर कहा -”अच्छा ठीक है, तुम किसी को न कहना, मैं सबको फोन कर दूँगी ।"

  उसे अपनी सहेलियों के सामने भी शर्मिन्दगी महसूस हो रही थी। अपने ग्रुप में उसके हमेशा सबसे  ज्यादा नम्बर आया करते थे। इसलिये एकाध ने तो कह भी दिया -”यार, तूने तो इश्क के चक्कर में अपनी पढ़ाई ही बरबाद कर डाली।''

नीरजा ने भी कहा - '' कहती थी तुझसे कि पहले पढ़ाई कर ले फिर इश्क कर लेना लेकिन तू सुनती ही नहीं थी बिल्कुल पागल हो गई थी।''

लेकिन तभी मम्मी आ गईं और बात वहीं खतम हो गई। पार्टी में केवल उसकी कुछ सहेलियों के अलावा उसके भाई बहन और मम्मी पापा ही थे| केक कटने के बाद मम्मी पापा यह कहते  हुए चले – “ बच्चों अब तुम लोग मस्ती करो |” इतनी सारी लडकियों  के बीच में अकेला होने के कारण भाई भी जल्दी चला गया |

पार्टी समाप्त के बाद जब सब लडकियाँ चली गईं तो रुद्रा आकर बिस्तर पर लेट गई, वह खुश तो थी लेकिन साथ ही सोंचती भी जा रही थी कि सचमुच अगर उसने अपने पर नियंत्रण न रखा तो उसके साथ ही वरदान की भी जिन्दगी बर्बाद हो जायेगी| अभी दोंनों की पढाई का समय है, प्यार करने के लिये तो पूरी जिन्दगी पडी है |

 रात को सोते समय छोटी बहन सुभद्रा ने कहा -”दीदी, आप चली जाओगी तो मैं तुम्हारे बिना अकेले कैसे रहूँगी ?"

'' क्यों, मैं कहाँ जा रही हूँ |”रुद्रा चौंक गई।

“ तुमको पढ़ने के लिये बुआ के यहॉ बाहर भेजा जा रहा है। अभी पापा से मम्मी कह रही थीं कि अब तो रिजल्ट भी आ गया है। जल्दी से जल्दी इसे यहाँ से ले जाकर छोड़ आओ, नहीं तो मैं कुछ कर बैठूँगी। मुझसे नाटक और दिखावा नहीं होता। कुछ उल्टा सीधा कर आई तो कहीं के नहीं रहेंगे हम, दोनों छोटे बच्चों पर भी गलत असर पढ़ेगा।" सुभद्रा ने उसे  बताया|

रुद्रा समझ गई कि घर वालों को वरदान के बारे में पता चल गया है।

“ मैं कहीं नहीं जाऊॅगी, तू चिन्ता न कर, चुपचाप सो जा।"

रुद्रा ने बहन को तो चुप कराकर सुला दिया लेकिन उसका मस्तिष्क उलझन से भर गया। अब क्या करे? वह जानती थी कि एक बार अगर वह यहाँ  से चली गई तो वरदान को कभी नहीं पा पायेगी। बुआ और फूफा के कठोर अनुशासन में उनके अपने बच्चे छटपटाते रहते हैं तब वह क्या कर पायेगी? और पापा ने तो उन्हें सब बताकर कड़ी निगरानी के लिये कह दिया होगा, उसके पापा ने तो उसे कभी कुछ नहीं रोका था, अपने पापा की बेहद लाड़ली है वो। पापा ने आज तक उसकी कोई इच्छा अधूरी नहीं रहने दी है .

बुआ के घर के परंपरावादी और घुटन भरे माहौल में तो उसका दम ही घुट जायेगा, साथ ही यह भी जानती थी कि रोने गिड़गिड़ाने का कोई असर नहीं होगा।

दूसरे दिन उसने जब नीरजा के घर जाने को कहा तो पहले तो महिमा ने मना कर दिया -” कोई जरूरत नहीं, अभी कल तो आई थी नीरजा, आज क्या काम पड़ गया?"

“ मम्मी, नीरजा की दीदी आईं हैं, कल चली जायेंगी। उन्होंने मिलने के लिये बुलाया है।"

“ठीक है लेकिन जल्दी आ जाना और पहुँचनें के बाद मुझे फोन कर देना।"

नीरजा के यहाँ जाना कोई नई बात नहीं थी, बचपन से एक साथ पढ़ी हैं। महिमा और अजय उनके पूरे परिवार को जानते थे, हालांकि उन लोगों से घनिष्ठता नहीं थी। नीरजा भी जब आती थी पूरे दिन रहकर शाम तक घर जाती थी।

नीरजा के घर में वह नीरजा के समक्ष बिखर गई -”तू बता, मैं क्या करूँ , ये लोग मुझसे वरदान को हमेशा के लिये छुड़वा देंगे। मैं वरदान को तो नहीं छोड़ सकती, दुनिया भले छोड़ दूँ ।"

सुनकर नीरजा भी अवाक रह गई, उसे भी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? उसने कई बार रुद्रा को समझाने का प्रयत्न किया -”रुद्रा, इस तरह वरदान के साथ किसी दिन तुम्हारे पापा, मम्मी या रिश्तेदार ने देख लिया तो मुसीबत में पड़ सकती हो"

लेकिन रुद्रा बेफिक्री से हॅस देती -” कुछ नहीं होगा यार, पापा भी जानते हैं कि लड़के भी दोस्त होते हैं और फिर प्यार किये बिना तुम्हें कैसे पता चलेगा कि दिल की बेचैनी कैसी होती है? एक बार करके देखो।"

“मुझे अपनी पढ़ाई और कैरियर पहले देखना है, यह सब तुम्हें ही मुबारक हो।"

लेकिन वह यह सब आज रुद्रा से नहीं कह सकती। वह जानती थी कि वह रुद्रा के लिये कुछ नहीं कर पायेगी लेकिन इस समय उसे तसल्ली देना बहुत जरूरी था -”क्या वरदान भी तुम्हें उतना ही चाहता है जितना तुम? क्या वह जीवन भर तुम्हारा साथ देगा?"

“हाँ ।” रुद्रा को अपने प्यार पर पूरा भरोसा था।

“तब तो एक ही उपाय है कि तुम लोग शादी कर लो तो कोई तुम्हारा कुछ नहीं कर पायेगा। तुम अठ्ठारह साल की हो चुकी हो। कानूनी रूप से बालिग हो तुम दोनों।

“वरदान अभी शादी नहीं कर सकता। उसका भी अभी बी०एस०सी० का रिजल्ट आया है। उस पर बहुत जिम्मेदारी हैं। उसे पहले नौकरी करके दो बहनों की शादी करनी है। अभी तो उसकी मम्मी की पेंशन से घर चलता है। अपने खर्चे और पढ़ाई के लिये वरदान ट्यूशन पढ़ाता है।"

“मेरी समझ में तो यही एक रास्ता है  तुम्हारी बुआ की घूरती नज़रों और तेज स्वभाव से तो मैं भी डरती हूँ । इसीलिये जब तुम्हारी बुआ आती हैं मैं तुम्हारे घर नहीं आती हूँ। तुम वरदान से बात करो शायद कुछ रास्ता निकल आये।"

वरदान के मोबाईल पर जगह बताते हुए उसने संदेश भेजा कि आधे घंटे के अन्दर वह आ रही है , बहुत जरूरी काम है और मिलकर जब रुद्रा ने पूरी बात बताई तो वह भी घबड़ा गया -” अब क्या करें?"

“मुझे भी लगता है कि नीरजा का बताया रास्ता ही सही है। या तो मुझे अपना लो या हमेशा के लिये भूल जाओ। अपना निर्णय बताओ, आज हमारे प्यार की परीक्षा की घड़ी है।"

“क्या करोगी तुम?"

“कुछ भी...... लेकिन न तो तुम्हारे पास दुबारा गिड़गिड़ाने आऊॅगी और न ही पापा का दिया वनवास स्वीकार करूंगी ।” रुद्रा के चेहरे पर आंसुओं के सूखे निशान के साथ अपार दृढ़ता देखकर सहम गया वरदान।

उसने रुद्रा को गले से लगा लिया -”जो होगा उसका मिलकर मुकाबला करेंगे। तुम्हें हमेशा के लिये खोने की हिम्मत नहीं है मुझमें।"

                                          ( 2 )

तीन दिन बाद रुद्रा ने अपनी मम्मी महिमा से कहा -” मम्मी, आज स्कूल जाना है। अब तो यह स्कूल छोड़कर कालेज में एडमीशन लेना होगा, इसलिये तमाम औपचारिकतायें पूरी करनी होगी और अब तो हम सब अलग हो जायेंगे इसलिये स्कूल के काम के बाद वहीं पास के रेस्टोरेंट में हम सहेलियों ने एक छोटी सी पार्टी रखी है।"

महिमा का दिल भर आया, उसके मन में आया कि सहेलियाँ ही क्यों परसों के बाद तो सब छूट जायेगा क्योंकि परसों रात की ट्रेन से अजय उसे छोड़ने जा रहे हैं। रिजर्वेशन हो चुका है। वो तो निश्चिंत थी कि रुद्रा को उनकी और अजय की योजना के बारे में कुछ भी मालुम नहीं है।

इसलिये उन्होंने कुछ नहीं कहा -” ठीक है, ज्यादा देर न करना और ये लो पैसे, खूब अच्छे से पार्टी करना।"

जाते समय रुद्रा का दिल धड़क रहा था। उसके पर्स में अपने सारे सर्टीफिकेट, पाकेट मनी से बचाये गुल्लक के पैसे और मम्मी के दिये एक हजार रुपये के अलावा दो जोड़ी कपड़े थे।

स्कूल को कहकर गई रुद्रा वापस नहीं आई। आफिस से आने के बाद महिमा ने अजय को पार्टी वाली बात बताई तो उन्होंने कहा -”अच्छा किया, जाने दिया। परसों तो चली ही जायेगी फिर जल्दी आने नहीं देंगे।"

शाम रात में बदलने लगी, प्रतीक्षा करते करते नौ बज गये तो चिन्ता हुई। नीरजा के यहाँ फोन किया गया तो पता चला कि नीरजा को बुखार है, वह तो आज स्कूल गई ही नहीं। दूसरी सहेलियों ने भी अनभिज्ञता दिखाई, उन्होंने स्कूल जाने या किसी भी पार्टी से इंकार कर दिया। उन्हें कुछ नहीं मालुम था। नीरजा ने पहले ही अपने होंठ सिल लिये थे। सुभद्रा ने भी डर के कारण किसी को नहीं बताया की उसने रुद्रा को कुछ बताया है |

पुलिस में वरदान के नाम से रिपोर्ट लिखा दी गई -” मेरी बेटी को फुसलाकर ले गया है यह लड़का।" रिपोर्ट तो लिख ली गयी लेकिन पुलिस ने कोई भी कार्यवाही करनी से इनकार कर दिया |

अजय को समझाते हुए कहा उन लोगों ने - “ आप रात भर इंतजार कर लीजिये, हो सकता है कि आपकी बेटी देर रात तक लौट आये। आजकल के बच्चों की पार्टियों में सब कुछ होता है। क्या पता नशा अधिक हो जाने के कारण किसी दोस्त के घर चली गई हो, सुबह नशा उतरेगा तो आ जायेगी।"

“मेरी बेटी ऐसी नहीं है।"

“सभी माता पिता को अपने बच्चों पर भरोसा होता है, लेकिन यही लोग कैसे भरोसा तोड़ते हैं, मैं जानता हूँ । आप घर जाइये, सुबह आइयेगा।"

दूसरे दिन जब पुलिस के साथ अजय सिंह वरदान के घर पहुँचे तो रुद्रा ही सामने आई। उसने पुलिस अधिकारी को आर्य समाज से अपने विवाह का प्रमाण पत्र दिखाकर कहा -”सर, न मुझे बहलाया - फुसलाया गया है और न ही मेरा अपहरण किया गया है। अपनी मर्जी से वरदान से विवाह करके अपने पति के घर में रह रही हूँ । हम कहीं भागकर नहीं गये हैं, अपने घर में रह रहे हैं। एक बालिग लड़के और लड़की को कानून विवाह और जीवनसाथी चुनने का अधिकार तो देता ही है।"

“ यदि यह अपहरण या जबरदस्ती का मामले होता तो हम कार्यवाही करते लेकिन अब हम आपकी कोई सहायता नहीं कर सकते। इन दोनों को आशीर्वाद देकर अपना लीजिये।” रुद्रा की बात सुनकर पुलिस के सभी लोग वापस चले गये।

अजय सिंह गुस्से से चीख पड़े – “ मूर्ख है तू। आखिर है क्या इस लड़के में? इसी दिन के लिये तुझे इतने दुलार से पाला था?”

फिर उन्होने रुद्रा का हाथ पकड़ लिया -” मेरे साथ चल बेटा, हम सब कुछ भूल जायेंगे। तुझे पहले की तरह प्यार करेंगे, पढ़ायेंगे लिखायेंगें, सुनहरा भविष्य तेरा इंतजार कर रहा है। अपने आपको इस तरह बरबाद मत कर, मैं अपनी लाड़ली बेटी को आत्महत्या कैसे करने दे सकता हूँ ? यह लड़का तुझे कुछ नहीं देगा, अभाव और दायित्वों तले मेरी राजकुमारी सी बेटी पिस जायेगी। तेरे पापा अभी जिन्दा हैं, तू डर मत, कोई तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता| मेरे साथ चल। अभी कोई  देर नहीं हुई है| मैं यह शादी निरस्त करवा दूँगा । मैं सब ठीक कर दूँगा ।"

जब वह हर प्रकार से समझाने के बाद भी न मानी तो चलते समय अजय सिंह ने कहा -”कभी अपने निर्णय पर बहुत पछताना पड़ेगा।"

उस समय गर्व से कहा था रुद्रा ने -”पापा मर जाऊॅगी पर कभी भी अपने निर्णय पर पछताकर सहायता के लिये आपके पास नहीं आऊॅगी।"

आज सोंचती है तो आश्चर्य होता है कि मम्मी, पापा, छोटे भाई बहन सात्विक और सुभद्रा को इतना प्यार करने वाली उसने कैसे कठोर बनकर सबको ठुकरा दिया था। पापा और जमाने के सामने हमेशा वरदान की ढ़ाल बनी रही।

सचमुच उसने अभाव के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। सास ने घर में तो रख लिया लेकिन स्वीकार नहीं किया -” ऊपर स्टोर वाले कमरे में इसे ले जा आओ वरदान। मेरे सामने इसे आने की जरूरत नहीं है। जो लड़की अपने माँ बाप की न हुई, मेरी क्या होगी?"

वरदान और रुद्रा चुपचाप ऊपर चले गये। ऊपर का कमरा कबाड़ से भरा था। छत पर एक लेट्रीन और बाथरूम भी था, लेकिन कमरे की फर्श और दीवारों पर प्लास्टर तक नहीं था और छत टीन की थी। दोनों ने मिलकर उस कमरे को सफाई करके रहने लायक बनाया। सास ने नीचे से एक झाड़ू, बाल्टी और एक पुरानी दरी छोटी ननद से भिजवा दी।

कितनी प्यारी थी उनकी सुहागरात। छत पर दरी बिछाकर दोनों लेटे थे। न दूसरी दरी, न चादर, न तकिया। वरदान बहुत उदास था -” यह हमारा कैसा विवाह है रुद्रा? सुहागरात के दिन हम छत पर जमीन में लेटे हैं। क्या ऐसे ही विवाह के सपने देखे थे हमने?"

“कोई बात नहीं, हम एक दूसरे के साथ हैं। दो हाथ तुम्हारे हैं और दो हाथ मेरे हैं, इन चार हाथों से हम सब कुछ कर लेंगे। अपनी मेहनत और धैर्य से हम अपना समय बहुत सुखद बनायेंगे।"

“मेरे पास कुछ पैसे हैं, कल चलकर कुछ सामान ले आयेंगे। मम्मी ने भी साथ नहीं दिया।"

“ हमारे कारण हमारे माता पिता की भावनायें आहत हुई हैं, उन्हें कुछ न कहो। यही क्या कम है कि उन्होंने घर में रहने की इजाजत दे दी है। हमारे सिर पर एक सुरक्षित छत है, रहने को जगह है।"

“कैसे होगा सब, हम दोनों की शिक्षा ही अधूरी है।” वरदान की मायूसी कम नहीं हो रही थी।

“मुझे पाकर भी खुश नहीं हो क्या? हो सकता है आगे चलकर हमारे पास वह सब कुछ होता जिसके सपने हर लड़का और लड़की देखते हैं। धूमधाम से हमारी शादी होती, फूलों से सजी सुहागरात होती लेकिन हम साथ न होते। तुम्हारे और मेरे पहलू में कोई और होता तो......।”रूद्रा एक पल के लिये रुकी फिर बोली -”आज अगर हम एक न होते तो जिन्दगी भर एक दूसरे की यादों में सिसकते हुये बिताते वो ज्यादा अच्छा था या आज हम खुले आकाश के नीचे एक दूसरे की बॉहों में है, वह ज्यादा अच्छा है?"

“यह बात नहीं है, मैं भी बहुत खुश हूँ लेकिन तुम्हारे लिये परेशान हूँ । मुझे तो आदत है लेकिन तुम तो अभाव जानती ही नहीं हो। तुम्हारे पापा सही कह रहे थे कि मैं तुम्हें कुछ नहीं दे पाऊॅगा।"

रुद्रा ने वरदान के मुँह पर हाथ रख दिया - ”मैं तुम्हें पाकर बहुत खुश हूँ। अब चाँद सितारों से भरी इस सुहानी  रात को अपनी मायूसी से अँधेरी मत बनाओ। यह नीला आकाश, मुस्कराता चन्दा, खिलखिलाती चॉदनी, टिमटिमाते तारे सभी मिलकर हमें हमारे विवाह की बधाई दे रहे हैं। ऐसी सुहागरात भी तो हर एक के नसीब में नहीं होगी।” वरदान ने रुद्रा को अपने सीने में भींच लिया।

उन दोनों ने अभावों से लड़ने के लिये कमर कस ली। पढ़ाई के साथ वरदान ने अपनी ट्यूशनें बढ़ा दी। रुद्रा के समझाने पर वह माँ की अनजान में चुपके से अपनी बहनों को पैसे देता रहा।

पढ़ाई रुद्रा ने भी नहीं छोड़ी। उसने बी० ए० का प्राइवेट फार्म भर दिया। सबसे पहले एक सस्ता सा मोबाइल खरीदा, यह अब उसकी प्राथमिक आवश्यकता थी। रुद्रा ने एक विज्ञापन देखा जिसमें घर में पढ़ाने वाले ट्यूटर के लिये सम्पर्क करने के लिये एक मोबाइल नम्बर दिया था। उसने उस नम्बर पर बात की तो उसे ट्यूशन तो मिल गई लेकिन उसे उस व्यक्ति को कुछ पैसे कमीशन के रूप में देने पड़े।

इसके बाद तो उसे इतने ट्यूशन मिलने लगे कि उसे मना करना पड़ने लगा। रुद्रा की अंग्रेजी और गणित बहुत अच्छी थी, इसलिये ट्यूशनों से उसका खर्चा आराम से चलने लगा।

सास ननदों की कटूक्तियाँ और ताने  वरदान के प्यार के कवच एवं संघर्षों की दहकती ज्वाला में स्वयमेव नष्ट हो जाते थे।

विवाह की पहली वर्षगॉठ पर उसने जबरदस्ती वरदान को मॉ का आशीर्वाद लेने मिठाई लेकर भेजा -”मैं नहीं जाऊॅगा, वो कुछ गलत कह देंगी तो मुझसे सहन नहीं होगा और ये मिठाई तो वो फेंक ही देंगी।"

“कोई बात नहीं, वो जो करें करने देना। तुम अपना कर्त्तव्य करना, वो माँ हैं आज के दिन वो तुम्हें कुछ नहीं कहेंगी। हो सकता है वो तुम्हारा खुद इंतजार कर रही हों।"

“तुम भी चलो।"

“मेरे जाने से वो और भी नाराज हो सकती हैं। फिर मैं और तुम क्या अलग है, उनका दिया आशीर्वाद हम दोनों को मिलेगा।"

वरदान गया तो पहले तो सास ने बहुत बातें सुनाईं लेकिन जब वरदान ने जबरदस्ती उनके गले में बाँहे डालकर मुँह में मिठाई ठूँस दीं तो उन्होंने उस पर आशीर्वाद की झड़ी लगा दी, साथ ही कह दिया कि अपने बेटे को छीनने वाली रुद्रा को वो  कभी माफ नहीं करेंगी। वरदान चुप रह गया क्योंकि रुद्रा से वादा करके आया था कि माँ से कुछ नहीं कहेगा।

धीरे धीरे नीचे से सास के तानों की आवाज आनी बन्द हो गई और सास से छुपकर ननदें भी ऊपर उसके पास आने लगीं।

विवाह की दूसरी वर्षगॉठ पर जब सास ऊपर उसके कमरे में आ गईं तो वह और वरदान दोनों भौचक्के रह गये -”मम्मी, आप?"

सास ने कोई जवाब नहीं दिया। रुद्रा उनके चरण स्पर्श करने के लिये जैसे ही आगे बढ़ी उन्होंने रुद्रा का हाथ पकड़ा और सीढ़ियॉ उतरती चली गईं। उनके पीछे घिसटती हुई हतप्रभ रुद्रा और उसके पीछे वरदान था। नीचे पहुँचकर दरवाजे पर सास ने रुद्रा का हाथ छोड़ा -”यहीं खड़ी रहना।” एक गंभीर स्वर गूँज  उठा।

रुद्रा और वरदान की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी हाथ में थाली लिये सास ने आकर आरती  उतारी -”अब अंदर आओ।"

परन्तु भीतर आने की बजाय वे दोनों वहीं माँ के पैरों में लिपट गये। सास ने दोनों को उठाकर सीने से लगा लिया।

उस दिन पूरे परिवार ने मिलकर आज विवाह का उत्सव मनाया। सास ने अपने हाथ से बहुत सारे पकवान बनाये और सबको खिलाया। दोनों को उपहार भी दिये, नीचे एक कमरा खाली करवाकर उन्हें दे दिया। रुद्रा की खुशी का ठिकाना न था लेकिन अपने पापा मम्मी भी याद आ गये। काश..... पापा भी इसी तरह उन दोनों को अपना लें।

कुछ दिन बाद सास ने एक नया फरमान जारी कर दिया जिससे वह काफी परेशान हो गई -”बहू, अब तुम घर घर जाकर ट्यूशन नहीं पढ़ाओगी।"

“ठीक है मम्मी जी, बच्चों के इम्तहानों बाद छोड़ दूँगी।"

वरदान को एम०एस०सी० बाद एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी तो मिल गई लेकिन उस थोड़े से वेतन में जीर्ण-शीर्ण मकान को बनवाना, दोनों ननदों की शादियॉ करना और आगे भविष्य के सपने पूरे कर पाना असम्भव था। वह सास की बात टालना नहीं चाहती थी।

"कोई बात नहीं,अभी तो बात टल गई है, बच्चों के इम्तहान होने में अभी सात महीने हैं तब तक कोई न कोई रास्ता निकल आयेगा। वरदान ने कहा भी कि वह मम्मी से बात कर लेगा लेकिन उसने यह कहकर मनाकर दिया कि यह सास बहू का मामला है, वह इस सबसे दूर ही रहे।

एक दिन वह ट्यूशन के लिये गई तो उसके छात्र की मम्मी ने उसे चाय के लिये रोक लिया। बातों में उन्होंने बताया कि उनके पति बैंक में ॠण विभाग देखते हैं साथ ही उन्होंने यह भी बताया की आजकल सरकार की ओर से महिला लघु उद्योग के लिये महिलाओं के लिये बहुत अच्छी योजनायें आईं हैं। किसी महिला को व्यापार के लिये पच्चीस हजार तक का ॠण लेना हो तो बताना।

रुद्रा ने बैंक से ॠण लेकर अपने घर के ऊपर वाले कमरे में ही छोटे बच्चों के रेडीमेड कपड़ों का काम शुरू किया। घर के अंदर काम होने के कारण सास बहुत खुश थीं। उन्होंने रुद्रा को घर गृहस्थी के कामों से बिल्कुल मुक्त कर दिया -” मेरे होते हुये गृहस्थी की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। मैं सब देख लूँगी ।"

संघर्ष के उन दिनों  में उसकी ननदों ने भी भरपूर सहयोग दिया। एक ही शहर में रहते हुये न कभी पापा आये और न वह गई। फिर एक दिन नीरजा ने बताया था कि उनका स्थानान्तरण हो गया है।

जिम्मेदारियों में सहभागी बनी रुद्रा को वरदान और उसके परिवार ने प्यार का अनमोल खजाना देकर मालामाल कर दिया। काम बढ़ने लगा तो रुद्रा को घर का कमरा छोड़कर किराये पर जगह लेनी पड़ी।

घर की जिम्मेदारियों के प्रति निश्चिंतता आने पर वरदान ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दी और पदोन्नति करते करते अपनी कम्पनी का उच्च अधिकारी हो गया।

शादी के बारह वर्ष के भीतर ही उसका जीर्ण-शीर्ण मकान आधुनिक सुख-सुविधाओं से भरपूर दो मंजिली कोठी में बदल गया। दोनों ननदों की धूमधाम से शादी हो गई और वह दो प्यारे बच्चों की माँ बन गई। अपने व्यापार को पूर्णतः व्यवस्थित करने, एक ननद की शादी होने और मकान बनाने का लक्ष्य पूरा करने के बाद ही उन्होंने बच्चे के विषय में सोंचा था। जीवन संघर्षों के बाद सुहावना हो गया।

                                                ( **3 )**

“आज इतना उदास क्यों हो नीलिमा?"

“ सुकन्या, पापा का यहाँ से स्थानान्तरण हो गया है। शायद इसी सप्ताह हम सबको यहॉ से जाना पड़े।” नीलिमा की ऑखों में ऑसू थे।

सुकन्या भी बहुत दुखी हो गई - ” फिर तो हम अलग हो जायेंगे, हमारी दोस्ती का क्या होगा? आठ साल से हम साथ पढ़ते खेलते आ रहे हैं। मेरी तो तुम्हारे अलावा कोई सहेली भी नहीं है।"

“क्या करें, पापा ने स्थानान्तरण रुकवाने का बहुत प्रयास किया है लेकिन प्रोन्नति के साथ स्थानान्तरण हुआ है, इसलिये जाना ही पड़ेगा वरना प्रोन्नति निरस्त हो जायेगी।"

आठ वर्ष से साथ रहते रहते दोनों परिवार एक दूसरे के साथ पूरी तरह घुल मिल गये थे। दोनों घर में बच्चों के कपड़े और खिलौने तीनों के लिये आते थे। पता ही नहीं चलता था कि कौन किस घर का सदस्य है?

इसलिये अलग होते समय सब बहुत दुखी थे। हफ्ते भर के अंदर कश्यप साहब नीलिमा और पत्नी सुमन को लेकर चले गये लेकिन दोनों परिवारों ने मिलकर यह तय किया कि साल में एक बार परिवार सहित वो लोग एक दूसरे से जरूर मिलेंगे और कुछ समय साथ छुट्टी मनायेंगे।

समय बीतने के साथ ही तीनों बच्चे अपने अपने अध्ययन में व्यस्त हो गये। बड़े लोगों की व्यस्तता बढ़ती गई और साल में एक बार मिलना भी संभव नहीं रहा। फोन से दोनों परिवार जुड़े तो रहे लेकिन पहले वाली आत्मीयता का अभाव होता गया। जबकि नीलिमा और सुकन्या की दोस्ती आज भी वैसी ही थी।

कालेज से आकर जब तक नीलिमा पूरे दिन की बातें सुकन्या को न बता दे तब तक उसे चैन नहीं था, यही हाल सुकन्या का था। नीलिमा का जब मन होता वह सुकन्या से मिलने चली जाती और सुकन्या भी नीलिमा के पास आ जाती। सुकन्या ने एक परिवर्तन देखा कि अब उनकी मंडली में नीलिमा का भाई मृत्युंजय शामिल नहीं होता था। नीलिमा ने एक बार पूँछा भी -”भाई, क्या तुम्हें सुकन्या का आना पसंद नहीं है, अब तुम हम लोगों के साथ नहीं आते।"

“ अब हम बच्चे नहीं रहे नीलू, किसी को अन्यथा सोंचने का अवसर क्यों दिया जाये? तुम कभी ऐसा कुछ न सोंचना। अपने घर में उसके आने से रोशनी हो जाती है। घर में गूँजती तुम दोनों की चिड़ियों सी चहकती आवाज बहुत अच्छी लगती है मुझे। साथ भले न रहूँ लेकिन उसके आने से घर में बिखरे उजाले को महसूस करता रहता हूँ "

अचानक नीलिमा के पापा की मृत्यु पर गुप्ता  साहब पत्नी और सुकन्या के साथ आये। इस परिवार पर अकस्मात्  आई विपत्ति से सभी दुखी थे, लेकिन कुदरत के आगे क्या किया जा सकता था। मृत्युंजय का एम० बी० ए० अभी अधूरा था, नीलिमा भी अभी पढ़ रही थी। घर का एकमात्र सहारा पेंशन रह गई थी। एक अच्छाई कि सिर छुपाने के लिये एक छोटा सा घर था।

कुछ दिन बाद नीलिमा ने सुकन्या से फोन पर कहा -”कुछ खाकर अपना मुँह मीठा कर लो फिर तुम्हें एक खुशखबरी सुनाऊॅगी।"

“पहले बताओ क्या बात है? कोई ब्वायफ्रेंड मिल गया क्या? ”सुकन्या का हॅसता स्वर।

“तुम तो पागल हो।” नीलिमा भी हॅस पड़ी -” मुझे नौकरी मिल गई है।"

“तुम नौकरी करोगी? तुम तो आगे पढ़ना चाहती थीं।"

“परिस्थिति ऐसी हो गई है कि मेरी और भाई की पढ़ाई एक साथ नहीं हो सकती जबकि भाई का एम०बी०ए० होते ही उसे नौकरी मिल जायेगी। इसलिये मैंने सबसे कह दिया है कि मैं आगे पढ़ाई नहीं करना चाहती और जब उसे नौकरी मिल जायेगी तो मैं फिर से अपनी पढ़ाई शुरू कर दूँगी । सिर्फ एक साल की तो बात है, उसका आख़िरी साल है| इसके बाद मैं यह नौकरी छोड़ दूँगी ।"

“तुम बहुत प्यारी और समझदार हो नीलिमा। आज की परिस्थिति में तुम्हारा निर्णय सही है। मेरी शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं।"

फिर नीलिमा ने सुकन्या को अपनी कम्पनी, वेतन आदि के बारे में पूरी बातें बताई तो सुकन्या ने हॅसते हुये कहा -”मैं आऊॅगी तो बहुत बढ़िया पार्टी और उपहार चाहिये मुझे।"

“पार्टी तो जब तुम आओगी तब जैसी चाहना लेना लेकिन अपने पहले वेतन से तुम्हें उपहार भेजूँगी, क्या चाहिये?"

“जो तुम्हें अच्छा लगे, मेरे लिये अमूल्य होगा वह।"

नीलिमा बहुत खुश थी। उसके काम से उसका स्टाफ और उसके बाँस दोनों खुश थे। चूँकि वह पर्सनल सेकेट्री थी तो उसका अधिकतर काम बॉस से ही सम्बन्धित रहते थे। इसलिये उसे घर पहुँचने में भी देर हो जाती क्योंकि उसका घर आफिस से बहुत दूर था। अब कई कई दिन तक उसकी सुकन्या से बात नहीं हो पाती थी।

एकाध बार जब नीलिमा को आफिस में देर तक रुकना पड़ा तो उसने बॉस को अपनी पूरी परिस्थिति से अवगत कराने के साथ यह भी बता दिया कि उसे यह नौकरी सिर्फ एक वर्ष के लिये ही चाहिये। अगर बॉस चाहें तो उसे पर्सनल सेकेट्री की बजाय दूसरा काम दे सकते हैं और उसका वेतन भी कम कर दें लेकिन न तो वह रात देर तक रुक पायेगी और न ही उनके साथ शहर के बाहर जा पायेगी।

उसकी स्पष्ट बात से बॉस बहुत खुश हुये -”तुम तो बहुत बहादुर और अच्छी लड़की हो। अब तुम निश्चिंत रहो, जैसे काम कर रही हो करो, कोई परेशानी हो तो मुझसे कहना।"

इसके बाद बॉस नीलिमा का बहुत ख्याल रखने लगे। उसके काम की, कभी कभी कपड़ों की भी सराहना करते। लंच समय होने पर खुद कह देते -” नीलिमा, लंच टाइम हो गया है।"

नीलिमा खुश थी उसे इतने अच्छे बॉस मिले हैं, यह बात उसने सुकन्या को और अपनी मम्मी को भी बताई लेकिन कभी कभी नीलिमा को बॉस के व्यवहार और ऑखों के हाव भाव में सामंजस्य नजर नहीं आता तो वह घबड़ा जाती लेकिन अगले ही क्षण अपने मन का भ्रम मानकर शान्त हो जाती।

नये साल की पार्टी बहुत बड़े फाइव स्टार होटल में रखी गई। स्टाफ के कुछ खास लोगों को ही निमंत्रित किया गया था। नीलिमा ने मना कर दिया -”सर, मम्मी इजाजत नहीं देंगी और मैं रात में घर कैसे जाऊॅगी?"

“देखो नीलिमा, यह भी आफिस के कार्य का एक भाग है। वैसे मैं तुम्हारी मजबूरी समझता हूँ  लेकिन इस पार्टी में कम्पनी के सभी बड़े अधिकारी और कम्पनी के एमoडीo भी आयेंगे। तुम्हारा आना जरूरी है, पार्टी में कुछ खास लोगों को ही बुलाया गया है। तुम एम०डी० साहब के लौटने के बाद चली जाना। मैं तुम्हें किसी के साथ वापस भिजवा दूगा। न आने से तुम्हारा नुकसान हो सकता है।"

नीलिमा का मन तो बिल्कुल नहीं था लेकिन नौकरी उसकी मजबूरी थी जिसे वह किसी भी हाल में खोना नहीं चाहती थी। वह मम्मी को जल्दी आने का आश्वासन देकर आ गई। आज वह बहुत सुंदर लग रही थी, सभी ने उसकी सराहना की। उसके बॉस तो उसे देखते ही रह गये। उन्हें ऐसे देखते देखकर नीलिमा शर्माकर रह गई।

बॉस ने आकर बताया कि आवश्यक काम आ जाने के कारण एम० डी० साहब नहीं आ पायेंगे। पार्टी अपने चरम पर थी। नीलिमा का मन नहीं लग रहा था, उसे घर जाने की जल्दी थी। नया साल शुरू हो गया। उसने जाकर बॉस से कहा तो उन्होंने कहा -”अभी कैसे? देख रही हो कि किसी को अपना होश नहीं है। तुम भी पार्टी का मजा लो, चली जाना।"

“नहीं सर, मैं अब जाऊॅगी। मम्मी इंतजार कर रही होंगी। आपने वापस भिजवाने का वादा किया था इसलिये चली आई थी, वरना मैं कभी न आती। अगर कोई न मिला तो मैं टैक्सी से चली जाऊॅगी।"

बॉस ने कुछ देर सोंचा, फिर कहा -”तुम चिन्ता न करो, मैं व्यवस्था करता हूँ ।"

नीलिमा को चैन नहीं पड़ रहा था। वह इतनी रात तक कभी घर के बाहर नहीं रही थी। जानती थी कि मम्मी दरवाजे पर टकटकी लगाये खिड़की पर बैठी होंगी। तभी बॉस आते दिखे -”कोई मिल नहीं रहा है, चलो मैं ही अपनी कार से तुम्हें छोड़ देता हूँ ।"

“आप रहने दीजिये सर, मैं टैक्सी से चली जाऊॅगी। आप मेरे लिये अपनी पार्टी छोड़कर मत जाइये।"

“कोई बात नहीं। एम० डी० साहब के न आने के कारण मेरा भी अब मन नहीं लग रहा है।"

नीलिमा बॉस के साथ आकर कार में गुमसुम सी बैठ गई, कुछ देर बाद बॉस खुद बोले -”इस तरह क्या सोंच रही हो?'

“कुछ नहीं, सोंच रही हूँ कि मेरे कारण आपको पार्टी छोड़कर आनी पड़ी।"

“यह कोई बड़ी बात नहीं है, इस विषय में मत सोंचो।”नीलिमा ने सीट पर सिर टिकाकर ऑखें बन्द कर ली लेकिन जब उसे लगा कि कार उसके घर के रास्ते पर जाने की बजाय दूसरी दिशा की ओर मुड़ने लगी है तो वह चौंक गई -” सर, मेरा घर इधर नहीं है।"

“मालुम है।”बॉस ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा -”इधर मुझे अपने दोस्त से एक जरूरी काम है। बस पॉच मिनट लगेंगे।"

“इतनी रात को कौन सा  काम? आपका दोस्त तो आराम से सो रहा होगा, आप जाकर उसकी नींद खराब ही करेंगे।"

परेशानी में भी नीलिमा हॅस पड़ी। हॅसते हुये वह और अधिक सुंदर लग रही थी, बॉस एकटक उसे देखने लगे -”इस तरह क्या देख रहे हैं सर? सामने देखकर गाड़ी चलाइये।"

“कुछ नहीं।” बॉस चुपचाप कार चलाने लगे।

“आओ नीलिमा।”एक स्थान पर कार रोककर बॉस ने कहा |

 ”मैं यहीं कार में बैठी हूँ, आप अपना काम करके आ जाइये।"

“इतनी खूबसूरत लड़की को मैं इस रात में अकेले छोड़ कर तो जा नहीं सकता, अगर तुम नहीं आओगी तो चलो, रहने दो।"

बॉस फिर से कार में बैठने लगे तो नीलिमा कार से उतर आई -”ठीक है सर लेकिन जल्दी कीजियेगा। मम्मी परेशान हो रही होंगी। मोबाइल की बैटरी भी डाउन हो गई है तो उन्हें फोन भी नहीं कर सकती। घर से लेकर तो आई थी लेकिन पता नहीं चार्जर कहाँ गिर गया  "

“ज्यादा देर नहीं लगेगी। टैक्सी से आतीं तो अभी आधे रास्ते में होतीं। बस काम होते ही मैं जल्दी से तुम्हें पहुँचा दूँगा ।"

वो लोग पहुँचे तो नीलिमा को ऐसा लगा कि बॉस का दोस्त जैसे इन्हीं लोगों का इंतजार कर रहा था -” मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। तुम्हारा काम तो हो गया है, लेकिन क्या मेरी सामान लाये हो?"

“हॉ, यह लो ।” बॉस ने उसे एक थैला पकड़ाया।

“चलें सर?"

नीलिमा का तो एक एक पल भारी था। उसको चैन नहीं था, तभी बॉस का दोस्त बोल पड़ा -”नीलिमा जी, आप पहली बार मेरे घर आईं हैं, एक कप चाय तो पीनी ही पड़ेगी।"

“नहीं, मुझे चाय की कोई जरूरत नहीं है। पहले ही बहुत देर हो चुकी है।"

“तुम्हें हो या न हो लेकिन मुझे है। बिना एक कप चाय पिये मुझसे गाड़ी नहीं चलेगी।” बॉस ने सोफे पर पसरते हुये दोस्त से कहा -”तुम जल्दी से चाय बना लाओ।"

नीलिमा इस सूने घर में अंदर से डर रही थी, मगर चुपचाप बैठी रही। चाय आई तो उसका पीने का बिल्कुल मन नहीं था लेकिन जब बॉस ने अपने हाथ से उसे कप पकड़ाया तो वह मना नहीं कर पाई। इसके बाद उसे कुछ याद नहीं कि वह कैसे घर पहुँची?

सुबह उठी तो उसका पूरा शरीर दर्द से फटा जा रहा था। सिर में जैसे कोई हथौड़े चला रहा हो। ऑखें खुल नहीं रही थीं, उठकर बैठना चाहा तो चक्कर आने के कारण फिर बिस्तर पर लुढ़क गई। उसमें बाथरूम तक जाने की ताकत नहीं बची थी।

तभी मम्मी आकर उसका सिर सहलाने लगीं -”अब कैसी तबियत है बेटा? तेरे साहब बता रहे थे कि रास्ते में तुम्हारी तबियत बहुत खराब हो गई थी और तुम बेहोश हो गईं थी। मैंने और तुम्हारे साहब ने तुम्हें बड़ी मुश्किल से सहारा देकर कार से उतारा था। इसलिये मैं मना कर रही थी| मैं जानती थी कि ऐसी पार्टियों में तुम सामंजस्य नहीं कर पाओगी।"

“मम्मी फोन उठा दीजिये, सर से कह दूँ कि मैं आज नहीं आ पाऊॅगी।"

मम्मी उसके हाथ में फोन देकर चली गईं -”हॉ, अब एक- दो दिन की छुट्टी ले लो।"

नीलिमा को अजीब सा लग रहा था, वह तो चाय पी रही थी उसके बाद उसे क्या हो गया, तबियत अचानक कैसे खराब हो गई? कहीं कुछ गलत तो नहीं हो गया, लेकिन नहीं ...... बॉस बहुत अच्छे हैं.....उसका कितना ख्याल रखते हैं.....उसे टैक्सी से नहीं आने दिया ...... उसके लिये अपनी पार्टी छोड़कर घर पहुँचाने आये।

नीलिमा ने बॉस को फोन किया तो उन्होंने खुद कहा-”तुम तो अच्छी भली चाय पी रहीं थी, अचानक क्या हो गया था तुम्हें?”

“सर, मुझे कुछ याद नहीं।"

“ गलती मेरी भी थी, तुम इस तरह के माहौल की आदी नहीं हो और देर के कारण तुम बहुत मानसिक तनाव में हो गईं थी, इसीलिये तुम चक्कर आने से बेहोश होकर गिर गईं थी। बड़ी मुश्किल से तुम्हें होश में लाया था, नये साल के कारण डाक्टर भी नहीं मिल सकता था। मुझे लगता है कि तनाव के कारण तुम्हारा ब्लड प्रेशर बढ़ या घट गया होगा। तुम चाहो तो डाक्टर को दिखाकर दवा ले लो।"

“मुझे एक दो दिन की छुट्टी चाहिये सर।"

“कोई बात नहीं आराम करो। कोई जरूरत हो तो बताना।"

नीलिमा के सारे संदेह मिट गये। बॉस तो सचमुच बहुत अच्छे हैं, उसकी परेशानी समझते हैं।

( **4 )**

नीलिमा आफिस तो आने लगी लेकिन उसके अंदर एक अजीब सी बेचैनी रहने लगी, तबियत बोझिल सी रहने लगी, काम में मन नहीं लगता था, काम में गलतियाँ  अधिक होने लगीं। सबसे बड़ी बात बॉस के व्यवहार में भी पहले जैसी बात नहीं रही।

एक दिन तो उन्होंने सबके सामने उसे बुरी तरह डॉट दिया -” क्या बात है नीलिमा, काम में मन नहीं लगता तो नौकरी छोड़ दो। मुझे काम चाहिये, तुम्हारी जगह कोई दूसरा आयेगा।” नीलिमा सिर झुका लेती। बॉस को मालुम था कि नीलिमा अभी नौकरी नहीं छोड़ सकती है।

अब नीलिमा के पास इतना काम होता था कि वह आठ बजे के पहले आफिस छोड़ ही नहीं पाती थी लेकिन वह चुपचाप सहती जा रही थी, । पॉच महीने बीत चुके हैं उसको नौकरी करते, किसी तरह बाकी भी बीत जायेंगे।

एक दिन शाम को नीलिमा काम कर रही थी। एकाध लोगों को छोड़कर करीब सभी लोग जा चुके थे। नीलिमा के इंटरकॉम पर फोन आया, बॉस उसे बुला रहे थे।

“बैठो।” बॉस कुछ गंभीर से लगे, नीलिमा चुपचाप बैठ गई। कुछ देर कोई कुछ न बोला, फिर बॉस ही बोले -” कल घर में बोलकर आना कि तुम रात में घर नहीं लौट पाओगी।"

नीलिमा चौंक गई -”क्यों सर, मैंने आपको पहले ही बता दिया था कि मेरी अपनी कुछ समस्यायें हैं, इसलिये मैं देर रात तक नहीं रुक पाऊॅगी। वैसे भी मुझे आजकल घर पहुँचने में देर हो जाती है।"

“यह तुम्हारी समस्या है, मेरा उन फालतू बातों से कोई लेना-देना नहीं है। रही बात इन्कार की तो यह लिफाफा खोलकर देख लो कि क्या तुम मना करने की स्थिति में हो।”बॉस ने नीलिमा के सामने एक बंद लिफाफा रख दिया -”इसे खोलकर देख लो फिर बताना कि क्या तुम सचमुच इंकार कर सकती हो?"

नीलिमा ने कॉपते हाथों से लिफाफा खोला तो उसके पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। मेज पर पड़ी तस्वीरें देखकर उसके होश उड़ गये। उसे समझते देर नहीं लगी कि पार्टी से लौटते समय बॉस और उसके दोस्त संजय ने उसे चाय में कुछ ऐसा पिला दिया कि वह अचेत हो गई। उसके बाद उन दोनों ने उसके साथ दुष्कर्म करके ये फोटो खींच ली। सामने बॉस कुटिल मुस्कान लिये बैठे थे ।

“ इतना बड़ा विश्वासघात? मैं आपको क्या समझती थी और आप क्या निकले? मैंने आपका क्या बिगाड़ा था?” नीलिमा की ऑखों से ऑसुओं की झड़ी लग गई।

बॉस बड़े इत्मीनान से उसे रोते हुये देख रहे थे, फिर बिना जरा भी संकोच के बोलने लगे -”तुम्हारा रोना - धोना खतम हो गया हो तो आगे काम की बात कर ली जाये।”फिर उन्होंने नीलिमा की ओर झुकते हुये कहा -”सोंच लो, अभी यह सब मेरे और तुम्हारे बीच में है। तुम्हारा भाई और तुम्हारी मॉ कभी नहीं जान पायेंगे। तुम्हारी नौकरी वैसे ही चलती रहेगी, एक साल बाद तुम अपने रास्ते चली जाना, मैं अपने रास्ते। मैं ये सारी फोटो पेनड्राइव सहित तुम्हें दे दूँगा। हमारे बीच का सम्बन्ध हमेशा के लिये  समाप्त हो जायेगा।"

नीलिमा के पास कोई रास्ता नहीं था। उसने एक बार समर्पण किया तो बॉस के हाथ की कठपुतली बनकर रह गई। नीलिमा के बहुत मिन्नत करने पर वो बस इतना मान गये कि उसे रात में रुकने को नहीं कहेंगे, जिससे माँ को पता न चले लेकिन दिन में वह कभी मना नहीं करेगी।

बॉस और उनके दोस्त  संजय का जब भी मन होता, होटल के किसी कमरे में या उस तलाकशुदा संजय के अकेले घर में नीलिमा को उन दोनों की वासना पूर्ति के लिये जाना पड़ता।

नीलिमा की हँसी खो गई। वह हर समय उदास रहने लगी। उसकी चहक भरी आवाज कहीं गुम हो गई। मम्मी के कई बार  पर भी उसने कुछ नहीं बताया। केवल इतना ही कहा -”बहुत काम रहता है मम्मी, बहुत थक जाती हूँ। बस, थोड़े दिन बचे हैं भाई का एम०बी०ए० पूरा होने में। उसके बाद मैं नौकरी नहीं करूँगी।"

“ हाँ , बेटा, जय की नौकरी लगने के बाद अपनी पढाई पूरी करना|”

सुकन्या को भी कुछ नहीं बताया उसने जबकि उसके व्यवहार में परिवर्तन सुकन्या अनुभव कर रही थी -” मुझे पता नहीं क्यों लगता है कि तुम मुझसे  कुछ छुपा रही हो, कोई परेशानी है तो बताओ।"

उसने सुकन्या को भी वही बताया जो अपनी मम्मी को बताया था -”कुछ नहीं सुकन्या, काम बढ़ गया है, इसलिये बहुत थक जाती हूँ  कभी कभी तो घर आते आते रात के ग्यारह बज जाते हैं।"

“तुम अपने बॉस को अपनी परेशानी बोलो कि तुम्हें इतनी देर तक न रोकें

“मैंने एक बार बोलकर देख लिया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अब मैं कुछ नहीं कहूँगी। आठ  महीने बीत चुके हैं ,बस थोड़े दिन बचे हैं, इसी आशा में तो समय काट रही हूँ।"

“ तू बहुत बहादुर है नीलू, अपना ख्याल रखना। मृत्युंजय बहुत भाग्यशाली है जिसके पास तेरे जैसी बहन है। मेरी शुभकामनायें तेरे साथ हैं।"

“अपनों के लिये अपने ही नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

इस बार जब नियत तिथि को माहवारी नहीं हुई तो नीलिमा पीरियड होने की दवा लेकर आई लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ तो नीलिमा को चिन्ता हुई। अब वह और परेशान हो गई। चुपके से ”प्रेगनेंसी टेस्ट किट” ले कर आई, जिस बात का शक था वही सच्चाई सामने थी।

वैसे नीलिमा बराबर गर्भनिरोधक दवाइयों का प्रयोग करती थी लेकिन पिछले महीने उसको बुखार आने के कारण एक हफ्ते तक वह ये दवाइयॉ नहीं ले पाई, डाक्टर से क्या कहती? दवा लेने मम्मी खुद जाती थीं, वह मम्मी से कैसे ये दवाइयॉ मॅगाती? और जिस दिन आफिस आई उसी दिन इतने दिन के भूखे बॉस की उसे इच्छा पूर्ति करनी पड़ी।

अब क्या करे? जाकर बॉस से बताया तो उन्होंने साफ मना कर दिया -”बकवास मत करो, मुझे इन सब फालतू बातों से कोई लेना-देना नहीं है।"

“सर, आपने ही मुझे इस स्थिति में पहुँचाया है। मेरे पास आपकी तस्वीरें हैं, यदि वो सब मैं आपकी पत्नी को दिखा दूँ तो?"

बॉस ठहाका मारकर हॅस पड़े -”जाओ, दिखा दो। पहले तो मेरी पत्नी को तुमसे अधिक मुझ पर विश्वास है, तुम्हारी बात मानेगी नहीं। अगर मान भी गई तो उसे बहलाना मुझे अच्छे से आता है ।न तुम पहली हो और न आख़िरी| तुम्हारे जैसी लड़कियॉ तो जिन्दगी में आती जाती रहती हैं।"

एक एक शब्द चबाते हुये बॉस ने कुटिलता से कहा -”मेरी छोड़ो, तुम अपनी बात करो, पेट में बच्चा लेकर कहॉ जाओगी तुम? ये सारी तस्वीरें देखकर तुम्हारी मॉ और भाई कितने खुश होंगे?"

नीलिमा रो पड़ी -”सर, ऐसा मत करिये। मेरी मम्मी यह बर्दाश्त नहीं कर पायेंगी। मेरे भाई की पूरी जिन्दगी बरबाद हो जायेगी, वह आत्महत्या कर लेगा। आप मेरे साथ डाक्टर के पास तो चल ही सकते हैं|"

“मुझे तुम्हारे झमेलों से कोई मतलब नहीं है। चुपचाप डाक्टर के पास जाओ और यह सब निपटाकर आओ।"

“सर, मेरी परेशानी समझिये, मैं किसके साथ डाक्टर के पास जाऊँ? इस समय मेरा साथ दीजिये, मेरे साथ डाक्टर के पास चलिये। मैं हमेशा आपकी बात मानती रहूँगी।"

“मुझे तुम्हारी फालतू बकवास में कोई दिलचस्पी नहीं है। यहॉ से जाओ।” नीलिमा चुपचाप अपनी बेबसी पर सिर झुकाये एक पत्थर दिल इंसान के सामने रोती रही लेकिन उस पर कोई असर न हुआ।

थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा फिर जैसे उन्होंने कोई फैसला लिया -”अच्छा, तुम अपने केबिन में जाकर बैठो, कोई निर्णय लेकर मैं तुम्हें बताता हूँ।”

नीलिमा अपने केबिन में आकर बैठ गई। करीब एक घंटे के अंदर उसकी मेज पर दो लिफाफे पड़े थे। एक में उसे नौकरी से निकाले जाने की सूचना थी, दूसरे में उसका तीन महीने का वेतन था।

हतप्रभ नीलिमा ने इंटरकाम पर बॉस से मिलना चाहा तो उन्होंने मिलने से मना कर दिया।

नीलिमा थके कदमों से आफिस से बाहर आई तो उसे दुनिया अंधेरी दिख रही थी। घर आकर भी उसने किसी से कुछ नहीं कहा। अपनी नौकरी छूटने की बात भी उसने मम्मी को नहीं बताई। पैसे की चिन्ता नहीं थी क्योंकि तीन महीने का वेतन उसके पास था। फिर भी उसे मालुम था कि नौकरी छोड़ने के बाद भी बॉस उसे ब्लेकमेल करना नहीं छोड़ेंगे।

उसे पता चल गया था कि उसके पहले की दो सेकेट्रियों ने भी बॉस की ऐसी ही हरकतों से परेशान होकर एक महीने के अंदर ही नौकरी छोड़ी थी। आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था लेकिन वह आत्महत्या नहीं कर सकती थी। उसकी मृत्यु के बाद पोस्टमार्टम में उसके गर्भवती होने का पता चलेगा, तब उसकी और उसके घर वालों की इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी। फिर जिस भाई की शिक्षा के लिये इतने दिन से जिल्लत भरी जिन्दगी बरदाश्त कर रही  थी’ वह तो अधूरी ही रह जायेगी | बिना सोंचे समझे कोई कदम ऐसा नहीं उठाना है जिससे उसके भाई या माँ पर कोई आँच आये|

दूसरे दिन भी वह नियत समय पर ही घर से निकली ताकि मम्मी को कुछ पता न चले। जाकर एक पार्क में बैठकर सोंचने लगी। क्या करे, क्या सुकन्या से बात करे लेकिन सुकन्या तो चुप बैठेगी नहीं।.....नहीं ....उससे बात करना ठीक नहीं है।

अचानक उसने निर्णय ले लिया कि सबसे पहले उसे डाक्टर से मिलकर अपने अंदर मौजूद बॉस की इस गंदगी से मुक्ति पानी है। वहीं बैठे बैठे उसने दो डाक्टरों से मिलने का समय ले लिया ताकि एक जगह काम न हो पाये तो दूसरी डाक्टर के पास भी आज ही जा सके। पहली डाक्टर ने तो इतनी पूँछताँछ की, लड़कियों के संस्कारों पर इतने उपदेश दिये कि नीलिमा और अधिक परेशान हो गई, दूसरे उसकी शर्त थी कि वह अपने साथ अपने प्रेमी या किसी घरवाले को लेकर आये।

दूसरी डाक्टर बहुत अच्छी थी। उसने नीलिमा से कोई बहस नहीं की। उसने नीलिमा को गर्भपात की दवाइयों के साथ कुछ परामर्श के साथ यह भी बताया कि उसे कम से कम तीन - चार बार उसे  उसके पास आना पड़ेगा।

एक सप्ताह के अंदर ही नीलिमा ने अनचाही समस्या से छुटकारा पा लिया। मम्मी यह तो समझ रही थीं कि नीलिमा किसी बात को लेकर परेशान है, लेकिन जब बार बार पूँछने पर भी उसने केवल इतना कहा कि आफिस की कुछ परेशानी है, जल्दी ही ठीक हो जायेगी तो उन्होंने भी अधिक पूँछना ठीक नहीं समझा।

नीलिमा शारीरिक रूप से ठीक हो रही थी लेकिन मानसिक रूप से और उलझती जा रही थी। मृत्युंजय ने उसे बताया कि एम० बी०ए० के इम्तहान के पहले उसके कालेज में कई कम्पनियॉ आने वाली हैं, शायद इम्तहान के पहले ही कैम्पस सेलेक्शन में उसे नौकरी मिल जाये। नीलिमा के समक्ष अपना निर्णय स्पष्ट हो गया। अब उसके सामने नौकरी की कोई मजबूरी नहीं है। वह जानती थी कि कैम्पस सेलेक्शन में आई कम्पनियों में किसी न किसी में उसके मेधावी भाई को नौकरी अवश्य मिल जायेगी।

अब उसे केवल मृत्युंजय के नौकरी मिलने की प्रतीक्षा थी। उसने मम्मी को बताया कि उसके बॉस एक महीने के लिये विदेश जा रहे हैं, वह भी काम करके बहुत थक गई है, इसलिये कुछ दिन की छुट्टी ले रही है। यही बात उसने फोन पर सुकन्या और मृत्युंजय को भी बताई तो मृत्युंजय ने कहा-” मुझे नौकरी मिल जाये तो तुम छुट्टियों बाद भी मत जाना, सीधे त्यागपत्र दे देना।"

मम्मी तो बहुत खुश हो गईं -”ईश्वर तुम्हारी जैसी बेटी सबको दे। जय ठीक कहता है, अब तुम फिर से अपनी पढ़ाई शुरू कर देना।"

एक बार बॉस ने उसे फोन करके बुलाना चाहा तो उसने कुछ न कहकर बहाना बना दिया -”सर, आपसे अलग होकर कहॉ जाऊॅगी लेकिन डाक्टर ने कुछ दिनों के लिये निर्देश दिये हैं। उसके बाद जैसा आप कहेंगे वैसा करूँगी। ऐसा लगता है कि जैसे अब आप ही मेरी नियति बन गये हैं।”

बॉस ने ठहाका लगाया -”तुम चाहोगी तो तुम्हारी नौकरी फिर तुम्हें मिल जायेगी।"

“स्वस्थ होकर आऊॅगी, तब आप जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा।"

अब घर में रहकर नीलिमा हर वक्त मम्मी को सुख देने का प्रयत्न करती लेकिन मन अंदर से रोता रहता। क्या बीतेगी उन पर जब वह नहीं रहेगी? उसकी अच्छी भली जिन्दगी किस मोड़ पर आकर खड़ी हो गई? मम्मी का असीम प्यार दुलार भी उसे अपने निश्चय से विचलित नहीं कर पा रहा था। उसे तो बस मृत्युंजय के एक फोन ही प्रतीक्षा थी।

जल्दी ही वह दिन आ गया जिसका नीलिमा को बेसब्री से इंतजार था। मृत्युंजय ने बताया कि कैम्पस में आई कम्पनियों में से एक में उसे अच्छे पैकेज के साथ नौकरी मिल गई है।

नीलिमा की ऑखों में ऑसू आ गये। आज उसकी तपस्या सार्थक हो गई है। इस दिन के लिये उसने कितना नरक सहा है, लेकिन अब नहीं.......।

“मम्मी, अब नौकरी नहीं करूँगी, मैं कल अपना त्यागपत्र दे देती हूँ ।"

“बिल्कुल, बेटा। अब हमारी सारी मुसीबतें दूर हो गईं हैं, अब तुम्हें नौकरी की जरूरत नहीं है लेकिन तुम्हारे बॉस तो विदेश गये हुये हैं।"

“तो क्या हुआ, मैं कल आफिस जाकर अपना त्यागपत्र बॉस की जगह काम देखने वाले दूसरे आफीसर को दे आऊँगी और आखिरी बार सबसे मिल भी आऊँगी।"

“ठीक है।"

उसने सुकन्या को फोन से बताया तो वह भी बहुत खुश हुई ;-”तुम्हारे उस समय के उचित निर्णय के कारण यह संभव हुआ, अब निश्चिंत होकर पढ़ाई करना।"

दूसरे दिन सारा दिन नीलिमा घर के बाहर रही और शाम को घर आकर मम्मी को बताया कि उसने त्यागपत्र दे दिया है। नीलिमा मन ही मन अपने निश्चय को दोहराती लेकिन मम्मी का सोंचकर मन डगमगा जाता। चौथे दिन दोपहर को उसने कहा -”मम्मी मेरा आज रसगुल्ले और समोसे खाने का मन कर रहा है।"

“ कल बना दूँगी।"

“नहीं, मेरा आज ही खाने का मन है। दो रसगुल्ले और चार समोसे के लिये मेहनत करने की क्या जरूरत? आप ज्यादा से बना लेंगी और मैं कई दिन तक खा खाकर ऊब जाऊॅगी। आप बाजार से ला दीजिये।"

“ठीक है, खाना खा लो फिर मुझे कुछ घरेलू सामान भी बाजार से लाना है। तुम्हारे रसगुल्ले और समोसे लेती आऊॅगी।” मम्मी प्यार से दुलराते हुये हॅस दीं।

उन्हें उस पर बहुत प्यार आ रहा था, न जाने कितने दिन बाद नीलिमा ने इतने प्यार से जिद करके कुछ खाने के लिये कहा था।

मम्मी को लौटने में करीब दो ढ़ाई घंटे लग गये। बहुत देर तक घंटी बजाने और दरवाजा खटखटाने के बाद भी जब नीलिमा ने दरवाजा नहीं खोला तो घबड़ाकर उन्होंने पड़ोसियों को आवाज दी। दरवाजा न खुलना था और न खुला। पुलिस बुलाई गई और दरवाजा तोड़ा गया लेकिन नीलिमा तब तक दुनिया छोड़कर जा चुकी थी और उसके पास ही मेज पर आत्महत्या का नोट पड़ा था जिसमें लिखा था कि अपनी मृत्यु के लिये वह खुद उत्तरदाई है, अपनी मर्जी से दुनिया छोड़कर जा रही है।

बहन की आत्महत्या सुनकर मृत्युंजय आया। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि नीलिमा ने ऐसा क्यों किया?

मृत्युंजय का मन माँ को अकेले छोड़कर जाने का नहीं था, कैसे सूने घर में मॉ को अकेले रहने दे? नीलिमा का दुख मम्मी अकेले कैसे ढ़ो पायेंगी? एक मॉ ही तो बची हैं ।पापा पहले ही छोड़कर जा चुके हैं, नीलिमा तो न जाने क्यों बीच मझधार में छोड़कर चली गई। मृत्युंजय यह सोंचकर काँप उठा कि अकेले घर में छोड़कर जाने से कहीं वह मम्मी को भी न खो दे।

लेकिन मम्मी नहीं मानी -” जो  हो गया लौटेगा नहीं। अपनी पढ़ाई पूरी करके इम्तहान दे ले फिर जहॉ तुम्हारी नौकरी होगी, ले चलना। अभी तुम खुद चार दोस्तों के साथ एक कमरे में रहते हो, मेरे चलने से परेशानी होगी। कुछ दिन मैं नीलू की यादों के सहारे गुजार लूँगी ।"

मृत्युंजय भी जानता था कि मम्मी ठीक कह रही हैं लेकिन उसका अपना मन नहीं मान रहा था। आखिर मॉ ने समझा बुझाकर मृत्युंजय को वापस भेज दिया।

                                          ( 5 )

नीलिमा की अचानक मृत्यु की खबर सुनकर सुकन्या के मम्मी पापा तुरन्त आये लेकिन लाख समझाने पर भी सुकन्या आने को तैयार नहीं हुई।

रोते हुये कहा उसने -”मैं नीलिमा का मृत शरीर देखने नहीं जा सकती। मैं कभी उसे मृत नहीं मानूँगी, मेरे लिये नीलिमा कभी नहीं मर सकती। आप लोग जाइये।"

“बेटा, हम लोगों को कश्यप साहब के यहाँ एक दो दिन रुकना पड़ेगा। तुम अकेले कैसे रहोगी?"

“मैं रह लूँगी, आप लोग जाइये।"

न चाहते हुये भी उन लोगों को सुकन्या को अकेले छोड़कर आना पड़ा । सुकन्या की पढ़ने की मेज पर ही उन दोनों की संयुक्त फोटो रखी थी। मोबाइल में तो न जाने कितनी थीं। उन्हीं को खोलकर देखती रहती -”तुम ऐसे कैसे चली गईं नीलू, वह भी आत्महत्या की तुमने? क्यों? सब तो ठीक हो गया था, जय को नौकरी मिल गई थी, तुम्हारी तपस्या सार्थक हो गई थी, नौकरी की तुम्हारी मजबूरी खतम हो गई थी और तुमने नौकरी छोड़ भी दी थी । तुम तो बहुत खुश थीं फिर तुम्हें आत्महत्या क्यों करनी पड़ी? किसी से न सही मुझे तो बता सकती थीं।"

सुकन्या उसकी तस्वीर से बातें करते करते रो पड़ती -” तुमने मुझे धोखा दिया है, तुम्हें कभी माफ नहीं करुँगी मैं ,ऐसे बीच में छोड़कर तुम कैसे जा सकती हो? चाची, जय और मेरे बारे में जरा भी नहीं सोंचा? मुझे अब भी विश्वास नहीं होता नीलिमा कि तुम अब कभी नहीं मिलोगी, कभी तुम्हारे फोन नहीं आयेंगे, कभी हम पहले की तरह एक दूसरे से घंटों बातें नहीं कर पायेंगे।"

सुकन्या को विश्वास नहीं हो रहा था कि परिस्थितियों की अनुकूलता पर विश्वास करने वाली उसकी नीलिमा आत्महत्या कर सकती है। उसे लग रहा था कि मम्मी पापा के साथ न जाकर उसने बहुत बड़ी गलती कर दी। उसे आखिरी बार नीलिमा से मिलने जाना चाहिये भले ही मृत नीलिमा से लेकिन अब क्या करे, अब तो नीलिमा चिता के रथ पर बैठकर अनंत में विलीन हो गई है और अपने पीछे छोड़ गई है कई अनुत्तरित प्रश्न।

नीलिमा की मृत्यु का चौथा दिन था जब सुकन्या को एक रजिस्टर्ड पत्र मिला, सुकन्या ने हस्ताक्षर करके पत्र ले तो लिया लेकिन पते पर नीलिमा की राइटिंग देखकर चौंक गई -”नीलिमा को गये तो चार दिन हो गये फिर यह पत्र?"

सुकन्या ने सबसे पहले पत्र की तारीख पर नजर डाली तो समझ गई कि यह पत्र नीलिमा ने अपनी मृत्यु से दो दिन पहले लिखकर पोस्ट किया है। रजिस्टर्ड पत्र होने के कारण आज प्राप्त हुआ है।

उस पत्र ने सुकन्या की सारी जिज्ञासाओं, उलझनों, परेशानियों और प्रश्नों का उत्तर दे दिया। नीलिमा ने कुछ नहीं छुपाया, शुरू से आखिरी तक सब बता दिया। पत्र के साथ वो तस्वीरें भी थीं जिसके माध्यम से बॉस उसे ब्लेकमेल करते थे।

सुकन्या का दिल बैठने लगा, इतनी मानसिक यंत्रणा सहकर भी उसने अपने परिवार की नाव मझधार में नहीं छोड़ी। जय की नौकरी लगने तक सब सहती रही और अंत में सब समेटकर चली गई । कहते हैं कि कलाई पर राखी बॉधकर बहन अपने भाई से अपनी रक्षा और संरक्षता का वचन मॉगती है लेकिन नीलिमा ने तो मृत्युंजय के जीवन और कैरियर के लिये अपना सब कुछ यहॉ तक प्राण भी न्यौछावर कर दिया।

सुकन्या जैसे जैसे पत्र पढ़ती जा रही थी, उसका खून खौलता जा रहा था। उस दिन उसने पूरा दिन कुछ नहीं खाया, मम्मी से फोन पर ज्यादा बात नहीं की। वो भी उसकी स्थिति समझती थीं, इसलिये बार बार अपना ख्याल रखने को कहा। अब सुकन्या को लगा कि उसके मम्मी के साथ न जाने की जिद के पीछे कुदरत का यही संदेश छिपा था कि उसे नीलिमा का यथार्थ पता भी चल जाये और किसी दूसरे को मालुम भी न हो।

सुकन्या को खुद पर गर्व हो आया। उसे याद आ रही थी पत्र की वो पंक्तियॉ -”जीवन में पहली बार तुमसे कुछ छुपाया है मैंने। जानती हूँ कि जीवन भर तुम्हें मेरी आत्महत्या का यह प्रश्न ”क्यों” सताता रहेगा, इसलिये तुम्हें सब बता रही हूँ । कम से कम तुम मुझे गलत नहीं समझोगी, मेरी विवशता समझोगी। पहले बता देती तो मेरे साथ और भी बहुत कुछ बरबाद हो जाता, उसी बरबादी को बचाने के लिये अभी तक चुप भी रही और आत्महत्या भी नहीं की थी ।”

सुकन्या का मस्तिष्क काम नहीं कर रहा था, वह अपनी प्यारी सहेली को इतनी यंत्रणा देने वाले को कभी क्षमा नहीं कर सकती। नीलिमा की यंत्रणा और उसकी मृत्यु का उसके बॉस से बदला लिये बिना वह चैन नहीं लेगी, चाहे इस प्रयत्न में उसकी मृत्यु भले हो जाये।

लेकिन कैसे? किसकी सहायता ले? क्या पुलिस को बता दे? लेकिन पर्याप्त प्रमाण के अभाव में रिश्वत के बल पर बॉस मिo वरदान आहूजा का कुछ नहीं बिगड़ेगा। फिर ..... बॉस के आफिस में जाकर उसे गोली मारकर खुद को गोली मार ले? लेकिन इससे क्या होगा, अपनी जान देकर भी नीलिमा की यंत्रणा का बदला तो ले नहीं पायेगी? मात्र मृत्यु बॉस का दंड नहीं है, उसे तो मृत्यु से भी भयंकर यंत्रणा मिलनी चाहिये। फिर क्या करे....... क्या मृत्युंजय को बता दे? लेकिन क्या वह बर्दाश्त कर पायेगा? कहीं उत्तेजना में गलत कदम उठा लिया तो नीलिमा की सारी तपस्या और बलिदान व्यर्थ हो जायेंगे।

नीलिमा ने केवल उसे अपना रहस्य बताया है तो जो कुछ भी करना है उसे अकेले ही करना है बिना किसी को बताये। नीलिमा ने सिर्फ उस पर विश्वास किया है। नीलिमा तो चली गई, अब सुमन चाची का एकमात्र सहारे मृत्युंजय का कैरियर और जीवन दाँव पर नहीं लगा सकती वह ।

सुकन्या के सामने अपना तीनों का बचपन तैर गया। मृत्युंजय और नीलिमा के साथ बिताये क्षण ऑखों के सामने तैर गये । मृत्युंजय हमेशा उन दोनों की हर काम में सहायता तो करता था लेकिन हमेशा एक कठोर अनुशासन में भी रखता था। इसी  कारण पीठ पीछे दोनों उसका ”हिटलर” कहकर मजाक भी उड़ाती थीं।

उसकी और नीलिमा की सहेलिया एक ही थीं, इसलिये सहेलियों के यहॉ जन्मदिन या ऐसे ही कभी देर तक रुकना हो तो वे दोनों मृत्युंजय के पीछे पड़ जातीं कि वह उन्हें सहेली के घर छोड़ कर भी आये और लेकर भी आये। कालेज का फंक्शन हो या किसी सहेली की शादी, आफत मृत्युंजय पर ही आती थी और मृत्युंजय भी कम खुशामद नहीं करवाता था दोनों से।

“मैं आने के पहले फोन कर दूँगा, मुझे गेट पर खड़ी मिलना तुम लोग। मुझे एक मिनट भी इंतजार न करना पड़े, नहीं तो मैं वापस लौट आऊँगा फिर जैसे मन हो आना ।"

“ ठीक है ,हम लोग तुम्हें बाहर ही मिलेंगे।"

फिर दोनों के घरों से उन दोनों के जाने अनुमति भी उसे ही दिलानी पड़ती -”जाने दीजिये, आप लोग चिन्ता न करें। मैं छोड़ भी आऊँगा और लिवा भी लाऊँगा।"

दोनों को मालुम था कि अगर मृत्युंजय ने मना कर दिया तो उन्हें जाने की इजाजत ही नहीं मिलेगी। इसलिये उसकी खुशामद करनी पड़ती थी।

“पूरे हिटलर है, जरा से काम के लिये कितनी मिन्नत करवाते हैं।"

“यही क्या कम है कि राजी हो जाते हैं, नहीं तो जा भी न पाते। काम निकलवाना हो तो इतना तो करना ही पड़ेगा हमें।"

“हॉ सचमुच, कहते हैं न मतलब पड़ने पर गधे को भी......।"

“अरे, चुप रहो यार, सुन लेंगे तो जायेंगे भी नहीं।” और दोनों की खिलखिलाहट बिखर जाती।

मृत्युंजय बड़ा था और अपनी वरिष्ठता को कायम रखता था। दोनों लड़कियों पर पूरा नियंत्रण रखता था। सुकन्या और नीलिमा उसके   इस कठोर नियंत्रण से कभी कभी बहुत झुंझला जाया करतीं -”सॉस भी लो तो इनको हिसाब देना पड़ता है।"

फिर हँस पड़तीं -”लेकिन वक्त पर काम भी तो वही आते हैं खोटे सिक्के की तरह।"

सुमन का बहुत मन था की नीलिमा की तरह सुकन्या भी मृत्युंजय को राखी बांधे लेकिन कश्यप साहब हमेशा हँसते हुए मना कर देते –“ ईश्वर यदि आवश्यक समझते तो उसे खुद ही भाई देते , यदि नहीं दिया है तो इच्छा| तुम क्यों उनके कम में रूकावट डालती हो ?” शायद उन्होंने कुछ आगे सोंच लिया था |

अक्सर नीलिमा कहती थी -”इतना खराब नहीं है मेरा भाई कि तुम ध्यान ही नहीं देती हो। कितना खुश होता है तुम्हारे आने से। मेरी भाभी बन जाओ, मेरे जैसी ननद मिलेगी नहीं तुम्हें।"

सुकन्या भी हॅसकर कह देती -”तुम्हारे जैसी ननद के लालच में फॅसने वाली नहीं हूँ  मैं। वो हिटलर तो मेरी ओर देखता भी नहीं है, अपना भाई अपने पास रख।”

लेकिन सुकन्या जानती थी कि भले ही अब मृत्युंजय उनका साथ नहीं देता है लेकिन उसे देखकर मृत्युंजय के ऑखों और चेहरे पर आई दमक से अनजान नहीं थी वो। इसीलिये मृत्युंजय के लिये हमेशा उसके मन में एक कोमल कोना बना रहा। मन ही मन प्यार करती थी उसे।

अपना कर्त्तव्य निश्चित किया उसने। मम्मी पापा के लौट के आने के बाद उसने उनसे कहा कि वह कुछ दिन के लिये सुमन चाची के पास जाकर रहना चाहती है, जिससे उनसे नीलिमा का दुख बॉट सके। घर में किसी को कोई एतराज नहीं था।

सुकन्या के आने से सुमन को लगा कि जैसे उनके जलते जख्मों पर किसी ने मरहम रख दिया हो। मृत्युंजय ने भी फोन पर सुकन्या को धन्यवाद दिया -”इम्तहान होने तक मैं मम्मी के लिये बहुत परेशान था, तुमने मेरी चिन्ता दूर कर दी। तुम ऐसे समय मम्मी के पास आई हो कि मैं तुम्हारा कृतज्ञ हो गया।"

“जय, इस तरह कहकर मुझे पराया क्यों कर रहे हो? क्या मैं इस परिवार का हिस्सा नहीं हूँ ? तुम चिन्ता न करो, मैं चाची का पूरा ध्यान रखूँगी। अपनी पढ़ाई और कैरियर पर ध्यान दो। नीलिमा की यही इच्छा थी। शायद तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिये नीलिमा ने पढ़ाई छोड़कर नौकरी की थी।"

मृत्युंजय फोन पर ही रो पड़ा -”हॉ जानता हूँ तभी तो समझ में नहीं आता कि उसने आत्महत्या क्यों कर ली? अब तो सब ठीक हो गया था। कहीं प्यार वगैरह .......।”कहते कहते रुक गया मृत्युंजय।

“नहीं जय, नीलिमा की जिन्दगी में कोई नहीं था।"

“फिर.........।"

“भूल जाओ जय। जो हो गया वह लौटेगा नहीं, अब तुम्हारा कैरियर ही उसे सच्ची श्रद्धांजलि है।"

यहॉ आकर उसकी सोंच को एक दिशा मिलनी शुरू हो गई। उसने नीलिमा के आफिस में फोन किया तो उसे पता चला कि आफिस में सेकेट्री की जगह के लिये इंटरव्यू तो लिया गया है लेकिन अभी तक बॉस को कोई लड़की उचित नहीं लग रही है।

दूसरे दिन सुकन्या नीलिमा के आफिस गई। वहॉ उसने रिसेप्शनिस्ट से बहुत विनती करके कहा -”मुझे एक बार साहब से मिल लेने दीजिये, शायद मेरी किस्मत साथ दे जाये।"

“आप मेरी बात समझने की कोशिश कीजिये, बॉस इस तरह बिना पहले से समय लिये किसी से नहीं मिलते। जब रिक्त स्थान का विज्ञापन प्रकाशित हो तब आप भी आवेदन कीजियेगा।"

लेकिन सुकन्या नहीं मानी, वह वहीं रिसेप्शनिस्ट के पास कुर्सी पर बैठ गई -”आप आज इस कुर्सी पर हैं लेकिन कभी तो आप भी नौकरी के लिये भटक रहीं होंगी, स्त्री होकर भी आप मेरी सहायता नहीं करना चाहती हैं। मैं आपसे किसी प्रकार की सिफारिश के लिये नहीं कह रही, बस एक बार मुझे बाँस  के पास भेज दीजिये, आगे मेरी किस्मत ।"

“मैं आपकी सहायता करना तो चाहती हूँ  लेकिन मेरी भी मजबूरी है। अच्छा ठीक है, आप यहीं रूकिये ।बाँस लंच समय में इधर से ही निकलेंगे, उस समय मैं कोशिश करूँगी, अगर बॉस का मूड सही हुआ तो ठीक है, वरना मुझे डॉट पड़ जायेगी।"

“आपकी शुक्रगुजार रहूँगी ।"

लंच के समय जब बॉस रिसेप्शनिस्ट के सामने से होकर गुजरे तो एक नये चेहरे को देखकर थोड़ा ठिठक गये। तभी रिसेप्शनिस्ट को खड़े होते देख सुकन्या भी उठकर खड़ी हो गई। रिसेप्शनिस्ट ने बॉस को अभिवादन करते हुये कहा - सर, यह लड़की सुबह से आपसे मिलने के लिये बैठी है, मेरे मना करने के बाद भी नहीं मानती।"

बॉस ने उसे गौर से देखा, इस समय वह गहरे गले का बिना बाहों वाला टाप और जीन्स पहने थी -”लंच के बाद इसे मेरे पास भेज देना।"

बॉस चले गये तो उस रिसेप्शनिस्ट ने सुकन्या से कहा -”अभी ज्यादा उम्मीद मत पालना, बॉस का कोई ठीक नहीं है।"

“कोई बात नहीं, आपने मेरे लिये जो किया, वही बहुत है।"

लंच के बाद जब सुकन्या बॉस के पास गई तो पहले तो वो उसे ऑखों से तौलते रहे, फिर पूँछा -” हाँ, बोलिये क्यों मिलना चाहती थीं आप मुझसे?"

सुकन्या ने जब बताया कि वह सेकेट्री की नौकरी के लिये आई है तो उन्होंने कहा -”सेकेट्री का मतलब व्यक्तिगत सहायक भी होता है। क्या तुम जानती हो कि सेकेट्री और व्यक्तिगत सहायक का कार्य क्या होता है?"

“जी सर, आप जो कहेंगे मैं करुँगी। आपको कभी शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा।"

“आपके पास न अधिक शैक्षिक योग्यता है और न कोई अनुभव। आपको यह नौकरी कैसे दी जा सकती है जबकि हमें अधिक शैक्षिक योग्यता और अनुभव वाले कर्मचारी आसानी से मिल रहे हैं।"

“सब जगह से निराश होकर आपके पास आई हूँ , आप मुझे निराश न करिये। अगर हर व्यक्ति यही कहेगा तो अनुभव आयेगा कहॉ से?"

फिर उसने आगे बढ़कर बॉस के हाथ पर अपना हाथ रखकर हटा लिया और बहुत मिन्नत भरे शब्दों में कहा -”सर, मैंने सुना है कि आप मेहनती और ईमानदार व्यक्ति को अवसर देते हैं। मुझे भी एक अवसर देकर देखिये, अगर मैं आपको संतुष्ट न कर सकूँ तो आप मुझे तुरन्त नौकरी से निकाल दीजियेगा, मैं कुछ नहीं कहूँगी|"

“ठीक है, मुझे सोंचने का अवसर दो। अपना फोन नम्बर दे दो। तुम्हें सूचित कर दिया जायेगा।"

सुकन्या ने अपना नम्बर दे दिया। दूसरे दिन सुकन्या के पास फोन आ गया कि वह आकर अपना नियुक्ति पत्र ले ले, उसे नौकरी मिल चुकी थी। सुकन्या की योजना का प्रथम चरण पूरा हुआ।

अब उसने अपने पापा को फोन किया -”सुमन चाची बहुत परेशान हैं और मैं चाची के पास कुछ दिन और रहना चाहती हूॅ।"

“लेकिन तुम्हारी पढ़ाई....... ।'

“मैं इस साल पढ़ाई नहीं कर पाऊॅगी, आप लोग समझ सकते हैं कि मेरी क्या स्थिति है? चाची के पास रहकर मुझे बहुत तसल्ली मिल रही है।"

“ठीक है, मैं हर महीने तुम्हारे लिये पैसे भेजता रहूँगा जिससे उन्हें बोझ न महसूस हो।"

“नहीं पापा, मुझे और चाची को नीलिमा की यादों से बाहर आना है इसलिये मैंने अपने लिये नौकरी ढूंढ ली है। खुद भी व्यस्त रहूँगी  और अपने तमाम कामों से चाची को भी व्यस्त रखूँगी ।"

फिर उसने पापा को एक दूसरी कम्पनी का नाम और वेतन बता दिया, वह जानती थी कि पापा को नीलिमा की कम्पनी का नाम मालुम है। यही नाम उसने सुमन चाची को भी बताया। बड़ी मुश्किल से मम्मी पापा राजी हुये -” तुम्हें जितने दिन रहना है, रहो। नौकरी की क्या जरूरत है?"

“जरूरत है मम्मी। कमबख्त नीलिमा हर वक्त याद आती है इसलिये अपने को व्यस्त रखना जरूरी है।"

सुमन जी को पता चला तो वो खुश हो गईं, उन्हें विश्वास हो गया कि अब सुकन्या ज्यादा दिन उसके पास रहेगी।

सुकन्या आफिस के काम से अधिक बॉस वरदान आहूजा के व्यक्तिगत कार्यों का अधिक ख्याल रखने लगी, कैसे कपड़े पहनने हैं , कहाँ और किसके साथ  जाना है इससे बॉस अधिक खुश रहते थे। बॉस को कब कहॉ क्या करना है, किसके साथ मीटिंग है -  यह तो उसका कार्य था ही लेकिन सुकन्या ने तो धीरे धीरे व्यक्तिगत जीवन में दखल देना शुरू कर दिया।

वरदान की गलत हरकतों के लिये उसने न कभी रोका और न ही कुछ कहा बल्कि ऐसे समय वह हल्के से मुस्करा देती जिससे वरदान को बढ़ावा मिलता। कभी सुकन्या खुद बॉस वरदान को गले लगा लेती फिर अगले ही क्षण ”सारी ” कहकर पीछे हट जाती।

पहले बॉस लंच के लिये कैन्टीन या बाहर जाया करते थो लेकिन अब वो लंच के लिये बाहर नहीं जाते थे बल्कि अब उनका और सुकन्या का लंच आफिस में ही आने लगा। बॉस और सुकन्या साथ ही लंच करने लगे। कई बार आफिस के लोगों ने उन दोनों को एक दूसरे को अपने हाथों से खाना खिलाते देखा। इतनी जल्दी बॉस और सुकन्या के गहराते सम्बन्ध से सब हैरान थे। ऐसा तो कभी नहीं हुआ था। सुकन्या के हिस्से के आफिस के सारे काम दूसरों को सौंप दिये जाते और सुकन्या को लेकर बॉस पूरा दिन मीटिंग के बहाने गायब रहने लगे।

अब सुकन्या को लगने लगा कि इतने से काम नहीं चलेगा तो एक दिन उसने वरदान से कहा -”सर, मेरा घर यहाँ से बहुत दूर है, आने जाने में ही मेरा बहुत समय बरबाद हो जाता है। उस पर मेरी मकान मालकिन की तमाम पाबन्दियों ने मेरा जीना हराम कर दिया है। घर आने में दस बजे से देर नहीं होनी चाहिये, वरना गेट नहीं खुलेगा। मेरा कोई पुरुष मित्र घर नहीं आ सकता। मैं तो तंग आ गई हूँ , कहाँ तक हिसाब दूँ? इसीलिये आपके कहने के बावजूद मैं रुक नहीं पाती। अगर आप मेरे रहने की व्यवस्था कर दें तो मैं आपकी आभारी रहूँगी ।"

“ठीक है, मैं एक दो ब्रोकर से बात करके तुम्हें मकान दिलवा देता हूँ ।”वरदान खुश था कि अब वह सुकन्या को रात देर तक रोक सकेगा। उसके घर भी  जा सकेगा।

बहुत फ्लैट दिखाये ब्रोकर ने लेकिन कोई सुकन्या को तो कोई वरदान को पसंद ही नहीं आया। आखिर हारकर ब्रोकर ने कहा -”सर, जैसा फ्लैट आप लोग चाहते हैं, वैसा एक फ्लैट है तो लेकिन वह किराये पर नहीं मिल सकता, उसके मालिक उसे बेंचना चाहते हैं अगर आप इच्छुक हों तो मैं बात करवा सकता हूँ।"

“ठीक है, तुम पहले दिखाओ। मैडम को पसंद आ गया तो सोचेंगे।"

दूसरे दिन ब्रोकर उन्हें पूर्ण सुसज्जित फ्लैट में ले गया -”देख लीजिये, आपको इससे अच्छा घर मिलेगा नहीं।"

“तुम्हें पसंद है?”वरदान ने सुकन्या से पूँछा।

“पसंद तो बहुत है लेकिन मेरे पास ........।"

“बस, आगे कुछ नहीं।” फिर उन्होने ब्रोकर से कहा कि हम विचार करके बतायेंगे।

सुकन्या ने फ्लैट खरीदने में अनिच्छा दिखाई -”मेरे पास इतने पैसे कहाँ हैं कि मैं इतना मंहगा फ्लैट खरीद सकूँ। रहने दीजिये, मैं जैसे रह रही हूँ वैसे ही ठीक है।"

“तुम पैसे की चिन्ता क्यों कर रही हो? अगर तुम्हें पसंद है तो समझो फ्लैट तुम्हारा हुआ। कैसे, यह सोंचना मेरा काम है। तुम मेरा इतना ख्याल रखती हो तो मेरा भी तो कुछ फर्ज है।"

“मैं तो आपको प्यार करती हूँ  इसलिये.........। तीर छोड़कर जान बूझकर चुप हो गई।

“क्या, जरा फिर से कहना, मैंने ठीक से सुना नहीं। ”वरदान के चेहरे पर मुस्कान छा गई।

“आप सब कुछ जानते हैं, फिर भी अनजान बनते हैं।” वरदान ने उसे अपने समीप खींच लिया। अधर से अधर मिल गये। सुकन्या ने ऑखें बंद कर ली, उसका रोम रोम घृणा से तड़प उठा लेकिन अपनी नीलिमा की मृत्यु और यंत्रणा का बदला लेने के लिये तो उसे वेश्या बनना भी स्वीकार है।

“फिर अब कोई बहस नहीं, हम यह फ्लैट खरीद रहे हैं जहाँ शान्ति के कुछ पल आराम से बिता सकें।"

सुकन्या ने सिर अपना झुका लिया -” जब आपने फैसला ले ही लिया है तो मैं क्या कह सकती हूँ ?"

वरदान ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया - खूबसूरत चेहरों पर उदासी अच्छी नहीं लगती और तुम तो बहुत सुंदर हो।"

सुकन्या ने सुमन को बताया कि उसे आफिस की ओर से फ्लैट मिलने वाला है तो उन्हें अच्छा नहीं लगा।

नीलिमा के अभाव में उन्हें सुकन्या से बहुत लगाव हो गया था -” मैं आने जाने में बहुत थक जाती हूँ  तो मेरे पास प्रतियोगिता परीक्षाओं की पढ़ाई के लिये समय ही नहीं बचता है।"

“यह बात तो है। नीलू भी बहुत थक जाती थी। लेकिन बेटा नौकरी की क्या जरूरत है? वापस लौट जाओ और अपनी पढ़ाई करो नीलू तो अब लौटकर आयेगी नहीं, मैं किसी तरह रह लूँगी।"

“अगर नौकरी नहीं होगी तो मम्मी मुझे वापस बुला लेंगी और मैं आपको छोड़कर जाना नहीं चाहती। इस शहर में रहूँगी  तो मुझे तसल्ली रहेगी। जब आपको जरूरत होगी, एक फोन करना आ जाऊॅगी। छुट्टी के दिन तो आपके हाथ का खाना खाने आऊॅगी ही। आप ढ़ेर सारा नाश्ता बनाकर दे देना जिससे एक सप्ताह मेरा उससे काम चल सके। नीलिमा नहीं है लेकिन आपकी यह बेटी अभी जिन्दा है। आखिर मेरा भी फर्ज है।"

दोनों की ऑखों से प्रेम और ममता के साथ नीलिमा की यादों के भी ऑसू गिरने लगे।

“लेकिन आपको मेरी एक बात माननी होगी।"

“क्या बेटा।"

“मम्मी पापा को यह बात पता नहीं चलनी चाहिये कि मुझे फ्लैट मिल गया वरना वो लोग मुझे एक दिन भी यहॉ रहने नहीं देंगे। ”सुकन्या ने उनके गले में बॉहें डाल दी -”मेरे लिये इतना झूठ तो बोलना ही पड़ेगा।

जब वरदान ने  सुकन्या के नाम से फ्लैट खरीदा तो वह दिखावे के लिये मना करने लगी -”मेरे नाम से नहीं अपने नाम से लीजिये जिससे जब आप मुझे कभी नौकरी से निकाल दें तो आपकी सम्पत्ति आपके पास रहे। मैं इसमें एक किरायेदार की हैसियत से रहूँगी और हर महीने अपने वेतन से आपको किराया दे दिया करूँगी।"

“मुझे प्यार भी करती हो और इतना संदेह भी करती हो? तुम्हारा यही स्वाभिमान और खुद्दारी तो मुझे अच्छी लगती है।”वरदान मुस्करा दिया -”अब तो यह फ्लैट मैं तुम्हारे नाम से ही खरीदूँगा जिससे कभी रुद्रा मुझे अपने घर से निकाल दे तो तुम्हारी बॉहों में पनाह पा सकूँ। तुम इस फ्लैट की मालकिन रहोगी, कोई इसे तुमसे छीन नहीं पायेगा।"

“कभी आपको यह न लगे कि मैं आपसे पैसे के लिये प्यार करती हूँ तो .......।”सुकन्या की ऑखों में नीलिमा को याद करके ऑसू आ गये -” उस दिन तो मैं मर ही जाऊँगी।"

“कैसी पागलों जैसी बातें करती हो? मैं तुम पर संदेह कैसे कर सकता हूँ?” वरदान ने उसे गले से लगा लिया।

फ्लैट के साथ वरदान ने सुकन्या को नई कार भी खरीदकर दी। वह बहुत खुश था लेकिन सुकन्या बहुत उदास दिख रही थी -”क्या बात है, आज खुशी के अवसर पर तुम इतनी उदास क्यों हो?"

“आप से मना करती हूँ तो आप मानते नहीं हैं लेकिन मैं सोंच रही हूँ  कि क्या करूँगी इस इतने बड़े फ्लैट का, रहना तो मुझे अकेले ही है। आपके पास तो पत्नी है, बच्चे हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा है मेरे पास अकेलेपन के सिवा कुछ नहीं है।” सुकन्या फूट फूटकर रो पड़ी।

“इतना भावुक होने से कैसे काम चलेगा?”वरदान ने उसे अंक में समेट लिया।

“आप तो बहुत अच्छे हैं, मेरा बहुत ख्याल भी रखते हैं और मुझे प्यार भी करते हैं लेकिन क्या करूँ ? कभी कभी मन बहुत घबड़ाने लगता है।"

“बेकार की बातें अधिक मत सोंचा करो, तुम्हारी सुंदरता के लिये हानिकारक है।” सुकन्या मुस्करा दी लेकिन कुछ बोली नहीं।

“लेकिन तुम मेरा बिल्कुल ख्याल नहीं रखती।”वरदान ने रहस्य भरे स्वर में मुस्कराते हुये कहा।

“आप यह क्या कह रहे हैं? मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ ।"

“दिन पर दिन मेरी प्यास तो बढ़ाती जा रही हो लेकिन उसे बुझाने का कोई प्रबन्ध नहीं करती। कितने बार कहा कि मेरे साथ टूर पर चलो लेकिन तुम मना कर देती हो। अब मुझसे और सब्र नहीं होता।"

सुकन्या ने अपनी दोनों बाँहें वरदान के गले में डाल दी -” अब मुझसे ही कहाँ सब्र होता है लेकिन यह सोचकर रुक जाती हूँ  कि आपकी पत्नी और बच्चों के साथ विश्वासघात है यह। प्यार का अर्थ मात्र दैहिक नहीं है आपसे मुझे इतना ही मिलता रहेगा तो मैं सारी जिन्दगी आपके नाम के सहारे काट लूँगी। मुझे आपसे इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये।"

वरदान से उसे गोद में खींच लिया और उस पर चुम्बनों की वर्षा कर दी -”लेकिन मुझे तो तुमसे सब कुछ चाहिये। रुद्रा ने ही तृप्त किया होता तो मैं क्यों भटकता? उसे मेरी परवाह ही नहीं है। अलग कमरे हैं हमारे, एक छत के नीचे रहकर पति पत्नी होने का दिखावा करते हैं हम। तुमने मुझे जो दिया है वह रुद्रा से कभी मिला ही नहीं।” साफ झूठ बोल रहा था वह लेकिन खुद नहीं जानता था कि वह सुकन्या के चंगुल में बुरी तरह फॅसता जा रहा है।

वरदान कई दिन तक सोंचता रहा था कि सुकन्या फ्लैट में आने के बाद खुद उससे आने के लिये कहेगी। वह सोंच रहा था कि सुकन्या को उसने अपने प्यार के धोखे में फॅसा लिया है लेकिन उसे क्या पता कि शिकारी खुद शिकार हो गया है।

जब कई दिन तक सुकन्या ने इस संबंध में कोई बात नहीं की तो उसने खुद सुकन्या से पूँछा- ”फ्लैट लिये इतने दिन हो गये,अभी तक तुमने उसमे रहना शुरू नहीं किया । अब अपने फ्लैट में जल्दी से आओ, अब क्या बात है?”

“सर.......।"

“पहले तो तुम ”सर” कहना छोड़ो। कब तक सेकेट्री बनी रहोगी? चलो पहले मेरा नाम लेकर बोलो फिर कुछ बात सुनूँगा ।"

“लेकिन .…... अगर नाम लूँगी तो आप को “तुम” भी कहना पड़ेगा। नहीं ..... मैं यह नहीं कर  सकती |"

“फिर आज से मेरी तुम्हारी बोलचाल बन्द....।” वरदान ने नकली नाराजगी दिखाई| वह हल्के से  मुस्करा रहा था।

सुकन्या ने लजाते हुये वरदान का नाम ले दिया तो वरदान ने उसे अपने से लिपटाते हुए कहा  -” अब  हमेशा नाम लेकर ही  बोलना। बताओ क्या समस्या है?"

“मैं बहुत असमंजस में हूँ । कभी सोंचती हूँ कि नौकरी छोड़ दूँ  लेकिन तुम्हारे बिना मैं रह भी नहीं सकती।” सुकन्या की ऑखों से ऑसू गिरने लगे।

“रह तो मैं भी तुम्हारे बिना नहीं सकता।"

“तो रुद्रा जी.......।"

“मैं कोई रास्ता निकालूँगा , तुम चिन्ता मत करो। अभी तुम अपने फ्लैट में आ जाओ।"

“ठीक है लेकिन मेरी एक ख्वाहिश है, तुम्हें उसे पूरी करना पड़ेगा।"

“बोलो।"

“जिस दिन मैं फ्लैट में जाऊॅगी उस रात तुम मेरे पास रहोगे। अपने सपनों के घर में पहली रात मैं अकेली नहीं रहूँगी ।"

वरदान बेहद खुश हो गया। सुकन्या खुद आमंत्रण दे रही है। अभी तक उसे सुकन्या से वह नहीं मिल पाया था जो वह चाहता था।

सुकन्या ने दो दिन की छुट्टी ली -” परसों शाम को तुम आना। उसी दिन सुबह मैं अपने घर में प्रवेश करूँगी और वह शाम हमारे लिये ऐसी यादगार शाम होगी जिसे हम कभी नहीं भूल पायेंगे।"

“मैं दिन में आ जाता हूँ , मेरे साथ नये घर में प्रवेश करना।"

“नहीं वरदान, दो दिन मुझे तैयारी के लिये चाहिये। तुम्हारे लिये वह रात पता नहीं कैसी हो लेकिन मेरे लिये विशेष होगी।"

“मेरे लिये भी विशेष ही होगी।” और उसने सुकन्या के कपोल थपथपा दिये।

                                          ( 6 )

आखिर वह दिन आ गया जिसकी वरदान से अधिक सुकन्या को प्रतीक्षा थी। सुमन जी को समझाकर सुकन्या अपने फ्लैट में आ गई लेकिन आने के पहले अपनी योजना को साकार रूप देने के लिये कमरे में इस तरह छुपाकर दो आटोमेटिक ऐसे कैमरे रख दिये जो निर्धारित समय के बाद बिना छुये या बटन दबाये काम करने लगते थे। बेडरूम का सारा दृश्य अपने आप उन कैमरों में कैद हो सकता था।

वरदान का दिन भर खुशी के कारण काम में मन नहीं लग रहा था। रुद्रा से उसने सुबह ही कह दिया था कि वह रात को घर नहीं आ पायेगा क्योंकि उसे काम से बाहर जाना है, कल उधर से ही आफिस चला जायेगा।

शाम को जब वरदान बड़ा सा उपहार लेकर सुकन्या के फ्लैट पर पहुँचा तो सुकन्या ने मृदु मुस्कान से उसका स्वागत करते हुये कहा - ” मेरे घर में कदम  रखने वाले पहले अतिथि का बहुत बहुत स्वागत है।” वरदान ने उसे हॅसकर बॉहों में भर लिया।

“इसमें क्या है?”सुकन्या ने उपहार लेते हुये कहा।

“अन्दर चलकर देखना।"

वरदान ने स्वयं अपने हाथों से उपहार का डिब्बा खोलकर सुकन्या को दिखाया। हीरों के हार का पूरा सेट देखकर उसने ऑखें बन्द कर ली और मन ही मन कहा -”मुझे शक्ति दे नीलू। मुझे आशीर्वाद दे आज की सफलता के लिये।"

“क्या बात है, पसन्द नहीं आया क्या?"

“बहुत सुन्दर है लेकिन मैंने तुम्हें मना किया था कि मुझे कुछ नहीं चाहिये। तुम इसे ले जाकर रुद्रा जी को दे देना।”  जानती थी कि जितना वह मना करेगी उतना ही वरदान पर जुनून सवार होता जायेगा। वह अधिक से अधिक उस पर लुटाता जायेगा।

“यह तो तुम्हारे गृह प्रवेश का उपहार है, इसके लिये कैसे मना कर सकती हो तुम?”

बहुत मुश्किल से सुकन्या उपहार लेने के लिये मानी तो वरदान खुश हो गया फिर वरदान ने अपने हाथों से हार सुकन्या को पहनाकर प्यार से उसे बॉहों में भरकर गर्दन पर चूम लिया। सुकन्या ने प्यार से उसे हटाया और हँसते हुये किचन में चली गई। किचन में आकर उसने अपने क्रोध और ऑसुओं पर नियंत्रण किया।

फिर कुछ देर बाद नाश्ता और काफी ले आई। दोनों ने नाश्ता किया और बातें करने लगे।

रात गहराने लगी तो सुकन्या ”अभी आती हूँ ” कहकर अंदर चली गई और जब लौटी तो ट्रे को देखकर वरदान का मन खुश हो गया। उसके मनपसंद ब्राण्ड की शराब सामने थी। वरदान ने सुकन्या की ओर देखा -”इतनी समझदार पत्नियॉ क्यों नहीं होती?"

सुकन्या का चेहरा उतर गया -” मैंने तो आज की रात यादगार बनाने के लिये तुम्हें बुलाया था लेकिन अगर तुम्हें रुद्रा जी की याद आ रही है तो तुम इसी वक्त जा सकते हो।"

“तुम सामने हो तो किसी की याद कैसे आ सकती है?”वरदान ने उसे गोद में खींच लिया। वह उतावला हो रहा था लेकिन सुकन्या अलग बैठकर पैग बनाने लगी -”पूरी रात पड़ी है, जरा सुरूर तो आने दो।"

वरदान का पैग बनाने के बाद जब उसने अपना पेग बनाया तो वरदान दंग रह गया -”तुम तो पीती नहीं हो।” लेकिन सुकन्या ने पैग उठाकर कहा -”आज की यादगार शाम के नाम।"

वरदान बेहद खुश हुआ -”तुम बहुत समझदार हो।” वैसे उसने वरदान का साथ देने के लिये बियर पीना तो पहले ही शुरू कर दिया था लेकिन शराब आज पहली बार पी रही थी।

उसका लक्ष्य उसके सामने था, उसके लिये वह कुछ भी करने को तैयार थी। अपने गिलास में थोड़ी सी डालकर वह पूरा गिलास पानी और सोडा से भर लेती थी जबकि वरदान को अधिक से अधिक पिलाती जा रही थी और खुद नशे में होने का नाटक करती जिससे वरदान आगे बढ़े और उत्तेजित हो।

बहुत थोड़ा सा खाना खाया गया फिर सुकन्या ने उसे बेडरूम में भेज दिया -”तुम चलो, मैं यह सब किचन में रखकर आती हूँ ।"

थोड़ी देर बाद जब वह बेडरूम में गई तो वरदान बेसुध पड़ा था। उसने कैमरों में निर्धारित समय लगा दिया। इसके बाद जैसे ही कैमरे अपना काम करने लगे। उसने अपनी  और वरदान की कई निवस्त्र तस्वीरें खींची। तस्वीरें कुछ इस तरह थीं कि वरदान का चेहरा तो स्पष्ट था लेकिन सुकन्या का चेहरा वरदान के सीने में छुपा हुआ दिख रहा था। सुकन्या के कपड़े और शरीर स्पष्ट दिख रहा था ।तस्वीरें देखकर कोई भी कह सकता था कि यह रत क्रिया में मग्न जोड़े की तस्वीरें हैं।

अपना काम हो जाने के बाद सुकन्या ने कैमरे बंद करके रख दिये और अस्त व्यस्त कपड़े में आकर वरदान के बगल में आकर लेट गई। आज उसे बहुत दिन बाद अच्छी नींद आई थी।

सुबह वरदान उठा तो उसका सिर दर्द कर रहा था, कल रात का उसे कुछ याद नहीं था। बगल में अस्त व्यस्त सुकन्या गहरी नींद में सो रही थी।

वरदान उठकर बाथरूम में गया। वाश बेसिन में अच्छे से मुँह धोकर तौलिये से हाथ और मुँह पोंछते हुये जब दुबारा बेडरूम में आया तो सुकन्या को सोते हुये देखकर मुस्कुरा दिया। आखिर उसने सुकन्या को पा ही लिया। अब पक्षी उसके जाल में केवल छटपटाने के सिवा कुछ नहीं कर सकता | साथ ही वह सोंचने लगा कि यह  चिड़िया तो खुद ही उसके  जाल में आ गई है ,इसलिए इसका संजय के साथ बटवारा नहीं करेगा| प्यार के जाल में फँसी इस चिड़िया का जीवन भर  खुद ही भोग करेगा और जब उड़ने की कोशिश करेगी तो संजय के हवाले करके  वीडियो बना लेगा | अभी तो यह बेवकूफ लडकी खुद उस पर दिलो जान से फ़िदा है |

सुकन्या को उठाया तो उसने वरदान का हाथ पकड़कर फिर उसे बिस्तर पर खींच लिया -”सो जाओ, बहुत रात है।"

“रात नहीं मैडम, नौ बज गये हैं। आफिस चलना है हमें।"

“मैं तो आफिस जाने की स्थिति में ही नहीं हूँ । तुम भी मत जाओ और सो जाओ।"

वरदान ने उसके कपोल थपथपा दिये -” तुम आराम करो, मैं चला जाता हूँ ।"

“वादा करो कि शाम को फिर आओगे?"

“आज तो घर जाना ही पड़ेगा। रुद्रा से एक दिन के लिये कहा था उसे शक नहीं होना चाहिये।“

सुकन्या ने उठकर उसके गले में बॉहें डाल दी -”क्या तुम भी......दो दिन के लिये नहीं .... कह सकते थे ?”

“ मुझे क्या पता था की रात इतनी अच्छी होगी कि एक दिन की और आवश्यकता पड़ेगी |” वरदान ने हँसते हुये कहा|”

“ बिलकुल   भी मन नहीं कर रहा तुम्हें छोड़ने का।"

“ मन तो मेरा भी नहीं कर रहा जाने का लेकिन मजबूरी है।” वरदान के अधर सुकन्या के अधरों से मिल गये। सुकन्या ने कल उसे जो कपड़े उपहार में दिये थे, आज उन्हीं को पहनकर वरदान आफिस गया।

दोनों खुश थे। वरदान अपनी जीत पर और सुकन्या अपनी जीत पर मुस्कराती हुई चुपचाप पड़ी रही। उसकी योजना का प्रथम चरण सकुशल पूरा हो चुका था।

वह जानती थी कि अब वरदान इस भ्रम में रहेगा कि उसने सुकन्या का एक बार भोग कर लिया तो अब हमेशा ही कर सकेगा। यही भ्रम उसे बाँधे रहेगा लेकिन अभी तो योजना का प्रथम चरण ही पूरा हुआ था

फ्लैट खरीदने के बाद वरदान रोज सुकन्या को छोड़ने के बहाने उसके घर जाने लगा सुकन्या उसे कभी काँफी के बहाने  तो कभी खाने के लिये रोक लेती लेकिन जब कभी वरदान आगे बढ़ने का प्रयत्न करता, वह प्यार से रोंक देती -”अभी तुम्हें घर जाना है ना। "

अक्सर वरदान देर से घर पहुँचने लगा, रूद्रा कुछ पूंछती तो वह  काम का बहाना बना देता। अक्सर वरदान घर आकर खाना भी नहीं खाता था । उसने रुद्रा से कह दिया -”तुम खाना खाकर सो जाया करो। हमारी मीटिंग में अक्सर डिनर भी होता है।"

“ अचानक यह कैसा काम हो गया है तुम्हारा कि तुम्हारे पास मेरे और बच्चों के लिये जरा भी समय नहीं है। तुम्हें पता भी है कि बच्चे तुम्हें कितना याद करते हैं।"

“ पता क्यों नहीं ? यह सब तुम्हारे और उन्हीं के लिये तो कर रहा हूँ |” वरदान रुद्रा को  बहला देता और रुद्रा चुप हो जाती।

जब वरदान ने सुकन्या को रुद्रा की यह बात बताई तो उसने वरदान को समझाया कि वह छुट्टी का पूरा दिन अपने परिवार के साथ बिताये जिससे रुद्रा को कोई शक न हो। वरदान मान गया और सुकन्या पूरा दिन नीलिमा के घर में बिताती लेकिन वह  कभी मृत्युंजय से बात नहीं करती थी जब वह आता था तो सुकन्या जाती ही नहीं थी। सुकन्या के कहने से सुमन जी मृत्युंजय की नौकरी लगने के बाद भी मृत्युंजय के साथ जाने के लिये तैयार नहीं हुईं -” मेरे लिये उसने घर, माँ - बाप पढ़ाई सब छोड़ दी है। मैं उसे छोड़कर कैसे जा सकती हूँ ?”

“मम्मी, वो आपके साथ रहती कहाँ  है?”

“तो क्या हुआ, मेरा ख्याल तो पूरा रखती है। दिन में दो बार फोन करती है। जब मौका मिलता है, भागी चली आती है।” मृत्युंजय हारकर अपनी नई नौकरी पर चला गया।

एक बार वह नीलिमा के घर से लौट रही थी तो उसे मेट्रो में एक लड़की मिली, उसने सुकन्या से उसकी कम्पनी का नाम लेकर पूँछा कि क्या वह उस कम्पनी में काम करती है?

“ हाँ , आपको कैसे पता चला?"

“मैंने आपको कई बार मि० आहूजा के साथ देखा है। कभी वो मेरे बॉस हुआ करते थे।"

“तो आपने नौकरी क्यों छोड़ दी?"

“क्योंकि मि० आहूजा की शर्तों पर मैं समझौता नहीं कर पाई।” उस लड़की के चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कुराहट थी -”लेकिन लगता है कि तुमने उनकी शर्तों से समझौता कर लिया है, तभी तो बॉस शापिंग मॉल के ज्वैलरी शो रूमों में तुम्हें लेकर जाने लगे हैं।"

“क्या मतलब है तुम्हारा?"

“यह मेरा मोबाइल नम्बर है, जब रोने के लिये कंधे की जरूरत हो तो आ जाना।"

सुकन्या को लगा कि जैसे ईश्वर भी उसकी मदद करना चाहता है। यह लड़की रजनी भी उसकी योजना में काम आ सकती है।

सुकन्या ने वरदान की ऐसी तस्वीरें खींची थी कि उसे चरित्र हीन सिद्ध कर सके लेकिन नीलिमा के साथ किया गया उसका अपना कृत्य उसी के मुँह स्वीकार करवाना था उसे।

इस बार जब वरदान टूर पर जाने लगा तो सुकन्या भी तैयार हो गई -” यह प्यार भी कितना मजबूर कर देता है व्यक्ति को। पहले जब तुम मुझे टूर पर ले जाने के लिये कहते थे तो जानते हो मैं क्यों तुम्हें मना कर देती थी?"

“क्यों?”वरदान के अधरों पर मुस्कराहट थी।

“क्योंकि मैं डरती थी कि कहीं तुम मेरे साथ कुछ गलत हरकत न कर बैठो।"

“तो अब क्या हुआ? वह डर अब कहाँ चला गया?"

“अब बचा ही क्या है मेरे पास जिसके लिये तुमसे डरूं ? अब तो मैं अपना सब कुछ तुम्हें दे चुकी हूँ ।"

“अच्छा!” वरदान ने बनावटी आश्चर्य प्रकट किया -”क्या सचमुच? मुझे तो कुछ याद नहीं। नशे में क्या पता क्या हुआ, मजा तो आया ही नहीं।"

“ठीक है, जब तुम्हें कुछ याद ही नहीं है तो मैं जा रही हूँ  ”सुकन्या ने रूठने का अभिनय किया -” एक लड़की तुम्हारे प्यार और विश्वास में अपने जीवन का कीमती मोती, अपना सर्वस्व तुम्हें सौंप देती है और तुम केवल एक शब्द कहकर सब कुछ नकार देते हो। तुम्हारी नजर में मेरी कोई कीमत ही नहीं है।” सुकन्या सिसकने लगी।

“अरे, रोओ मत” वरदान परेशान हो गया -”मै तो मजाक कर रहा था।"

“मेरा सर्वस्व समर्पण तुम्हारे लिये मजाक है? मैं अब तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी| अब मैं केवल तुम्हारी सेकेट्री बनकर रहूँगी|” इतना कहकर सुकन्या जोर जोर से रोने लगी और रोते हुये ही कहा – “ मैं तो इसलिए तुम्हारे साथ जाना चाहती थी कि मैं अब तुम्हारे बिना नहीं रह सकती| ” बड़ी मुश्किल से वरदान उसे मना पाया।

टूर पर वरदान होटल में एक ही कमरा लेना चाहता था लेकिन सुकन्या ने सावधानी के तौर पर दो कमरे लेने को कहा। दिन भर का कार्य समाप्त हो जाने के बाद वो दोनों फ्रेश होने के लिये अपने अपने कमरों में आ गये। आज सुकन्या को अपनी योजना का दूसरा चरण पूरा करना था। नहाने और फ्रेश होने के बाद वरदान सुकन्या के कमरे में आ गया।

सुकन्या जानती थी कि वरदान को खाना खाने के पहले शराब की आदत पड़ गई है, इस बात के लिये कई बार रुद्रा से बहस भी हुई लेकिन उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता था।

“आज तो हमारी रात बहुत खूबसूरत रहेगी इसलिये खाना जल्दी मॅगा लेना जिससे हम पूरी रात ऐश कर सकें।"

“हॉ, लेकिन तुम्हें तो खाने के पहले कुछ और भी चाहिये।"

“पहले वही मॅगा लो, तुम्हें भी तो चाहिये होगा।”वरदान हॅस पड़ा।

“मेरी आदत तो तुमने खराब कर दी है, वरना मुझे तो इसकी महक से नफरत थी।"

“चलो, मेरी संगत में तुमने एक अच्छी आदत सीख ली है।"

सुकन्या उठ गई, फ्रिज से वरदान की पसंद का ब्राण्ड लाकर मेज पर रख दिया। साथ में सोडा, पानी, बरफ और भी बहुत कुछ।

जब वरदान नशे में पूरी तरह आ गया तब सुकन्या ने अपने मोबाइल का रिकार्ड चालू कर दिया -” मुझसे पहले तुम्हारी सेकेट्री कोई नीलिमा नाम की लड़की थी। आफिस में लोग बता रहे थे कि उसे बिना किसी कारण के नौकरी से निकाल दिया गया था।"

“हॉ, लेकिन उसे बिना कारण नहीं निकाला गया था। वह लड़की सेकेट्री और व्यक्तिगत सहायक का मतलब ही नहीं जानती थी। कई बार सीधे रास्ते से समझाने की कोशिश की लेकिन उस पर तो सती सावित्री बनने का जुनून सवार था।"

“तुम तो बहुत शानदार आदमी हो। सहायता करने वाले, उदार, दयालु और खुले हाथों से देने वाले - ऐसे बॉस तो नसीब वालों को ही मिलते हैं। तुम्हें तो हर लड़की पाना चाहेगी। मैं तो ईश्वर की बहुत कृतज्ञ हूँ  कि मुझे तुम मिले।” सुकन्या वरदान के बगल में बैठी थी और वरदान के एक हाथ में गिलास और दूसरा हाथ सुकन्या के कंधे पर था।

“हर लड़की तुम्हारे जैसी समझदार नहीं होती। मुझे पहली बार तुम जैसी सेकेट्री मिली है, अब मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूँगा।"

“मैं तो नहीं जाऊॅगी लेकिन कहीं तुमने मुझे नीलिमा की तरह निकाल दिया तो क्या करुँगी मैं?"

“तुम तो बहुत अच्छी हो, तुम्हें कैसे निकाल सकता हूॅ? लेकिन तुम्हें आज नीलिमा की बात कहाँ से याद आ गई? तुम्हारा उसका क्या लेना-देना?"

“कुछ नहीं। मेरे लिये तुमसे बढ़कर कुछ नहीं है लेकिन लोग तुम्हारे बारे में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं तो बहुत बुरा लगता है। मैंने सुना है कि नीलिमा गर्भवती थी इसलिये आत्महत्या की थी और उसका संबंध तुमसे जोड़ा जाता है।"

“तुम किसी की बात पर ध्यान मत दिया करो। इतने कम समय में तुमने इतनी उन्नति की और बॉस के करीब आ गई हो इसलिये सभी तुमसे ईर्ष्या करते हैं। नीलिमा ने नौकरी से जाने के बाद आत्महत्या की थी, मेरा उससे कोई लेना-देना नहीं था। उसने मुझसे कहा था कि वह नौकरी नहीं करना चाहती तो मैंने उसे तीन महीने का अतिरिक्त वेतन भी दिलवा दिया था।"

“निश्चित ही बेवकूफ होगी वो जो जिन्दगी का मतलब नहीं समझती थी। ईश्वर ने नारी और पुरुष को एक दैहिक आवश्यकता देकर भेजा है तो उसकी पूर्ति गलत कहॉ है? तुमने उसे समझाया नहीं कि खोखली सड़ी हुई मान्यताओं को ढ़ोते रहने से कुछ नहीं मिलता, बल्कि जीवन बरबाद ही होता है। तुम्हारी तो बातों में जादू है, इतने लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने वाले तुम एक लड़की को समझा नहीं पाये, हार मान ली, मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

सुकन्या ने वरदान के शराब में भीगे होंठ चूम लिये तो खुशी और शराब के दोहरे नशे में वह सब कुछ कहता चला गया, जिसके लिये सुकन्या ने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था, जिसके लिये वह इतने दिन से वरदान की घिनौनी हरकतें सहन कर रही थी।

“ समझ तो वह भी गई थी लेकिन उसे समझाने के लिये मुझे टेढ़ा रास्ता चुनना पड़ा था।” शायद वरदान को शराब से अधिक सुकन्या के समक्ष अपनी शेखी दिखाने का नशा चढ़ गया था। शायद वह सुकन्या को बताना चाहता था कि यदि वह सीधे रास्ते से राजी न हुई होती तो उसे दूसरे रास्ते इस्तेमाल करना अच्छी तरह आता है।

वरदान सब कुछ कहता चला गया कि कैसे नये साल की पार्टी वाले दिन उसने अपने दोस्त संजय सक्सेना से फोन पर सब कुछ समझा दिया और चाय में मिली बेहोशी की दवा के कारण अचेत नीलिमा से जब वरदान ने दुष्कर्म किया तो संजय ने तस्वीरें खींच ली और जब संजय ने अपनी प्यास बुझाई तो वरदान ने। उसके बाद उन तस्वीरों के कारण नीलिमा उसके और संजय की कामेच्छा पूर्ति की कठपुतली बन गई। वो और संजय जब चाहते नीलिमा को आना पड़ता।

सुकन्या का खून खौल रहा था । उसका मन कर रहा था कि या तो वरदान का गला दबा दे या शराब में जहर मिला कर दे दे। सुकन्या ने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया, अभी उसे और भी बहुत कुछ जानना है, और भी बहुत कुछ कहलाना है।

उसने वरदान का सिर अपनी गोद में रख लिया -”वरदान, तुम इतने खतरनाक लगते तो नहीं हो। क्या इसी कारण उसने आत्महत्या की थी? क्या गर्भवती वाली बात सिर्फ अफवाह है?"

“नहीं, अफवाह नहीं है। वह सचमुच एक दिन पेट में बच्चा लेकर मेरे सामने आकर खड़ी हो गई थी कि मुझसे शादी करो। बेवकूफ आजकल की लड़की होकर नहीं जानती थी कि सतर्कता कैसे रखी जाती है? तुरन्त नौकरी से हटाकर बाहर फेंक दिया। अपनी गलती भुगते जाकर, मुझसे क्या लेना-देना था? मरे या जिये।"

“उसके बाद उसने कुछ नहीं किया?"

“डार्लिंग, क्या करती, अपनी ही जान दे दी, मेरा क्या गया?” वरदान ने उसकी गोद में लेटे लेटे सुकन्या के गले में बॉहें डालकर उसे चूम लिया -”उसके बाद मुझे इतनी समझदार, इतनी प्यार करने वाली तुम मिल गई जिसने सेकेट्री और व्यक्तिगत सहायक का मतलब समझा। सच सुकन्या तुमने मुझे जो सुख दिया है वह तो मैंने कभी अपनी पत्नी से भी नहीं पाया है।"

सुकन्या का अब थोड़ा काम ही शेष रह गया था। वह वरदान का सिर तब तक सहलाती रही जब तक वह सो नहीं गया। इसके बाद उसने अपने आटो मैटिक कैमरे से अपनी और वरदान की वैसी ही तस्वीरें खींची जैसी गृह प्रवेश वाले दिन खींची थी लेकिन इस बार सुकन्या का चेहरा स्पष्ट नजर आ रहा था ऐसा लग रहा था कि उसके साथ जबदस्ती की जा रही है, वरदान का हाथ उसके मुँह पर था और वह छटपटा रहे थी ।

सुबह जब वरदान उठा तो सुकन्या कमरे में नहीं थी लेकिन बाथरूम से उसके गुनगुनाने की आवाज आ रही थी। वास्तव में आज वह बहुत खुश थी, उसे वरदान से जो पाना था पा लिया था। थोड़ी देर बाद मुस्कराती हुई सुकन्या आ गई -”क्या बात है, आज बहुत खुश हो।"

सुकन्या बिस्तर पर ही बैठ गई -” इतनी सुंदर रात बिताकर कौन खुश नहीं होगा?”सुकन्या वरदान के ऊपर झुकी तो उसके रेशमी केश वरदान के चेहरे पर छा गये। वरदान ने उसे अंक में भरकर चुम्बनों की बारिश कर दी।

“लेकिन मुझे तो रात का कुछ याद ही नहीं रहता। अगली बार मैं एक  बून्द भी नहीं पियूँगा जिससे मैं तुम्हारी उत्तेजक देह का सुख उठा सकूँ मैं  भी तो देखूँ कि होश में रहते हुये तुम कितना सुख देती हो।"

“ठीक है, अगली बार याद रखना ।"

                                                ( 7 )

टूर से लौटने के बाद सुकन्या के लिये वरदान को बर्दाश्त करना मुश्किल होने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह सब कुछ पुलिस को बता दे या इस खेल को और आगे बढ़ाये। या तस्वीरों से वरदान को ब्लैकमेल करके उसकी सारी सम्पत्ति छीनकर उसे दर दर का भिखारी बना दे या सब कुछ ले जाकर उसकी पत्नी रुद्रा के सामने रखकर उसकी बेहद विश्वास करने वाली पत्नी और प्यारे बच्चों के साथ उसका सारा सुख चैन नष्ट कर दे। उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी। उसे लगने लगा कि वह कुछ दिन के लिये वरदान से दूर होकर ही इत्मीनान से कुछ सोंच पायेगी। चिन्ता और परेशानी उसके चेहरे पर स्पष्ट दिख रहे थे -”क्या बात है सुकन्या, कोई परेशानी या समस्या है तो मुझसे कहो।"

“वरदान मम्मी की तबियत खराब है। पापा मम्मी बुला रहे हैं, जबसे आईं हूँ , एक बार भी नहीं जा पाई हूँ । अगर तुम नाराज न हो तो  चार पाँच दिन की छुट्टी चाहिये।"

“तो इसमें परेशानी की क्या बात है? चली जाओ।"

“सच?” सुकन्या खुश हो गई, उसने वरदान के गले में अपनी बाँहें डाल  दीं  -” मैं तो सोंच रही थी कि तुम मना कर दोगे।"

“तुम्हारे बिना मन तो मेरा नहीं लगेगा लेकिन तुम्हें उदास नहीं देख सकता। इसलिये  जल्दी आना।"

“मन तो मेरा भी तुम्हारे बिना नहीं लगेगा लेकिन जाना भी जरूरी है |  मुझे पता नहीं था कि तुम इतने अच्छे हो कि मेरे एक बार कहने से ही मान जाओगे। मैं कैसे तुम्हें शुक्रिया कहूँ ?"

“ मत कहो, जल्दी आना। आने के बाद मैं खुद वसूल लूँगा ।”वरदान ने मुस्कराते हुये कहा ।

“तुम भी.......।”सुकन्या ने शर्माकर वरदान की और देखा तो वह  ठहाका मारकर हॅस दिया।

दूसरे दिन सुकन्या की फ्लाइट थी। वरदान की इच्छा सुकन्या को एयरपोर्ट छोड़ने जाने की थी लेकिन चूँकि फ्लाइट रात की थी इसलिये सुकन्या ने मना कर दिया -”कोई जरूरत नहीं नींद खराब करने की। बेकार में घरवालों को शक का मौका देने की क्या जरूरत? मैं पहुँचते ही तुम्हें मैसेज कर दूँगी ।"

“ अपनी मम्मी की तबियत की भी खबर देना, मुझे चिन्ता लगी रहेगी।"

“ठीक है, तुम फोन मत करना। पता नहीं मेरे पास उस समय कौन हो, मैं खुद समय निकाल कर तुम्हें फोन या मैसेज  करती रहूँगी । अभी मैं पापा - मम्मी को भी कोई शक नहीं होने देना चाहती।"

सुकन्या को एयरपोर्ट तो जाना ही नहीं था वह नीलिमा के घर आ गई। बहुत दिन बाद सुकन्या को देखकर सुमन जी बहुत खुश हुईं -”कितने दिन बाद माँ  के पास आने का समय मिला है? ऑखें पथरा गईं अपनी बिटिया को देखने के लिये।"

“क्या करती चाची, इधर समय ही नहीं मिल पा रहा था इसलिये नहीं आ पाई। अब चार पाँच  दिन आपके पास रहूँगी , खूब सारी बाते करेंगे । खूब खाऊॅगी और खूब सोऊॅगी। थक गई हूँ  काम करते करते।"

यहाँ  आकर जैसे वह वरदान की कैद से आजाद हो गई है। स्वतन्त्रता का एक नया आनन्द उसे आ रहा था। उसे लगने लगा कि अब उसे किसी की सहायता लेनी चाहिये। क्योंकि हो सकता है कि बिना किसी की सहायता के उसने इतनी मुसीबत उठाकर जो कुछ प्राप्त किया है, वह बरबाद हो जाये और वह खुद किसी मुसीबत में न फॅस जाये। अपनी जान की तो उसे चिन्ता नहीं थी लेकिन इकट्ठा किये सबूतों की वह मरकर भी रक्षा करना चाहती थी लेकिन किसकी सहायता ले? कौन है जो इस कार्य में उसकी सहायता कर सकता है? सहायता तो दूर किसी को पता भी चल गया तो बना बनाया काम बिगड़ जायेगा क्योंकि अभी तक उसने जो भी किया है, उससे वरदान अनभिज्ञ है लेकिन अब उसे वरदान के सामने आकर चोंट करनी है इसलिये अब बहुत सतर्कता की आवश्यकता है। इसलिये बहुत सोंच विचार कर उसने मृत्युंजय को फोन किया। हालांकि जानती थी कि मृत्युंजय बहुत नाराज होगा। यहाँ  आने के बाद उसने केवल एक बार मृत्युंजय से बात की थी, यहाँ  तक उसकी नौकरी की बधाई भी नहीं दी। लेकिन मृत्युंजय के अतिरिक्त न तो किसी को कुछ बता सकती है और न ही किसी दूसरे की सहायता ही ले सकती है।

“हाय जय, कैसे हो?"

“बिल्कुल ठीक हूँ , बोलो कैसे याद किया? ”मृत्युंजय के स्वर की रुखाई स्पष्ट थी।

“मैं तुम्हारी नौकरी की बधाई नहीं दे पाई थी इसलिये.......।

“ठीक है, अब दे दी है ना, अब फोन बंद करो।"

“जय, मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये। क्या किसी भी तरह तुम एक दिन के लिये आ सकते हो? मैं आजकल चाची के पास हूँ ।"

“क्यों तुम्हारे सब चाहने वाले मर गये हैं क्या जो तुम्हें मेरी जरूरत पड़ गई? क्या मुझे पता नहीं कि तुम क्या कर रही हो? तुम क्या सोचती हो कि मैं दूर हूँ  तो मुझे कुछ पता नहीं है? नीलिमा जिस कम्पनी में काम करती थी तुम्हें नौकरी करने के लिये वही कम्पनी मिली थी? क्या मि० वरदान आहूजा की मेहरबानियॉ कम पड़ गई हैं जो तुम्हें यह अदना सा नाचीज मृत्युंजय याद आ गया? मुझे तुमसे कोई लेना देना नहीं है, जो करना है करो। मुझे क्यों परेशान कर रही हो?”इतना कहकर उसने फोन काट दिया।

सुकन्या ने दुबारा फोन मिलाया और बिना मृत्युंजय की बात सुने गंभीर स्वर में कहा -”फोन मत काटना जय। मैंने तुम्हारी बात सुनी है इसलिये मेरी बात सुन लो। किसी भी तरह कल यहाँ  आओ, मैं तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ  वरना जिन्दगी भर पछताओगे। आकर चाची को मत बताना कि मैंने तुम्हें बुलाया है।” यह कहकर उसने फोन काट कर बंद कर दिया।

सुमन जी खुशी से बावली हुई जा रहीं थी। सुकन्या भी सब कुछ भूलकर उनके प्यार में खो गई।

दूसरे दिन सुबह कालबेल की आवाज से सुमन चाची दरवाजा खोलने गईं तो चौंक पड़ी -”अरे, जय बेटा, तुम कैसे आ गये? तुमने तो कहा था कि नई नौकरी में जल्दी नहीं आ पाऊॅगा।"

“क्या करूँ मम्मी, आप साथ चलती नहीं है इसलिये मुझे तो आना ही पड़ेगा| बहुत याद आ रही, मन नहीं मान ही नहीं रहा था ।” मृत्युंजय ने झुककर सुमन  के पैर छुये और अपने से लिपटा लिया -”बहुत अच्छे समय आये हो तुम। देखो, सुकन्या भी आई है। काश! नीलिमा भी होती।”तीनों की ऑंखें भर आईं।

दोपहर का खाना खाने के बाद सुमन जी हाथ में थैला लेकर आ गईं -”आज मेरे दोनों बच्चे आ गये हैं, कुछ सामान लेकर अभी आती  हूँ । तब तक तुम दोनों बातें करो।"

“आप लिस्ट बना दो, मैं ला दूँगा| "

सुमन की आँखें भर आई - “ इसी सुकन्या ने ही सामान के लिये जबरदस्ती मुझे बाहर निकलना सिखाया। खुद भी कुछ लेने जाती थी तो मुझे लेकर जाती थी। अब भी जब आती है अपनी मनपसंद की चीजें लेने मुझे ही भेज देती है। नीलिमा के जाने के बाद इसी के कारण मैं जी पाई हूँ ।"

“आप जाइये चाची और मेरे लिये मोहन की दुकान से इमरती लेती आइयेगा। कल सुबह नाश्ते में छोले भटूरे बनाऊॅगी, जो सामान घर में न हो, लेते आइयेगा नहीं तो सुबह आपको ही दौड़ना पड़ेगा।” मृत्युंजय मुस्करा दिया और सुमन जी भी हॅसती हुई चली गईं।

मृत्युंजय उतावला हो रहा था लेकिन सुकन्या ने हाथ के इशारे से उसे  रोक दिया। सुमन जी के जाने के पांच  मिनट बाद सुकन्या उसे अंदर वाले कमरे में ले आई।

अब उसने नीलिमा की मृत्यु के रहस्य से पर्दे उठाकर सब कुछ सच सच बता दिया। सारी तस्वीरें, सारे रिकॉर्ड सब दिखा दिया। सुनकर मृत्युंजय फटी फटी ऑखों से सुकन्या को देखता रह गया। उसके लिये विश्वास करना असंभव हो रहा था। उसकी प्यारी बहन के साथ इतना सब हो गया और उसे कुछ पता ही नहीं -”जय, मैंने खुद को और नीलिमा की आत्मा को वचन दिया था कि इस व्यक्ति को ऐसे नहीं छोड़ दूँगी चाहे इसके लिये मुझे जान देनी पड़े या कितना भी नीचे गिरना पड़े। हमारी नीलिमा इसके कारण चली गई और यह व्यक्ति वैसे ही बेपरवाह घूम रहा है तमाम लड़कियों की जिन्दगी बरबाद करने के लिये।"

“ तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैं मार डालूँगा  उस नीच को जिसने मेरी बहन के साथ ऐसा दुष्कर्म करके उसे आत्महत्या के लिये मजबूर कर दिया।"

उत्तेजना में मृत्युंजय उठ कर खड़ा हो गया तो सुकन्या ने उसे हाथ पकड़कर बैठा लिया -”शान्ति से काम लो जय। तुम क्या समझते हो कि मैं उसे नहीं मार सकती थी? जब चाहती मार सकती थी लेकिन इससे मैं कानून द्वारा सजा की हकदार हो जाती जबकि मैं क्यों सजा भोगूँ? मौत तो नीलिमा की यंत्रणा के सामने इसके लिये बहुत आसान सजा है। इसकी मौत हो भी तो यंत्रणा से।"

सुकन्या की ऑंखें भीगने लगीं -” दिल पर पत्थर रखकर अन्दर से तड़पते हुये मैंने उस नीच की हर हरकत सहन की है। प्यार का झूठा नाटक करके उससे तमाम पैसा, फ्लैट, कार, मॅहगे कपड़े और गहने लेती रही, इन सबकी रसीदें मेरे पास हैं क्योंकि मुझे और भी प्रमाण चाहिये थे। नीलिमा के दिये प्रमाण पूरी तरह पर्याप्त नहीं थे।"

मृत्युंजय सिर झुकाये बैठा था अचानक उसने सुकन्या के दोनों हाथ पकड़कर अपनी गीली ऑखों से लगा लिये -”तुमने मेरी बहन के लिये अपना सब कुछ दॉव पर लगा दिया और मैं तुम्हें गलत समझता रहा।"

“जय, नीलिमा ने सबसे अधिक मुझ पर विश्वास किया था, वह जानती थी कि तुम आवेश में कोई गलत कदम उठा लोगे।"

सुकन्या ने मेट्रो में मिली लड़की रजनी की बात भी उसे बताई। मृत्युंजय चाहता था कि सब कुछ पुलिस को बताकर वरदान को गिरफ्तार करवा दिया जाये जबकि सुकन्या चाहती थी कि वरदान का दाम्पत्य पूरी तरह बरबाद हो जाये और उसके पास अपनी पत्नी और बच्चों के पास लौटने के रास्ते बन्द हो जायें। उसकी पत्नी और बच्चे यहॉ तक रिश्तेदार, दोस्त, समाज उससे इतनी नफरत करें कि कोई उसकी ओर देखना भी पसंद न करे| वह जेल की सजा काटकर बाहर आये तो अपनी ही प्रिय जनों की नफरत उसे जीने न दे और वह  घबराकर आत्महत्या कर ले |  अभी तो वह अपनी पत्नी और बच्चों की दृष्टि में बहुत प्यार करने वाला पति और स्नेहिल पिता है । अभी तो  उसके इस घिनौने रूप से सब लोग अनजान हैं | वह समाज का एक सम्मानित व्यक्ति है, बहुत इज्जत है उसकी| मैं उसकी वह इज्जत धूल में मिलाना चाहती हूँ, समाज के सामने बेपर्दा करना चाहती हूँ | अभी तो वह पत्नी, बच्चों और आत्मीय लोगों से कह सकता है कि उसे गलत फॅसाया गया है, सारे आरोप झूठे हैं। वह खुद परेशान हो कर तड़पे और खुद  अपने मुँह से अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ने की बात अपनी पत्नी से कहे|

हालांकि मृत्युंजय का बिल्कुल मन नहीं था कि इस नाटक को और आगे बढ़ाया जाये। उससे सहन नहीं हो रहा था -” सब कुछ जानकर मैं अब तुम्हें उसके पास कैसे जाने दे सकता हूँ ? मेरा मन कर रहा है कि अभी जाकर उसे गोली मार दूँ ।"

“ और चाची के एकमात्र सहारे तुम्हें फॉसी हो जाये? थोड़े से आवेश में तुम उसे इतनी आसान मौत देकर मेरी और नीलिमा की यंत्रणा को क्या उत्तर दोगे? इसीलिये नीलिमा ने सब कुछ मुझे बताया क्योंकि वह जानती थी कि मैं जो भी निर्णय लूँगी बहुत सोंच समझकर लूँगी ।"

फिर सुकन्या ने मृत्युंजय के हाथ पर अपना हाथ रख दिया -”जय, मुझे दुख है कि मैं तुम्हें तुम्हारी नीलिमा वापस नहीं दे सकती । उसने मुझे पहले कुछ नहीं बताया। उसने तुम्हारे लिये सारे समझौते किये और अपने परिवार को अपमान से बचाने के लिये अपने प्राण दे दिये।"

“यही सोचकर तो मर जाने का मन करता है कि यह सब मेरे कारण हुआ है। मेरी शिक्षा अधूरी न रहे , मेरा कैरियर बर्बाद न हो, इसलिये मेरी नीलू, मेरी छोटी बहन ने अपना सब कुछ यहाँ तक अपनी जिन्दगी तक मिटा दी| यह बोझ लेकर कैसे जी पाऊँगा मैं? खुद तो आसमान से ऊँची हो गई और मुझे मेरी ही नजर में गिरा गई|" मृत्युंजय फूट फूट कर रोने लगा

सुकन्या ने मृत्युंजय के कंधे पर हाथ रखकर एक ठंडी साँस ली -” हमारी नियति यही थी जय कि हम जिन्दगी भर अपनी नीलू के लिये तड़पते रहें तो क्या कर सकते थे हम? बस यदि हमने वरदान को उसके कृत्य का दंड दे दिया तो नीलू का प्रतिशोध पूर्ण हो जायेगा। हम दोनों मिलकर उसे यही सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।"

फिर उन दोनों ने मिलकर आगे की योजना बनाई लेकिन मृत्युंजय ने एक शर्त रख दी -”अब मैं वापस नहीं जाऊॅगा तुम्हें खतरे में छोड़कर।"

“लेकिन तुम्हारी नौकरी.........।"

“जाने दो, नौकरियॉ तमाम मिल जायेंगी लेकिन जानते हुये तुम्हें छोड़कर चला गया और तुम्हें कुछ हो गया तो जिन्दगी भर खुद से नजरें नहीं मिला पाऊॅगा।” आवेश में मृत्युंजय ने सुकन्या का चेहरा अपनी दोनों हथेलियों में भर लिया। थोड़ी देर दोनों बेसुध से हो गये। फिर चौंककर अलग हो गये।

“ठीक है, न तो मैं यहॉ रहूँगी  और न ही तुम इस शहर में किसी को मेरे साथ दिखोगे। अभी मैं अपने ही फ्लैट में रहूँगी ।"

फिर उन्होने तय किया के दिए मोबाईल कि आफिस के अलावा जब भी सुकन्या वरदान के साथ रहेगी, उसकी स्थिति ( लोकेशन ) की मृत्युंजय को पूरी जानकारी रहेगी जिससे दूर से ही सही वह सुकन्या के साथ रह सके। साथ ही उसने मृत्युंजय को यह भी बताया कि वह वरदान के दिए फोन से सुमन या अपने मम्मी पापा से कभी बात नहीं करती है ताकि यदि वरदान उसका फोन देख भी ले तो उसे कुछ पता न चले| अपनी और वरदान की सारी  फोटो और ऑडियो उसने पेन ड्राइव में सुरक्षित करके अपने फोन से मिटा दिया है|   मृत्युंजय उसके इतना सब अकेले कर लेने पर दंग था | मृत्युंजय को सब कुछ बता कर सुकन्या को बहुत  तसल्ली मिली कि इतने बड़े खतरनाक कार्य में कोई तो उसके साथ है| इस अभियान में यदि उसको कुछ हो भी जाये तो मृत्युंजय वरदान आहूजा को छोड़ेगा नहीं |  इसके बाद मृत्युंजय अपने कमरे में और सुकन्या अपने कमरे में चली गईं। सुमन ने नीलिमा का कमरा सुकन्या को दे दिया था।

जितने दिन सुकन्या रही, वरदान को बराबर मैसेज करके फोन बंद कर देती थी। सुकन्या के मम्मी पापा से जब चारो लोग मृत्युंजय के फोन से वीडियो काल से बात करते थे तो वो लोग बहुत खुश होते थे क्योंकि उन लोगों को सुकन्या के नये फोन के बारे में पता नहीं था और उसके पुराने फोन में यह सब सिस्टम है नहीं।

वैसे मृत्युंजय और सुकन्या में सामान्य बातें होती थीं लेकिन अपनी योजना सम्बन्धी बातें सुमन के शाम को बाजार या मंदिर जाने पर ही होती थीं।

मृत्युंजय ने सुमन को बता दिया कि उसे यह नौकरी पसंद नहीं है इसलिये उसने दूसरे स्थानों पर आवेदन किया है तब तक वह घर में रहेगा। सुमन की खुशी का ठिकाना न रहा।

जाने से पहले उसने  मृत्युंजय से मोबाइल के कुछ नये सिम लेने को कहा, साथ ही यह भी कहा कि वह सिम अपने नाम से न ले।

आज  आ रही हो, मैं तुम्हें लेने एयरपोर्ट आ जाता।"

“फिर अचानक मुझे देखकर तुम्हारे चेहरे की यह दमक और खुशी कैसे देखती?”

“मम्मी ठीक हैं?'

“हॉ ठीक हैं।” सुकन्या ने उतरे हुये स्वर में कहा।

“फिर इतना उदास क्यों हो?"

“लंच के लिये बाहर चलना तुम्हें कुछ बताना है।"

“तो फ्लैट पर चलते हैं जहॉ हम इत्मीनान से बातें भी करेंगे और इतने दिन बाद अच्छे से मिल भी लेंगे। तुम नहीं जानती कि मैंने यह समय तुम्हारे बिना कैसे बिताया है?"

“वरदान यह समय इन बातों का नहीं है, मैं सचमुच बहुत परेशान हूँ ।"

“कह तो रहा हूँ  कि घर चलते हैं, वहीं अच्छे से बात करेंगे। रास्ते से खाना भी लेते चलेंगे।"

“ठीक है, तब तक कुछ काम कर लेते हैं, इसके बाद निकलेंगे। मैं अपने केबिन में जा रही हूँ ।” सुकन्या ने उसी उदासी से कहा।

घर जाते हुये कार में भी सुकन्या चुपचाप बैठी थी। अपने फ्लैट में पहुँचकर सुकन्या कपड़े बदलने चली गई और थोड़ी देर बाद जूस लेकर आ गई लेकिन उसकी उदासी जरा भी कम नहीं हुई।

वरदान ने उसे हाथ पकड़कर अपनी बगल में बैठा लिया -”पहले बताओ क्या बात है? तुम्हारे चेहरे पर उदासी मुझे अच्छी नहीं लगती, बहुत प्यार करता हूँ तुम्हें। तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूँ । तुम नहीं जानती कि तुम्हें ऐसे देखकर मुझे कितनी तकलीफ हो रही है?” सुकन्या का चेहरा दोनों हाथों में भरकर चूम लिया उसने।

“वरदान क्या सचमुच तुम मुझे प्यार करते हो? या सिर्फ मेरी देह से ही खेलते रहे इतने दिन।” सुकन्या की ऑखों में ऑसू थे।

“तुम्हें क्या हो गया है, इस तरह मेरे प्यार पर शक क्यों कर रही हो? तुम्हारे लिये क्या नहीं किया है मैंने?"

“अगर तुम सचमुच मुझसे प्यार करते हो तो रुद्रा को तलाक देकर मुझसे शादी कर लो।"

वरदान चौंक गया -” जब हमारे बीच में सब इतना अच्छा चल रहा है तो यह नई बात कहाँ  से खड़ी हो गई? तुम अपनी जगह हो वो लोग अपनी जगह| न उनका तुमसे कोई लेना देना है न तुम्हारा उनसे|"

“मेरे घरवाले मेरी शादी करना चाहते हैं लेकिन मैंने उनसे कह दिया है कि मैं तुम्हारे सिवा किसी की नहीं हो सकती। बहुत प्यार करती हूँ  तुम्हें।"

“प्यार तो मैं भी करता हूँ लेकिन शादी.......  यह कैसे हो सकता है? रुद्रा और बच्चों को कैसे छोड़ सकता हूँ ? "

“ मुझे अपना लो वरदान, वरना मैं कहीं की नहीं रहूँगी । तुम्हारे प्यार का अंश मेरे भीतर पनप रहा है। मैं भी तुम्हें बच्चे दूँगी, प्यार दूँगी| रूद्रा से तो तुम भी प्यार नहीं करते, केवल दिखावे की पत्नी है वह तुम्हारी, फिर ऐसे सम्बन्ध को समाप्त करने में नुक्सान ही क्या है? "

“ कब तक तुम यह बेकार के सम्बन्ध का बोझ ढ़ोते रहोगे ? रुद्रा से छुटकारा पाकर हम अपनी नई जिन्दगी शुरू करेंगे|”

“यह कौन सी नई कहानी शुरू कर दी है तुमने?” वरदान सचेत होकर सीधा बैठ गया।

“ मैं सच कह रही हूँ वरदान |” सुकन्या ने वरदान का हाथ पकड़ लिया – “ तुम मेरा साथ नहीं दोगे तो कौन देगा? इस स्थिति में कौन मुझे अपनायेगा, कौन मुझसे शादी करेगा? अगर तुमने इंकार कर दिया तो मैं मम्मी पापा को क्या मुँह दिखाऊँगी? आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं बचेगा मेरे पास? मैं कहीं की नहीं रहूँगी, बर्बाद हो जाऊँगी|”

वरदान के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आ गई - “तुम लड़कियों में यही सबसे बड़ी खराबी है कि तुम बातें तो बहुत बड़ी बड़ी करती हो लेकिन बाद में उसी सदियों पुराने स्थान पर आकर खड़ी हो जाती हो। किसी डाक्टर के पास जाओ और अंदर का सब कचरा बाहर फेंक कर तरोताजा होकर आ जाओ।"

“ वो कचरा नहीं है, हमारे प्यार का अंश है। उसे मारने के लिये मत कहो।"

“फिर यह तुम्हारी समस्या है तुम जानो।” वरदान उठने लगा तो सुकन्या ने फिर उसका हाथ पकड़ कर बैठा लिया और रोते हुये उसके घुटने पर सर रख दिया  - ” तुम जो कुछ कहोगे मैं करुँगी  लेकिन इस तरह मुझे छोड़कर न जाओ। इस समय तुम भी छोड़ दोगे तो मैं कहॉ जाऊॅगी? जिस डाक्टर के पास चाहो, ले चलो।” सुकन्या जानती थी वरदान कभी डाक्टर के पास नहीं जायेगा।

  वरदान ने उसी समय जेब से चेक बुक निकाल कर उसमें दस लाख की रकम भरी और सुकन्या के सामने डाल कर कहा - “ मुझे कहीं नहीं जाना है, अपनी समस्या तुम्हें खुद निपटानी है। मुझे इन सब झंझटों से कोई मतलब  नहीं है।"

“तुम मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हो? तुम मुझे इस तरह मझधार में नहीं छोड़ सकते?"

“डार्लिंग” वरदान ने एक खलनायकी  मुस्कान से कहा -” तुम तो जीवन के आनन्द की बहुत बड़ी बड़ी बातें करती थीं। अब उसमें तुमने सतर्कता नहीं रखी तो मैं क्या कर सकता हूँ? उसका फल तो तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा।"

“और हमारा प्यार.......।"

“आज के युग में प्यार वगैरह सब बेवकूफी की बातें हैं। शरीर की एक स्वाभाविक आवश्यकता होती है। उसी के कारण तुम मेरी जरूरत बन गईं थी और उसका मैंने तुम्हारी औकात से ज्यादा मूल्य चुका दिया है।"

सुकन्या फूट फूटकर रोती रही तभी वरदान उठकर खड़ा हो गया -”मैडम सुकन्या, अब तुम मेरी जरूरत नहीं रहीं इसलिये अब हमारे रास्ते अलग हैं। किसी दिन आफिस आकर अपना तीन महीने का वेतन ले जाना। मुझे और आफिस दोनों को अब तुम्हारी जरूरत नहीं है।"

रोती हुई सुकन्या को छोड़कर वरदान चला गया। इसके तुरन्त बाद अपनी योजनानुसार सुकन्या फ्लैट छोड़कर मृत्युंजय के बताये दूसरे छोटे से मकान में आ गई।

अगले दिन सुकन्या सचमुच नहीं आई लेकिन वरदान के मोबाइल पर बहुत कुछ ऐसा आया जिसे देखकर वह बौखला गया उसने तुरन्त सुकन्या को फोन किया -”हाँ  बोलो वरदान, कैसे याद किया?"

“यह क्या बदतमीजी है?” वरदान क्रोध से दहाड़ा।

“कौन सी बदतमीजी डार्लिंग?"

“यह सब क्या भेजा है मेरे पास? भूल गईं कि इन तस्वीरों में तुम भी हो मेरे साथ। तुम्हारी कितनी बदनामी होगी, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

“इस धोखे में मत रहियेगा मि० वरदान। ध्यान से देखिये , इन तस्वीरों में आप मुझसे जबरदस्ती कर रहे हैं साथ ही आपका हाथ मेरे मुँह पर है, मैं आपके नीचे छटपटा रहीं हूँ और मेरी आँखों से आँसू बह रहे हैं | आप अपनी चिन्ता कीजिये। यदि मैं यौन शोषण के आरोप के साथ ये  सब कुछ पुलिस को दे  दूँ और बता दूँ कि  इन तस्वीरों के माध्यम से आप लगातार मुझे ब्लैकमेल करके मुझसे शारीरिक सम्बन्ध बनाते रहे हैं और गर्भवती हो जाने पर दस लाख रूपये  देकर मुझे नौकरी और अपनी जिन्दगी दोनों से निकाल रहे हैं| सोंचिये क्या होगा  आपका ?”

वरदान कुछ कहना चाहता था लेकिन तभी सुकन्या ने रोंक दिया – “ झूठ बोलने के सम्बन्ध में तो सोंचियेगा भी मत| हर बात का मजबूत  प्रमाण है मेरे पास|”

“ तुम झूठ बोल रही हो, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं| कुछ नहीं है तुम्हारे पास |”

“ कोई बात नहीं इन्तजार कीजिये प्रमाण  आपकी सुलक्षणा पत्नी तक पहुँच जायेंगे| वैसे आपकी बहनों तक भी पहुँचाने की सोंच रही हूँ ।"

“ तुमने मुझे धोखा दिया है| तुम ऐसा नहीं कर सकती।” वरदान के स्वर में कॅपकॅपाहट स्पष्ट थी।

“ क्यों? जब तुम दूसरों को धोखा दे सकते हो तो यदि तुम्हे कोई धोखा दे तो वह गलत कैसे हो गया ? तुम तो जीवन भर अपनी उस पत्नी को धोखा देते रहे जिसने तुम्हारे लिये अपना सब कुछ छोड़ दिया था|” वरदान अवाक था और सुकन्या कहती जा रही थी – “ जब  हमारे रास्ते अलग हैं तो  तुम्हें मुझसे कोई उम्मीद नहीं करनी चाहिये। अभी तो मैं इस बच्चे को जन्म देकर इसका डी०एन०ए० टेस्ट करवाऊॅगी, तब कहना कि यह बच्चा  तुम्हारा नहीं है। इस बच्चे का तुम्हारी सम्पत्ति में भी अधिकार होगा।"

“इस तरह रखैलों और वेश्याओं के बच्चों का कोई दावा नहीं होता, समझीं तुम।”वरदान क्रोध से पागल हुआ जा रहा है।

“यह सब मुझे मत बताओ, पुलिस और कोर्ट को समझाना।"

सुकन्या ने फोन बंद कर दिया। वरदान को विश्वास नहीं था कि इस बार शिकारी खुद शिकार हो गया है। वह बार बार सुकन्या को फोन करता रहा लेकिन हर बार फोन बन्द आ रहा था। वह सुकन्या के फ्लैट पर भी गया लेकिन  वहॉ पर ताला पड़ा था। गार्ड ने सुकन्या को  एक एयरबैग लेकर अकेले  जाते देखा था। कहाँ गई सुकन्या?

वरदान तनाव में पागल हुआ जा रहा था। घर आफिस कहीं उसे चैन नहीं था | किसी से कुछ कह भी नहीं सकता था। आफिस में रहता तो अपने स्टाफ पर चीखता चिल्लाता रहता और घर में आते ही अपने कमरे में बन्द हो जाता। रुद्रा कुछ पूँछने का प्रयत्न करती तो वह बुरी तरह बरस पड़ता, चीखने चिल्लाने लगता, अगर रुद्रा उसे शान्त करने का प्रयास करती तो वह तोड़ फोड़ करने लगा।

जब से गुड़िया के रोने पर उसने उसे थप्पड़ मार दिया था , बच्चे बहुत डर गये थे। वरदान के आते ही वे दोनों सहमकर रुद्रा से चिपट जाते। बच्चों में जान बसती थी वरदान की| कभी कभी तो बच्चों के कारण रुद्रा को भी डांट खानी पड़ती थी| पापा के बदले व्यवहार से वो दोनों डरे सहमे रहने लगे |

एक दिन रुद्रा ने आफिस में फोन करके वरदान की समस्या का पता करना चाहा तो वहॉ भी कुछ पता नहीं चला। बस इतना पता चला कि काफी दिन से सुकन्या मैडम नहीं आ रही हैं तो बॉस को आफिस के कामों में परेशानी हो रही है। रुद्रा समझ गई कि विभागीय परेशानी के कारण वरदान का व्यवहार ऐसा हो गया है और कुछ दिन में सब ठीक हो जाएगा| वरदान ने शुरू से ही घर और आफिस को अलग रखा है। आफिस की कोई भी समस्या वह रुद्रा को नहीं बताता था।

कभी रुद्रा ने कहा भी तो वह कह देता -”आफिस की चिन्ताओं के लिये मैं हूँ  तुम्हारे पास और भी समस्यायें हैं उनको सम्हालकर तुमने मुझे निश्चिंत कर दिया है तो मेरा भी तो कर्तव्य है कि कुछ मामलों में तुम्हें निश्चिंत रखूँ ।"

जबकि आज घर आकर पहली बार उसने रुद्रा को थप्पड़ मारा -”मेरी जासूसी करने की जरूरत नहीं। शान्ति से जीने दो मुझे।"

रुद्रा हतप्रभ थी वरदान के इस व्यवहार से। एक स्नेहिल पिता और प्रेमी पति को अचानक क्या हो गया? वरदान का बाहर और घर का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था। वह रुद्रा और अपने बच्चों को बेहद प्यार करता था और बहुत खुश रखता था।

घर में दहशत का माहौल व्याप्त हो गया था। रुद्रा ने भी वरदान से कुछ पूँछना छोड़ दिया। उसे लगा कि सामान्य होने के बाद वरदान खुद उसे बतायेगा। उसे वरदान पर पूर्ण विश्वास था इसलिये वह वरदान को और अधिक परेशान नहीं करना चाहती थी।

एक हफ्ते के अंदर वरदान टूट गया। एक हफ्ते बाद किसी अनजान नम्बर से फोन आया -”हलो” बोलते ही सुकन्या की आवाज आई -”कैसे हो वरदान?"

“तुम कहाँ  हो और क्या चाहती हो?"

“शादी।"

“तुम्हें पता है कि मैं यह नहीं कर सकता। तुम्हें जितना पैसा चाहिये, बोलो?"

“शादी से कम कुछ नहीं। तुम अपना सारा पैसा रुद्रा और बच्चों को दे दो। मुझे केवल तुम और मेरे बच्चे को तुम्हारा नाम चाहिये।"

“अगर मैं अब भी मना कर दूँ तो.......।"

“तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम मना नहीं कर सकते।” सुकन्या कुछ देर चुप रही फिर उसे वरदान की आवाज सुनाई दी -”क्या हम एक बार मिलकर सारी बातें आराम से नहीं कर सकते?"

बदले में सुकन्या की हॅसी सुनाई दी -” मुझे इतना मूर्ख कैसे समझ लिया? एक बार धोखा खाने के बाद दुबारा धोखा खाना मेरा स्वभाव नहीं है। मैं जानती हूँ कि तुम कोई चाल चलकर मुझसे वो सारे प्रमाण प्राप्त करने का प्रयत्न करोगे लेकिन सूचना के लिये बता दूँ कि मेरे अपहरण और मृत्यु से भी कोई अन्तर नहीं पड़ेगा बल्कि तुम्हारे अपराधों में कुछ अपराध और बढ़ जायेंगे। उन सभी की और भी प्रतियाँ हैं और वह व्यक्ति इतना खूंखार है कि रुद्रा और तुम्हारे बच्चों के साथ ही तुम्हारी बहनों के परिवार को भी नुकसान पहुँचा सकता है।"

वरदान काँप  कर रह गया लेकिन अपने को सम्हालकर कहा -” तुमने मुझे इतना नींच समझकर रखा है क्या? मैं तो बस एक बार तुमसे मिलना चाहता था ताकि हमारे बीच की सारी गलतफहमी दूर हो सकें।"

“हमारे बीच सब कुछ स्पष्ट है, गलतफहमी का प्रश्न ही नहीं है।"

“तब ठीक है, मुझे तुम्हारी कोई बात स्वीकार नहीं है, तुमसे जो करते बने कर लो। मैं तुम्हारी धमकियों से डरने वाला नहीं हूँ।"

“मैं तुम्हें कोई धमकी नहीं दे रही बल्कि केवल तुम्हें दर्पण दिखा रही हूँ। अभी तो मैं केवल अपनी ही बात कर रही हूँ  जबकि मेरी पिटारी में ऐसे बहुत से नाग हैं जो तुम्हें डसने को तैयार बैठे हैं।"

“नाग? कैसे नाग। मैं कुछ समझा नहीं।” वरदान के आश्चर्य की सीमा नहीं थी।

“आशा है तुम नीलिमा को नहीं भूले होगे। उसके साथ तुम्हारे कारनामों और आत्महत्या की सारी कहानी तुम्हारे ही शब्दों में मेरे पास है। सुनना चाहते हो तो भेज सकती हूँ। वैसे रजनी और मेघना ने एक महीने के अंदर जिस कारण नौकरी छोड़ी थी, उसका भी पता मुझे चल गया है।"

“यह क्या बकवास है? कौन हैं ये लड़कियॉ? न तो मैं इन्हें जानता हूँ और न मेरा इनसे कोई सम्बन्ध है।"

“कोई बात नहीं, पुलिस की हिरासत में सब याद आ जायेगा।"

“पुलिस का डर मत दिखाओ, मैं भी पुलिस के पास जा सकता हूँ  कि न जाने किसका पाप मेरे सिर मढ़कर मुझे ब्लैकमेल कर रही हो।"

“जाओ, मैंने कब मना किया है? डी०एन०ए० रिपोर्ट और अपनी आवाज के आडियो को कैसे नकार पाओगे?” अपने बचाव का कोई रास्ता वरदान की समझ में नहीं आ रहा था। पुलिस की मदद लेने पर तो वह और बुरी तरह फॅस जायेगा।

“मैं बरबाद हो जाऊॅगा। मुझ पर रहम करो।"

“तुमने तो कभी किसी पर रहम नहीं किया। इसलिये तुम्हारे मुँह  से यह शब्द शोभा नहीं देता। सोंच लो मैं दुबारा फोन करुँगी । आशा है तुम कुछ भी अनर्गल करने के लिये मुझे बाध्य नहीं करोगे।” फोन बंद हो गया साथ ही उसके पास नीलिमा के बारे में सारी सच्चाई को बयान करता उसी के स्वर का आडियो पहुँच  गया। साथ सुकन्या को दस लाख का चेक देने वाले दिन की सारी बातचीत का आडियो  भी था |

वरदान समझ गया कि सुकन्या की बात मानने के अलावा कोई रास्ता शेष नहीं बचा है। आत्मसमर्पण ही एकमात्र रास्ता है। अपनी रुद्रा जैसी पत्नी और प्यारे से घर संसार के होते हुये उसने जिस राह पर कदम बढ़ाये थे उसका एक न एक दिन यह हश्र तो होना ही था। वह बेसब्री से सुकन्या के फोन का इंतजार करने लगा। उसे कहीं चैन नहीं था। आफिस जाता भी तो इसलिये कि सारा दिन घर में रहेगा तो और परेशान होगा।

पाँच  दिन तक सुकन्या का कोई फोन नहीं आया तो वह और भी परेशान हो गया। क्या करे? कहॉ जाये? कहॉ है सुकन्या? कुछ पता नहीं। उसका फोन भी लगातार बंद आ रहा है। वह हर बार एक नये नम्बर से फोन करती है, इसलिये उसे फोन भी नहीं कर सकता था।

छठे दिन एक नये नम्बर से फोन आया, समझ गया कि सुकन्या का ही फोन होगा -”हॉ बोलो सुकन्या।” बेहद थकी आवाज थी उसकी।

“अब बताओ क्या सोंचा है  तुमने?"

“तुमने कुछ सोंचने लायक छोड़ा ही कहाँ  है? मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है।"

“ अब समझ में आया ना की वे बेबस लडकियाँ कैसे परेशान हुईं होंगी ?” सुकन्या हल्के से हँसी – “ खैर.... ठीक है, इंतजार करो, मैं तुम्हें फोन करती हूँ ।"

“जल्दी फोन करना, मैं बुरी तरह थक गया हूँ ।”

“ इतनी जल्दी |” प्रत्युत्तर में सुकन्या की हॅसी सुनाई दी।

दो दिन बाद उसी नम्बर से वरदान के पास फोन आया, सुकन्या ने उसे बताया कि वह रुद्रा से कहे कि वह उसे तलाक देने वाला है और आज से तीन दिन बाद टूर का बहाना करके बुलन्दशहर के रायल होटल में आये। वहॉ रिसेप्शन पर उसे सुकन्या मिल जायेगी। वहॉ से वो लोग आर्य समाज मंदिर जाकर शादी करेंगे और वापस आ जायेंगे।

“बिना तलाक के शादी कैसे हो सकती है? एक पत्नी के होते हुये दूसरी शादी नहीं हो सकती, इतना तो तुम्हें मालुम ही है।"

“रुद्रा को जब हमारी शादी की बात पता चलेगी तो वह खुद तुम्हें तलाक दे देगी।"

“अगर मैं अब भी न आऊॅ तो.......।"

“मत आओ, तलाक तो रुद्रा तुम्हें दे ही देगी। अगर तुम समय पर नहीं आये तो सारी तस्वीरें, वीडियो, आडियो और नीलिमा का वह पत्र भी रुद्रा के अतिरिक्त पुलिस और मीडिया तक पहुँचा  दिये जायेंगे। अभी तो रुद्रा और तुम्हारे बच्चों के बदले में मैं और मेरा बच्चा तुम्हारे पास होंगे वरना न मैं मिलूँगी और न रुद्रा तुम्हें मिलेगी, जेल की सलाखें साथ में मुफ्त मिल जायेंगी। साथ ही मीडिया तुम्हारी क्या हालत करेगी सोंच लो | मुझे कोई जल्दी नहीं है फैसला तुम्हारे हाथ में है, मैं बाद में फोन कर लूँगी । ” फोन एक बार फिर कट गया।

उसी दिन जब शाम को सुकन्या का फोन आया तो वरदान ने बुलन्दशहर आने की हामी भर ली।

**( 8 )**

सुबह वरदान को चुपचाप सूटकेस में कपड़े रखते देख रुद्रा समझ गई कि वरदान टूर पर जा रहा है। न जाने कितने दिन से वरदान ने उससे और बच्चों से बात नहीं की है, घर में खाना नहीं खाया है। रुद्रा उसकी परेशानी समझकर खुद भी चुप हो गई और बच्चों को भी समझा दिया।

लेकिन उसे आज तो पूँछना ही पड़ा -” टूर पर जा रहे हो क्या?"

“हाँ '' वरदान ने बिना उसकी ओर देखे कहा।

“कब तक लौटोगे?"

“सारी बातें तुम्हें बतानी जरूरी है क्या? अपने काम से काम नहीं रख सकती क्या तुम?' वरदान चीख पड़ा।

रुद्रा ने वरदान का हाथ पकड़ लिया -” मुझे बताओ कि तुम्हारी समस्या क्या है? क्यों इतने तनाव में जी रहे हो? खुद भी परेशान हो और हम लोगों को भी परेशान कर दिया है। कुछ तो बताओ, ऐसे कैसे चलेगा? शायद मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँ ।"

“ हाँ , तुम मेरी सहायता कर सकती हो।” वरदान एक पल के लिये रुका फिर दिल को मजबूत करके बोला - '' मुझसे दूर जाकर। मुझे घुटन होती है तुम्हारे साथ, अब तुम्हें और अधिक नहीं सह पा रहा हूँ  मैं। मेरे जीवन में अब तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा पीछा छोड़ दो, तंग आ गया हूँ तुमसे। जो चाहे ले लो और मुझे स्वतंत्र करो।” अपना हाथ उसने झटके से रुद्रा के हाथ से छुड़ा लिया।

रुद्रा अवाक रह गई। पहले तो वह समझ ही नहीं पाई कि वरदान कहना क्या चाहता है फिर धीरे से बोली   -” मैं क्या बाजार से खरीदा हुआ सामान हूँ जो आवश्यकता न होने पर हटा दी जाये। मैं पत्नी हूँ तुम्हारी। हमारे बीच तो जन्म जन्मान्तरों का सम्बन्ध है। मैं तो अगले जन्मों में भी तुम्हारी ही कामना करुँगी ।"

“मुझे इसी जन्म में तुम्हारा साथ नहीं चाहिये।"

“और हमारे ये बच्चे.......।"

“इन्हें भी ले जाओ। मुझे न तो तुम्हारी जरूरत है और न तुम्हारे इन बच्चों की। मेरे लौटकर आने तक जहॉ मन हो इन बच्चों को लेकर चली जाना। खाली चेकबुक रखी है जितना पैसा चाहना भर लेना और घर से भी जो चाहना ले जाना लेकिन मुझे खाली घर मिलना चाहिये।"

“कैसी बातें कर रहे हो वरदान? तुम्हें क्या हो गया है? हम तो एक दूसरे को बेहद प्यार करते हैं फिर तुम इस तरह की बातें क्यों कर रहे हो?”रुद्रा समझ नहीं पा रही थी कि वह क्या करे? ” अच्छा इतना तो बता दो कि हम तीनों का अपराध क्या है जो तुम अपने जीवन से हमें काटकर फेंकना चाहते हो?"

“मुझे कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है। बस इतना समझ लो कि ऊब गया हूँ  मैं तुम सबसे और कान खोलकर सुन लो कि मेरा फैसला बदल नहीं सकता। तलाक के कागजात तुम्हारे पास  पहुँच जायेंगे।” यह सब कहते हुये उसका दिल फटा जा रहा था। इस रुद्रा ने उसके लिये क्या नहीं किया और आज वह उसके साथ ऐसा व्यवहार करने को मजबूर है।

वरदान तो उस पर वज्रपात करके चला गया लेकिन रुद्रा में सोंचने समझने की शक्ति ही नहीं रही थी।

वरदान के शब्दों को सुनकर अपनी गृहस्थी में आकण्ठ निमग्न उसके हृदय में हलचल मच गई। स्वयं वरदान से न सुनती तो कभी विश्वास न करती कि उसका वरदान ऐसा भी कह सकता है। उसके प्रेम वृक्ष की जड़ों में विश्वासघात का दीमक कब प्रविष्ट हो गया, उसे पता ही नहीं चला और जब पता चला तो समूचा वृक्ष धराशाई होने की स्थिति में आ गया है। वह तो ऑंखें बन्द करे वरदान के विश्वास के कंधे पर सिर रखे चली जा रही थी कि अचानक किसकी नजर लग गई कि वरदान ने वह कन्धा हटाकर उसे जमीन पर गिरा दिया।

वरदान के प्यार का अथाह सागर ही उसकी सबसे बड़ी पूँजी थी, जब वह नहीं तो उसे और क्या चाहिये?

पैसा तो उसने अपने व्यापार में कमा ही लिया है। एक तीन बेडरूम वाला फ्लैट भी है, जिसको किराये पर दे रखा है। उसका व्यापार तो बहुत अच्छा चल रहा था। बेटे के बाद भी कोई अन्तर नहीं पड़ा था लेकिन सास के न रहने के बाद चार महीने की बिटिया के कारण रुद्रा को परेशानी होने लगी।

तब वरदान ने ही कहा -” रुद्रा तुमने संघर्ष में बहुत साथ दिया, अब तुम्हें इतनी मेहनत करने की जरूरत नहीं है। अभी तक मॉ थीं तो बच्चों और घर की जिम्मेदारियॉ सम्हाल लेती थीं, आराम से चल जाता था। मेरा काम तो जानती हो, पदोन्नति होने से जिम्मेदारियॉ भी बढ़ गई हैं, अक्सर टूर पर भी जाना पड़ता हैं। बच्चों को बिल्कुल समय नहीं दे पाता हूँ । कम से कम तुम्हारा पूरा प्यार और समय तो इन्हें मिलना ही चाहिये।"

“मैं भी यही सोंच रही थी कि अगर पहले की तरह मेरा काम घर तक ही सीमित रहता तो मैं किसी तरह सम्हाल लेती लेकिन नन्हीं सी गुड़िया को नौकरों के सहारे छोड़कर जाने का मेरा भी मन नहीं करता। मैं भी नहीं चाहती कि मेरे बच्चे नौकरों के सहारे पलें लेकिन दो सौ स्त्रियों की आजीविका का प्रश्न है। उनके परिवार इसी कार्य से पलते हैं।"

“मैं विज्ञापन दे देता जो तुम्हारी मशीनों सहित तुम्हारा पूरा व्यापार खरीद ले”

थोड़े दिनों बाद ही मि० सुधीर अग्रवाल ने उसकी सारी समस्या हल कर दी। सुधीर अग्रवाल ने रुद्रा की सभी शर्तें मान ली। रुद्रा की सबसे प्रमुख शर्त थी कि उसके किसी भी कर्मचारी को नौकरी से न निकाला जाये। चूँकि उसके कारखाने में सभी कर्मचारी महिलायें थी तो उनकी सुविधानुसार उन्हें घर में काम ले जाने की भी सुविधा थी। सुधीर अग्रवाल बहुत खुश थे। उन्हें पूरी तरह जमा जमाया कारोबार, मेहनती और ईमानदार कर्मचारी के साथ रुद्रा का इतने दिनों का अनुभव और मार्गदर्शन भी मिला। रुद्रा ने उन्हें वो सभी स्थान दिखाये जहाँ उसके कारखाने का सामान जाता था, सारे दुकानदारों से परिचय भी करा दिया।

सुधीर अग्रवाल की भी एक शर्त थी कि वह हफ्ते में कम से कम एक बार अपने कारखाने में आयेगी और अपने कर्मचारियों की समस्यायें सुनेगी। उन्होंने अपने आफिस में रुद्रा के लिये एक बढ़िया सा केबिन भी बनवा दिया -” जब मन हो आकर बैठना, कभी न समझना यह व्यापार तुम्हारा नहीं है। तुम इसकी मालिक थीं और हमेशा रहोगी। बच्चे बड़े हो जायें तो मेरा हाथ बटाना।” रुद्रा विभोर हो गई चूँकि  सुधीर अग्रवाल उससे उम्र में काफी बड़े थे इसलिये वह उनके प्रस्ताव को मना नहीं कर पाई।

सुधीर अग्रवाल से मिले पैसों से ही उसने फ्लैट खरीदकर किराये पर दे दिया था। बचे हुये पैसे बैंक में जमा कर दिये थे। बैंक का ऋण तो उसने पाँच  साल में ही दे दिया था। समय से पहले ऋण लौटा देने के कारण उसे ब्याज में काफी छूट भी मिली थी।

वह जानती थी कि उसे पैसे की कोई कमी नहीं होगी। जितना है उसमें उसका और उसके बच्चों का पोषण आराम से हो जायेगा। फ्लैट के साथ ही बैंक में पैसे भी है। सुधीर अग्रवाल के साथ काम करने लगेगी। दो प्यारे से बच्चे हैं। अभी मात्र तीस वर्ष उम्र है तमाम मर्द हाथ थामने को तैयार हो जायेंगे।

सब कुछ रहेगा लेकिन अपने हृदय के लिये वरदान कहाँ  से लायेगी जिसके लिये सारी दुनिया ठुकरा दी थी। अपने बच्चों के लिये वो स्नेही पिता कहाँ  से लायेगी जो बच्चों को गर्म हवा से भी बचाने का प्रयत्न करता था।

सुबह से शाम हो गई लेकिन उसके मुँह  में खाना तो दूर पानी की बूँद  भी नहीं गई। चिन्ता और परेशानी ने उसकी भूख और प्यास हर ली थी। बच्चे भी इतने छोटे थे कि उनसे कुछ कहा नहीं जा सकता था। तीन साल की गुड़िया और पॉच साल के बेटे से क्या कहे?

शाम को उसके पास एक फोन आया -”रुद्रा जी, क्या आपको पता है कि आपके पति आपके होते हुये कल दूसरा विवाह कर रहे हैं।"

“कल......?” रुद्रा चौंक गई आज सुबह ही तो वरदान उससे निर्णय लेने को कह रहा था

“यह झूठ है। ऐसा नहीं हो सकता, तुम झूठ बोल रहे हो।"

“यह सच है। आप पता कर सकती हैं कि बुलन्दशहर के रायल होटल में मि० और मिसेज वरदान आहूजा के नाम से कमरा नंबर 308 बुक करवाया गया है या नहीं। मेरी कोई सहायता चाहिये या कुछ पूँछना   हो तो इसी नंबर  पर फोन कीजियेगा, वरना जैसी आपकी मर्जी। रायल होटल का फोन नम्बर भेज रहा हूँ ।"

अभी तक रुद्रा को विश्वास था कि वरदान जो कुछ कहकर गया है, किसी मानसिक परेशानी के कारण कह गया, टूर से लौटने के बाद वह चाहे जैसे भी हो उसकी मानसिक परेशानी को जानकर रहेगी और उसका वरदान फिर पहले जैसा हो जायेगा। परन्तु यह कैसा फोन है, कैसी अनहोनी बात कर रहा है यह व्यक्ति?

थोड़ी देर बाद उसके मैसेज बाक्स में एक मोबाइल नम्बर था।

उसने काँपते हाथों से रायल होटल में फोन किया तो उस अजनबी फोन वाले की बात सच थी। अब तो रुद्रा का धैर्य जवाब दे गया, वह फूट-फूटकर रोने लगी। करीब एक घंटे बाद उसी अजनबी का फोन फिर आया -”अब बताइये रुद्रा जी मैं सही हूँ  या गलत।"

“तुम कौन हो? वह लड़की कौन है?'

“ मैं कौन हूँ , जानकर क्या करेंगी, समझ लीजिये एक शुभ चिन्तक हूँ  आपका। सच्चाई बताना मेरा फर्ज था, अब आपको जो करना हो कीजिये। हाँ, लड़की आपके पति की सेकेट्री है।"

“सुकन्या।"

“हॉ ।"

“लेकिन वह तो बहुत दिनों से आफिस आ ही नहीं रही है।"

वह अजनबी हॅस दिया -” जिस लड़की को आपके पति ने रानी बना दिया है वह सेकेट्री की नौकरी क्यों करेगी?"

उसके बाद फोन बंद हो गया और रुद्रा के लाख प्रयासों के बाद भी दुबारा नहीं खुला।

रुद्रा ने अपने ऑसू पोंछ लिये। अपना कर्तव्य निश्चित किया। सुबह से कुछ न खाने पीने से उसे चक्कर आने शुरू हो गये थे।

बच्चों के लिये खाना बनाया। उन्हें खिलाकर खुद भी खाया। जब परिस्थिति का मुकाबला करना ही है तो भूखे रहकर क्या फायदा? बुलन्दशहर की फ्लाइट के लिये पता किया तो  मालुम हुआ कि एक फ्लाइट जाने वाली है जो चार बजे पहुँच  जायेगी। शायद इसी फ्लाइट से वरदान जा रहे होंगे। टूर पर वरदान अक्सर आफिस से सीधे ही चले जाते  हैं, इसलिए घर से सुबह ही अपना बेग ले जाते हैं| दूसरी फ्लाइट रात एक बजे जायेगी जो सुबह  सात बजे पहुँच जायेगी।"

उसने तैयारी करनी शुरू कर दी – “ तुम्हारे साथ  मुझे रहना तो अब है ही नहीं लेकिन तुम्हें ऐसे नहीं छोडूँगी वरदान आहूजा। देखती हूँ  कि  तुम कैसे शादी करते हो?"

बच्चों से उसने बताया कि वो लोग पापा के पास जा रहे हैं तो बच्चे खुश हो गये,  हालांकि वरदान के इधर कुछ दिनों से व्यवहार से बच्चे कुछ डरे हुये थे इसलिये बेटे ने पूँछ लिया -” मम्मी पापा नाराज तो नहीं होंगे।"

“नहीं बेटा, पापा ने खुद हमें घुमाने के लिये बुलाया है। हम लोगों के लिये जहाज की टिकट भेजी है।"

टैक्सी भी रात में ही बुक करा ली जिससे वह समय से एयरपोर्ट पहुँच सके। उसका अंग अंग जला जा रहा था। सामान वगैरह लेकर जब वह एयरपोर्ट से बाहर निकली तो सवा आठ बज चुका था। वह जल्दी से जल्दी रायल होटल पहुँचना  चाहती थी।

एयर पोर्ट से रायल होटल पहुँचने में उसे एक घंटा और लग गया। जब वह रायल होटल पहुँची  तो उसे पता चला कि मिसेज वरदान तो कल आ गईं थी जबकि मि० वरदान सुबह आये हैं। अभी थोड़ी देर पहले ही यहाँ  से होटल छोड़कर जा चुके हैं।

अब क्या करे रुद्रा? वरदान और सुकन्या कहाँ  मिलेंगे उसे पता ही नहीं है। न ही वो यह जानती है कि शादी कहॉ हो रही है? रुद्रा की ऑखों में ऑसू आ गये। उसका मन कर रहा था कि वह यहीं दहाड़े मारकर रोने लगे।

तभी उसके मोबाइल पर उसी अजनबी का फोन आया -” रुद्रा जी.......।

लेकिन उसके बोलने के पहले ही रुद्रा बोल पड़ी -”वो दोनों रायल होटल में नहीं हैं।"

“आप कहाँ  हैं?"

“रायल होटल में।"

“वो लोग शादी के लिये निकल चुके हैं। आप होटल वाले से बोलिये , वो आपके लिये टैक्सी की व्यवस्था कर  देगा | आप उसी टैक्सी से आर्य समाज मंदिर आ जाइये।"

“ लेकिन आप......"

“ रुद्रा जी समय बहुत कम है, जल्दी कीजिये।” रुद्रा का गुस्से के कारण बुरा हाल हो रहा था। वह सोती हुई गुड़िया को कंधे से लगाये और बेटे का हाथ पकड़े टैक्सी से सीधे आर्य समाज मंदिर पहुँच  गई। वरदान और सुकन्या दूल्हा और दुल्हन के वेश में खड़े फेरे लेने जा रहे थे। रुद्रा और बच्चों को देखकर वरदान जड़ हो गया।

तभी मृत्युंजय पुलिस और मीडिया वालों को लेकर आ गया। उसके मोबाइल में सुकन्या के कई मैसेज थे -” जय, मुझे बचा लो। मेरे बॉस मुझे ब्लैकमेल करके जबरदस्ती अपनी पत्नी के होते हुये मुझसे शादी कर रहे हैं।"

एक मैसेज जो करीब बीस - पच्चीस मिनट पहले लिखा गया था -” जय, जल्दी करो नहीं तो अनर्थ हो जायेगा।

पुलिस और मृत्युंजय के आते ही सुकन्या भागकर उनके पास आ गई, उसने पुलिस अधिकारी से कहा -”सर, आपने सही समय पर आकर मुझे बचा लिया। ये इनकी पत्नी और बच्चे हैं।"

पुलिस के पूँछने पर रुद्रा ने स्वीकार किया कि वो लोग ही वरदान की पत्नी और बच्चे हैं।

सुकन्या की शिकायत पर वरदान को गिरफ्तार कर लिया गया। सुकन्या ने सारे वीडियो, आडियो और तस्वीरों के साथ वह पत्र भी पुलिस को सौंप दिया जो नीलिमा ने आत्महत्या के पूर्व उसको लिखा था।

सारे प्रमाण वरदान के विपरीत थे। समाचार पत्रों और मीडिया में यह खबर छा गई। समाचार पत्रों और टी०वी० के हर चैनल में यह कहानी दिखाई जाने लगी। सुकन्या के पापा बैठे शाम के समाचार देख रहे थे कि अचानक एक अप्रत्याशित समाचार देख कर चौंक गये, उन्होंने वहीं से सुकन्या की मम्मी को आवाज दी, लेकिन वो नहीं आईं -”मुझे नहीं देखना है, आप बार बार वही समाचार देखते हो।"

सुकन्या के पापा रसोई तक गये और उन्हें जबरदस्ती लिवा कर लाये। वो गुस्से में बड़बड़ाती हुईं आकर सोफे पर बैठ गईं -”क्या है, जो मुझे काम करते से जबरदस्ती लिवा लाये।” लेकिन जैसे ही उनकी नजर टी० वी० की ओर गई वो हड़बड़ा गईं। टी०वी० पर नीलिमा, वरदान और सुकन्या की पूरी कहानी दिखाई जा रही थी। उन्होंने घबड़ाकर अपने पति की ओर देखा तो उन्होंने चुपचाप उन्हें टी० वी० की ओर देखने का इशारा किया। वे दोनों लोग चकाचौंध से टी० वी० देख रहे थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वो जो सामने देख रहे हैं, उस घटना का सम्बन्ध उनकी अपनी पुत्री से है और इस बारे में उन्हें कुछ पता नहीं। उन्हें टी० वी० से जानकारी मिल रही है। देखते देखते उन दोनों की ऑखों से गर्व और खुशी के ऑसू गिरने लगे, साथ ही भय से उनकी आत्मा तक कॉप उठी कि इस सबमें वे अपने इकलौते बच्चे को खो देते तो क्या होता?

समाचार समाप्त होने के बाद उन्होंने सुमन जी को फोन किया तो वो अपने को अपराधी समझने लगीं -” यकीन कीजिये भाई साहब मुझे कुछ पता नहीं था वरना मैं नीलिमा को खोकर इन लोगों को यह खतरा कभी न उठाने देती। मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ ।”सुमन जी फूट-फूटकर रो रहीं थीं।

“आप परेशान मत होइए, बच्चे बड़े हो जाते हैं तब हमसे बहुत कुछ छुपाने लगते हैं।” फिर भी जब सुमन जी का रोना बन्द नहीं हुआ तो उन्होंने फोन अपनी पत्नी को दे दिया उन्होंने बड़ी मुश्किल से सुमन जी को चुप कराया और आपस में कुछ तय किया।

कम्पनी के मालिकों और एम० डी० ने साफ कह दिया कि उन्हें इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। साथ ही उन लोगों ने वरदान को नौकरी से भी हटा दिया।

कम्पनी के खातों में भी वरदान द्वारा की गई हेरा फेरी सामने आ गई। वरदान पर इतने आरोप सिद्ध होते जा रहे थे कि उसे किसी भी तरह लम्बी सजा से बचाया नहीं जा सकता था। आजीवन कारावास की सजा हो सकती है उसे।

मीडिया वरदान और रुद्रा से बहुत कुछ पूँछना चाहती थी लेकिन दोनों ने चुप्पी साध ली।

बहुत प्रयत्न करने पर रुद्रा ने इतना ही कहा कि उसे अपने पति के चरित्र और ऐसे गंदे कारनामों के साथ ही पैसे के गबन के   बारे में कुछ नहीं मालुम था। अभी तक वो बहुत अच्छे पिता और बेहद प्यार करने वाले पति थे लेकिन यदि बात केवल गबन तक ही होती तो वह अपने पति को फिर भी माफ़ कर देती और जेल से आने के बाद उन्हें अपना लेती| जबकि अब मासूम लड़कियों की अस्मत से खेलने के बाद उन्हें ब्लैकमेल करके आत्महत्या के लिये मजबूर करने वाले व्यक्ति का वह न तो अपने स्वयं मुँह देखना चाहेगी और न अपने  बच्चों पर उसका साया ही  पड़ने देगी।

सुकन्या ने मीडिया के सामने आकर सब कुछ सच बताया कि न तो वह गर्भवती है और न ही वरदान ने उसे ब्लैकमेल किया है क्योंकि वे तस्वीरें उसने खुद वरदान को ब्लैकमेल करने के लिये खींची थी। वरदान से उसका कभी कोई शारीरिक सम्पर्क नहीं हुआ है। नीलिमा की मृत्यु का बदला लेने और वरदान की घिनौनी सच्चाई सबके सामने लाने के लिये उसे यह सब करना पड़ा।

वरदान का वह दोस्त संजय भी गिरफ्तार कर लिया गया जिसने वरदान का साथ दिया था। नीलिमा के पहले की दोनों सेकेट्री रजनी और मेघना जो अभी तक बदनामी के डर से चुप थीं ने भी पुलिस और मीडिया को सच्चाई बताई कि कैसे एक महीने के अंदर ही वरदान से तंग आकर उन्होंने खुद नौकरी छोड़ दी थी।

**( 9 )**

रुद्रा का तो सब कुछ लुट चुका था। जिस वरदान पर अपने से अधिक भरोसा किया था, उसने इस कदर उसके विश्वास को चकनाचूर कर दिया है कि उन टूटी हुई किरचों को समेटने में उसका दामन तार तार हो गया है।

उसे लग रहा था कि यह सब स्वप्न है, अभी ऑख खुलेगी और उसका हॅसता मुस्कराता संसार फिर पहले जैसा हो जायेगा। टी0वी0 और समाचारों को सुनकर इतने सालों बाद मम्मी, पापा और सात्विक आये भी तो वह सबके सामने शर्म से सिर तक न उठा पाई। पापा ने बहुत कहा उससे कि उसे अपने कर्मों की सजा भुगतने दो और मेरे साथ चलो।

मम्मी ने भी अपनी ममता का वास्ता देकर उसे अपने साथ ले जाने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन अब किस मुँह  से जा सकती है वो पापा के साथ जब पहले नहीं गई थी। उसका वरदान पर जो गर्व था चूर चूर हो गया था आज। जो भी होगा उसे अपने बच्चों के सहारे खुद भुगतना है।

उसकी ननदों ने तो एक बार आना तक उचित न समझा कि एक बार आकर तसल्ली तो दे देंती बल्कि उन लोगों ने तो यहॉ तक कह दिया कि उसने ही उनके भाई पर ध्यान नहीं दिया तभी उनका भाई भटक गया। कितना संघर्ष और मेहनत की थी इस परिवार के लिये। सुभद्रा से कभी कम नहीं समझा था इन लोगों को। बड़ी ननद की शादी बाद बच्चे के बारे में सोंचा था।

लेकिन किसी का क्या दोष? इन लोगों के लिये तो वरदान के प्यार के कारण किया था और जब वरदान ने न केवल उसके साथ छल ही किया है बल्कि अपराधी भी सिद्ध होता जा रहा है। जितने मुँह  थे, उतनी बातें थी। वह किस किस को जवाब दे और क्या जवाब दे? सच्चाई से कैसे मुँह मोड़ पायेगी?

वरदान ने कितना भी बड़ा अपराध किया होता, उसने क्षमा कर दिया होता लेकिन इतने जघन्य और घृणित अपराध के लिये तो वह उसका नाम तक जीभ पर नहीं लाना चाहती है। दो बहनों का भाई और एक बेटी का पिता होकर क्या उसे एक बार भी ख्याल नहीं आया कि वो लड़कियॉ भी किसी की बहनें और बेटियॉ हैं? उसे यह ख्याल क्यों नहीं आया कि यही कृत्य यदि कोई उसकी बहनों और बेटी के साथ करता तो उस पर क्या बीतती?

उससे बार बार पूँछा जाता है कि क्या वह सचमुच कुछ नहीं जानती थी, वह सबको क्या जवाब दे? फिर उसके उत्तर से पूँछने  वाला संतुष्ट भी तो नहीं होता है।

उसने कम्पनी के मालिकों से कह दिया है कि वह गबन किये गये सारे पैसे देने को तैयार है, उसे वरदान का कुछ नहीं चाहिये। वह अपने बच्चे अपनी कमाई से पालेगी।

वह जितना सोंचती उतना ही वरदान के अपराधों का कद बढ़ता नजर आता। पड़ोसियों ने उसके घर आना छोड़ दिया है। वरदान के पापों का दंड उसे मिल रहा है।

वह तो घर छोड़कर चली जाती लेकिन जब तक वह वरदान की कम्पनी को गबन किये गये सारे पैसे नहीं दे देगी, कहीं नहीं जायेगी। उसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि उसे सबसे मुँह छुपाना पड़े। जो कुछ किया है वरदान ने किया है तो वरदान के कृत्य के लिये वह अपराधियों की तरह मुँह छुपाकर क्यों भागे?

ऐसे ही बैठे सोंच रही थी कि कालबेल की आवाज से उठकर दरवाजा खोलने गई तो चौंक गई। सामने सुकन्या को देखकर उसके मुँह  से आवाज नहीं निकली। वैसे ही खड़ी रह गई। न उसे अंदर आने को कह सकी और न जाने को। फटी फटी ऑखों से देखती रह गई -” मैं अंदर आ जाऊॅ दीदी?"

“दीदी........।” रुद्रा असमंजस में थी -”अब कौन सा नया खेल खेलना चाहती हो? क्या चाहिये मुझसे?"

“मैं आपसे कुछ लेने नहीं आईं हूँ , मेरा उद्देश्य पूरा हो गया है। मैं अपनी नीलिमा को श्रद्धांजलि दे चुकी हूँ ।"

फिर उसने साथ लाये हुये बड़े से बैग की ओर इशारा किया -” इसके अन्दर आज तक वरदान ने जो दिया है, सब है। फ्लैट भी मैंने आपके नाम कर दिया है। उसके कागजात, ज्वैलरी, नगद पैसे  यहाँ  तक जो ड्रेसेज वरदान ने दिलवाई हैं, वो भी इसी में हैं। मैं इन सबका क्या करुँगी , मुझे तो घिन आती है इन सबसे लेकिन अपने लक्ष्य के लिये मुझे घृणित से घृणित कार्य करना स्वीकार था।"

फिर वह रुद्रा के हाथ पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगी -”मैं जानती हूँ  कि आप मुझसे घृणा करती होंगी लेकिन आप बताइये, आप मेरे स्थान पर होतीं तो क्या करतीं? मेरी बहन से भी प्रिय सहेली ने पूरे विश्वास से मुझे सब कुछ बताया था तो उसका बदला तो मुझे लेना ही था, यही मेरा लक्ष्य था। मुझे विश्वास था कि अगर पत्र मिलते ही पुलिस को बता देती तो केस उतना मजबूत नहीं होगा और सबूतों के अभाव में रिश्वत देकर वरदान साफ बच जायेंगे और हो सकता है कि मुझे और नीलिमा को ही झूठा कहकर फॅसा दिया जाये। आज मेरी नीलिमा की आत्मा संतुष्ट हो गई है। इससे बड़ी दौलत मेरे लिये कुछ भी नहीं है।"

रुद्रा कुछ बोल नहीं पा रही थी -” आपके लिये मुझे सचमुच बहुत दुख हो रहा है लेकिन क्या यह उचित नहीं हुआ कि वरदान का घृणित रूप उजागर हो गया। वरना क्या फर्क पड़ता वरदान के लिये रजनी, मेघना, नीलिमा, सुकन्या जाती रहेंगी और दूसरी लड़कियाँ शिकार बनती रहेंगी। मेरी नीलिमा तो वापस नहीं आयेगी लेकिन न जाने कितनी नीलिमा शिकार बनने से बच गईं।"

सुकन्या ने अपने ऑसू पोंछते हुये कहा -”रजनी और मेघना के सामने कोई मजबूरी नहीं थी इसलिये उन्होंने तुरन्त नौकरी छोड़ दी थी लेकिन नीलिमा को तो इतना मजबूर कर दिया गया था कि उसने बिना किसी को बताये मृत्यु का वरण कर लिया। बहुत प्यार करती थी वो अपनी मम्मी और भाई को।"

रुद्रा मूर्तिवत बैठी रह गई, उसमें सुकन्या की किसी बात का जवाब देने की हिम्मत नहीं थी। सुकन्या उठकर खड़ी हो गई -”चलती हूँ दीदी, हो सके तो क्षमा कर देना।"

रुद्रा में इतनी शक्ति ही नहीं बची थी कि वह उठकर गेट बन्द कर सके। वह तो फटी फटी ऑखों से गेट से बाहर निकलती सुकन्या को देखे जा रही थी।

**( 10 एवं  अन्तिम )**

सुकन्या अपने छोटे से कमरे से सामान समेट कर एयरबैग और अटैची में रखती जा रही थी। साथ ही सोंचती जा रही थी कि मम्मी पापा तो इतने नाराज हैं कि इतना सब होने के बाद एक बार भी फोन नहीं किया। वह फोन करती है तो फोन काट देते हैं। वैसे कल मृत्युंजय ने उससे कहा था कि वह शाम को उसे लेने आयेगा। इसीलिये वह जल्दी जल्दी सामान समेट रही है ताकि वह मृत्युंजय और सुमन चाची से बिना मिले चुपचाप चली जाये| वह अब किसी से मिलना नहीं चाहती थी | फ्लैट छोड़ने के बाद मृत्युंजय के कहने से सुरक्षा की दृष्टि से वह  इस कमरे में रह  रही थी ।

सुकन्या की ऑखों में बार बार ऑसू आ रहे थे। अपना लक्ष्य सफल होने से खुश तो बहुत थी लेकिन भीतर ही भीतर कुछ चुभ भी रहा था। सामान रखते रखते अचानक नीलिमा की तस्वीर हाथ में  आ गयी तो वह उसे ध्यान से देखने लगी- “ तुम खुश हो ना नीलू, वरदान आहूजा पूरी तरह से बर्बाद हो गये हैं| अब कोई नीलिमा वरदान आहूजा के कारण आत्महत्या नहीं करेगी| उनकी पत्नी, बच्चे, परिवार , आत्मीय लोग उनसे घृणा कर रहे हैं| मैं जानती हूँ नीलू की तुम मुझे और जय को साथ देखना चाहती थीं| मुझे अपनी भाभी बनाना तुम्हारा सपना था और सच तो यह है कि मैं भी जय को प्यार करती हूँ लेकिन उनके जीवन में आने वाली भाग्यशाली लडकी मैं नहीं हूँ | उन्हें कोई भी अच्छी लडकी मिल जायेगी जो उनको बहुत खुश रखेगी | मैं जहाँ रहूँगी जय की खुशियों की ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी |”

उसे पता था कि मृत्युंजय शाम को आयेगा इसलिए उसने दरवाजा भी नहीं बन्द किया था। तभी दरवाजे को खोलकर चुपचाप कोई अंदर आया और बिना जरा भी आवाज किये सुकन्या के पीछे आकर  खड़ा हो गया।

सुकन्या ने तस्वीर रखकर  अटैची बन्द की और जैसे ही मुड़ी, पीछे खड़े व्यक्ति को देखकर हतप्रभ रह गई। दोनों एक-दूसरे को देख रहे थे, ऑंखें पूरी तरह से भीगी थीं - ”कहॉ जा रही हो?"

“मुझे मत रोको जय। मेरा उद्देश्य सफल हो गया और बिना तुम्हारी सहायता शायद मैं भी अपने लक्ष्य में इतनी आसानी से सफल न हो पाती। हमने नीलिमा को सच्ची श्रद्धांजलि दी है, उसकी आत्मा बहुत खुश होगी।"

“  नीलिमा को दी गई श्रद्धांजलि अधूरी है। उसका एक सपना भी तो था, उसे कौन पूरा करेगा? उसे पूरा किये बिना नीलू को तुम्हारे द्वारा दी गई श्रद्धांजलि अधूरी रह जायेगी | जब उसकी आत्मा की शांति के लिये अपना जीवन, आत्मसम्मान यहाँ तक स्त्री की सबसे कीमती वस्तु दाँव पर लगाकर इतना किया है तो उसकी दूसरी अधूरी इच्छा भी तो  पूरी करो|  "

“नहीं जय, ऐसा मत कहो तुमने वो सारे वीडियो, आडियो और तस्वीरें देखी और सुनी हैं जिसमें मैं वरदान के साथ कैसी अवस्था में थी। परिस्थिति कुछ भी रही हो लेकिन कोई भी व्यक्ति ऐसी लड़की को सही नहीं कहेगा जिसने किसी गैर मर्द से ऐसे सम्बन्ध रखे हों।'

“ यह सब मुझे क्यों बता रही हो? अपनी आत्मा को कुचलकर, अपनी जिन्दगी को दॉव पर लगाकर तुमने दोस्ती के नाम पर मेरी बहन के लिये जो किया है, वह दुनिया की कोई भी लड़की नहीं कर सकती थी। अपनी जिन्दगी और अपनी अस्मिता दॉव पर लगाकर तुमने वरदान का सच दुनिया के सामने उजागर किया है, वरना न जाने कब तक और कितनी लड़कियॉ वरदान के हाथों बरबाद होकर आत्महत्या करती रहती। तुमने केवल नीलू को श्रद्धान्जलि नहीं दी है बल्कि उन तमाम लड़कियों को भी बचाया है जो आगे चलकर वरदान की कुत्सा का शिकार होने वाली थीं। मैं तुम पर जितना भी गर्व करूँ , कम है। फिर इतनी बहादुर होकर ऐसे कायरों की तरह मुँह छुपाकर क्यों जा रही हो, मुझे छोड़कर।"

“मैंने जो कुछ किया अपनी नीलिमा के लिये किया है, तुम पर कोई अहसान नहीं किया है। इस प्रयत्न में अगर मेरे प्राण भी चले जाते तो मुझे परवाह नहीं थी।"

“मैं भी तुम पर कोई अहसान नहीं कर रहा। कब से तुमसे प्यार कर रहा हूँ , खुद नहीं जानता लेकिन मेरे सपनों में हमेशा एक ही लड़की रही, वह तुम थी।”

मृत्युंजय की ऑखों में सपने तैरने लगे -” कभी कहने की आवश्यकता नहीं पड़ी। तुम्हारी और नीलिमा की मीठी नोक झोंक के बावजूद तुम्हारे अंदर छुपे प्यार से कभी अनजान नहीं रहा। सोंचता था कि पहले पढ़ाई पूरी करके कैरियर बना लूँ फिर पहले तुमसे तुमको माँग लूँगा । अंकल और आंटी को मनाने के लिये तो नीलू और मम्मी थीं ही, वो दोनों तो यह सुनकर वैसे ही खुशी से पागल हो जातीं। फिर पहले हम नीलू की शादी करते इसके बाद अपनी।” मृत्युंजय की ऑंखें भर आईं -” लेकिन हर देखा हुआ ख्वाब पूरा नहीं हो पाता, जिन्दगी और किस्मत अपना काम करती है। नीलिमा की किस्मत में ऐसे ही जाना लिखा था। अब हम दोनों का कर्तव्य है कि अपनी नीलू का सपना पूरा करके इस अधूरी श्रद्धांजलि को पूर्ण श्रद्धांजलि बनाये, जिससे वह जहाँ भी हो हमें एक साथ देखकर खुश और संतुष्ट हो सके |”

“नहीं जय मुझे जाने दो। अभी सब कुछ नया है। जबकि यह ज्वार उतरने के बाद यही प्यार तुम्हें बोझ लगने लगेगा और वो सारे वीडियो एवं तस्वीरें तुम्हें मेरी विवशता और नाटक न लगकर सच लगने लगेंगी और तुम सब कुछ भूलकर सोंचने लगोगे कि मेरे सचमुच वरदान से अवैध सम्बन्ध थे। तब क्या करुँगी  मैं? कैसे सह पाऊॅगी ? इससे अच्छा है मैं अभी सबसे दूर चली जाऊँ।"

“ऐसा कभी नहीं होगा, तुम्हें क्या मुझ पर जरा भी विश्वास नहीं है। जब मैं सब कुछ जानता हूँ तो ऐसी गन्दी और बेहूदी बात तुम्हें कैसे कह सकता हूँ ?"

“मैंने भी तुम्हें बहुत प्यार किया है और आज जानकर बहुत खुश हूँ कि तुमने भी मुझसे प्यार किया है। मुझे इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये। मुझे सबसे दूर जाने दो, मैं तुम्हारे प्यार और नीलिमा की यादों के सहारे कहीं भी जिन्दगी बिता लूँगी। तुम किसी भी अच्छी लड़की को अपनाकर सुख से रहना।” सुकन्या की ऑखों में बसे ऑसू कपोलो पर लुढ़क आये, जिन्हें उसने तुरन्त पोंछ दिया।

“तुम जाना चाहती हो ना, इस अधूरी श्रद्धांजलि को पूर्ण नहीं बनाना चाहती तो कोई बात नहीं जाओ।"

मुस्कराकर मृत्युंजय आगे बढ़ा और उसने सुकन्या को अपनी बॉहों के घेरे में बॉध लिया -”इन बॉहों की जंजीरों को तोड़कर जा सकती हो तो जाओ, मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं।"

अब सुकन्या मृत्युंजय के सीने से लगकर अपने ऑसुओं से उसके सीने की शर्ट भिगोने लगी। मृत्युंजय ने भी सुकन्या के सिर पर अपना चेहरा रखकर ऑखें बंद कर ली। बॉहों का घेरा कसता जा रहा था सुकन्या की पीठ पर भी और मृत्युंजय की पीठ पर भी।

एक बार फिर दरवाजा धीरे से बिना आहट के खुला और छै: जोड़ी ऑंखें इस खूबसूरत नजारे को आकर देखने लगीं। जब दोनों की ऑंखें खुलीं तो दोनों हड़बड़ाकर एक दूसरे से अलग हो गये।

कमरे में तीन लोगों के ठहाके गूँज रहे थे और दो व्यक्ति शर्माये हुये खड़े थे। कभी कभी नीची नजर से एक दूसरे को देख भी लेते थे।